धींधवाल पब्लिकेशन

DHP-10

नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

(तृतीय संशोधित संस्करण)

Dhindhwal Publication

हिन्दी साहित्य का इतिहास

(वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित)

स्कूल व्याख्याता, वरिष्ठ अध्यापक, कॉलेज व्याख्याता,
KVS, NVS, EMRS, NET, SET आदि परीक्षाओं हेतु उपयोगी

लेखक

श्री नत्थू राम मुक्कड़

(उप प्राचार्य, स्कूल शिक्षा)

- सम्पूर्ण हिंदी साहित्य का डायग्राम एवं तालिका द्वारा प्रस्तुतीकरण
- विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का समावेश
- हिंदी कवियों, लेखकों एवं विद्वानों के परीक्षा उपयोगी कथनों का समावेश

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

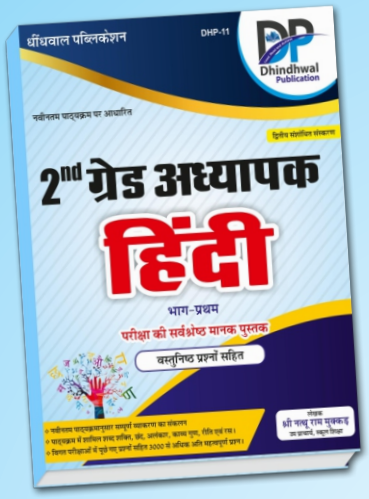

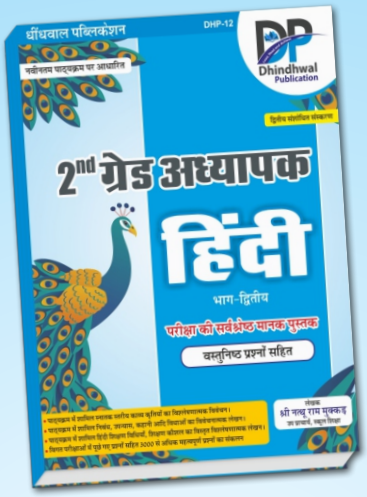

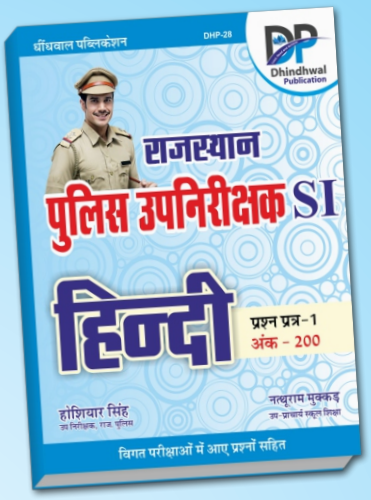

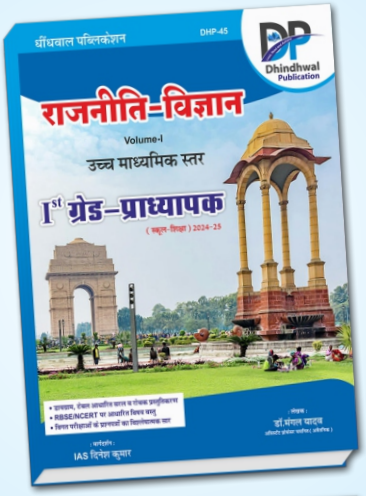

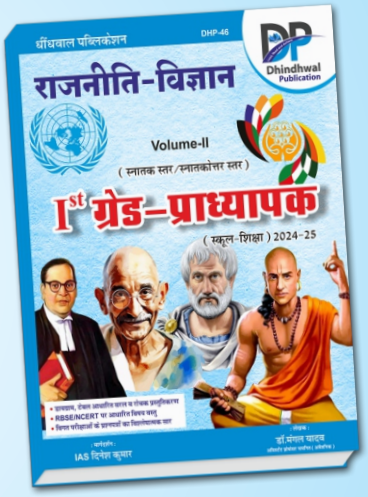

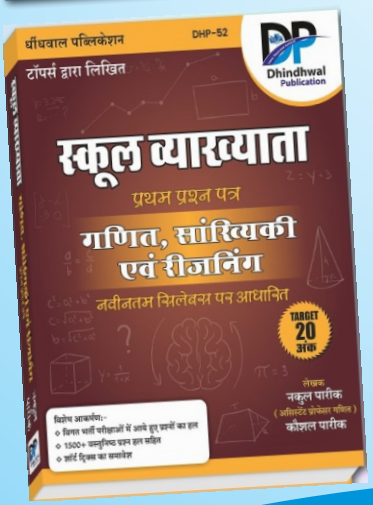

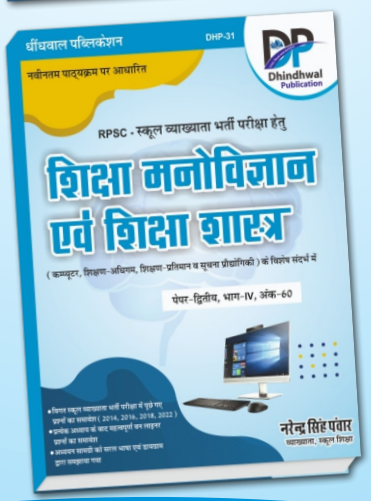

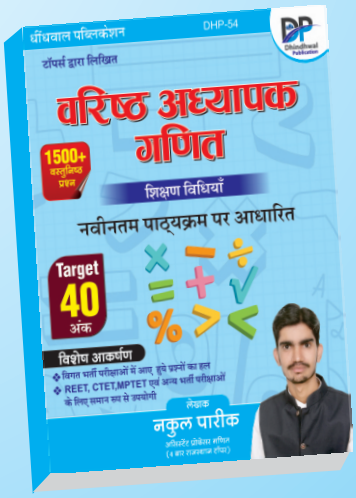

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

जुड़िए पब्लिकेशन के टेलीग्राम चैनल से

@DHINDHWAL2023GK

- नि:शुल्क मार्गदर्शन
- नि:शुल्क टेस्ट सीरीज (पीडीएफ फॉर्मेट में)
- विज्ञप्ति सिलेबस व परिणाम संबंधी जानकारी
- डाउट क्लियर करने के लिए पब्लिकेशन के लेखकों से सीधा संवाद
- भूगोल जैसे विषय के अद्यतन आँकड़े

टेलीग्राम में जाकर धींधवाल पब्लिकेशन/Dhindhwal Publication सर्च करके इसे जोइन कर सकते हैं।
टेलीग्राम ग्रुप का लिंक प्राप्त करने के लिए 8306733800 पर वाट्सअप मैसेज करें।

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

लेखक

श्री नत्थू राम मुक्कड़

(उप प्राचार्य, स्कूल शिक्षा)

: लेखक परिचय :

श्री नत्थू राम मुक्कड़ का जन्म अरावली पर्वत श्रृंखला की सुरम्यवादियों में स्थित ग्राम-रोजड़ा, तहसील-खेतड़ी, जिला-झुंझुनूं (राजस्थान) में हुआ। आपने एम.ए. (हिंदी, इतिहास), एम.फिल.नेट की उपाधि प्राप्त की। 2012 में आपका चयन द्वितीय श्रेणी शिक्षक (हिंदी) पद पर राजकीय माध्यमिक विद्यालय ढढेरु भामुआन (बिदासर) चुरु में हुआ, तत्पश्चात् व्याख्याता भर्ती परीक्षा 2013 में आपका चयन हुआ। आप जनवरी 2023 तक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोगढ़ (खेतड़ी) जिला-झुंझुनूं (राजस्थान) में व्याख्याता (हिंदी) पद पर कार्यरत रहे हैं। आप पिछले 20 वर्षो से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए अध्यापन और लेखन का कार्य कर रहे हैं। आपके मार्गदर्शन में बहुत से युवाओं ने प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की है। फरवरी 2023 से आप पदोन्नत होकर उप प्राचार्य के पद पर कार्यरत हैं।

लेखक की अन्य पुस्तकें

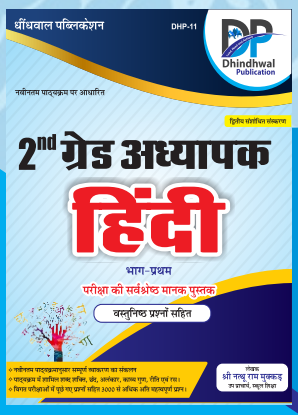

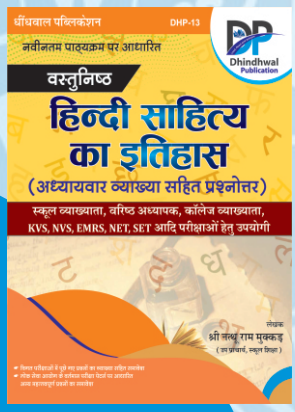

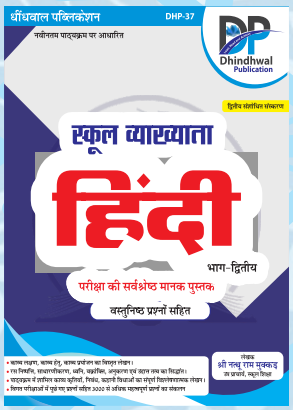

धींधवाल पब्लिकेशन
बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

प्रस्तुत करते हैं-

Dhindhwal Publication

हिन्दी साहित्य का इतिहास

- ❖ हिन्दी साहित्य के इतिहास का क्रमबद्ध, विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रस्तुतीकरण।
- ❖ हिन्दी साहित्य के सभी कवियों और लेखकों के जीवन एवं कृतित्व का विस्तृत विवरण।
- ❖ विभिन्न परीक्षाओं में पूछे जाने वाले कवि, लेखकों एवं विद्वानों के कथनों का अधिक से अधिक समावेश।
- ❖ प्रतियोगी परीक्षाओं और अध्यापन से जुड़े श्रेष्ठ लेखकों द्वारा पाठ्यक्रमानुसार तैयार श्रेष्ठ और मानक पुस्तक।

धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

नत्थू राम मुक्कड़ (उप प्राचार्य)
(एम.ए. हिन्दी, इतिहास, एम.फिल., नेट)
मो. 9602315511, 8955322209

प्रकाशक:-

धींधवाल पब्लिकेशन

B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर

मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication

- धींधवाल पब्लिकेशन

- Hoshiyar singh Examwala

- @Publication-DP

- Dhindhwal Publication

बुक कोड- DHP- 10

© सर्वाधिकार- लेखक

फिक्स रेट ₹- 185.00

तृतीय संशोधित संस्करण

मुद्रक-

पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इसके किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुन: उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णत: वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अत: ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अत: दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

प्राक्कथन

''मैं अपनी यह पुस्तक अपने स्वर्गीय माताजी और पिताजी के श्रीचरणों में अर्पित करते हुए, उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देता हूँ------ ।''

प्रिय परीक्षार्थियो,

मुझे 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (तृतीय संशोधित संस्करण) पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। आप सभी को विदित है कि इससे पूर्व मेरे द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (द्वितीय संशोधित संस्करण), 'स्कूल व्याख्याता हिन्दी भाग-प्रथम', 'स्कूल व्याख्याता हिन्दी भाग द्वितीय', 'वरिष्ठ अध्यापक हिन्दी भाग-प्रथम', 'वरिष्ठ अध्यापक हिन्दी भाग-द्वितीय', तृतीय श्रेणी अध्यापक हिन्दी, राजस्थान पुलिस उपनिरीक्षक हिन्दी पुस्तक आप सभी द्वारा बहुत पसंद की गई और सराही गई है। इसी से प्रेरित होकर व आप सभी द्वारा प्रेरित किये जाने पर मैंने इस पुस्तक का तृतीय संशोधित संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत करने का निर्णय लिया है।

- ☞ इस पुस्तक में हिन्दी भाषा का उद्भव, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, देवनागरी लिपी आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है।
- ☞ इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों, ग्रन्थों, हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों का नामकरण एवं काल विभाजन का विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है।
- ☞ वीरगाथा काल (आदिकाल), भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल की तत्कालीन परिस्थितियों, प्रवृत्तियों कवियों एवं उनकी काव्य कृतियों का विस्तार से परिचय दिया गया है।
- ☞ इस पुस्तक में हिन्दी गद्य विधाएँ-नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, आत्मकथा, जीवनी, यात्रा वृतान्त, रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र के उद्भव और विकास का विस्तार से वर्णन किया गया है।
- ☞ इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य के इतिहास से संबंधित विद्वानों- श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ नगेन्द्र, बाबू गुलाबराय, नामवर सिंह, बच्चन सिंह आदि के ग्रन्थों में संकलित कथनों व पंक्तियों को शामिल किया गया है, जिससे पुस्तक को मानक बनाने का भरसक प्रयास किया है।
- ☞ यह पुस्तक सहायक प्रोफेसर परीक्षा (300 अंक), नेट, राजस्थान पात्रता परीक्षा (सेट), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, व्याख्याता हिन्दी एवं वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम (हिन्दी साहित्य के इतिहास) के अनुसार लिखित श्रेष्ठ पुस्तक है।
- ☞ इस पुस्तक को सरल भाषा और सहज शैली में प्रस्तुत किया गया है। विषय को तालिका और डायग्राम के माध्यम से और अधिक स्पष्ट किया गया है।

मेरे सभी विद्वान साथियों एवं परम् मित्रों का आभार और धन्यवाद्, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पुस्तक लेखन में सहयोग प्रदान किया। इस पुस्तक को त्रुटिरहित रखने में श्री विमलेश कुमार सैनी का विशेष योगदान रहा, इनका बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूँ। पुस्तक प्रकाशन में 'धींधवाल पब्लिकेशन' बीकानेर को अविस्मरणीय सहयोग के लिए आभार एवं धन्यवाद्।

यद्यपि पुस्तक का लेखन एवं प्रकाशन त्रुटिरहित रखने का भरसक प्रयास किया गया है तथापि आगामी संस्करणों को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके अमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

नत्थू राम मुक्कड़ (उप प्राचार्य)
(एम.ए. हिन्दी, इतिहास, एम.फिल., नेट)
मो. 9602315511, 8955322209
E-mail Id : nrktrn@mail.com

विषय–सूची

हिन्दी साहित्य का इतिहास (व्याख्याता और वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा)		
क्र.सं.	विषय–वस्तु	पृष्ठ संख्या
	हिंदी व्याख्याता (संस्कृत शिक्षा) परीक्षा– 18 नवंबर, 2024	1–10
1.	हिन्दी भाषा : उद्भव और विकास (अवधी, ब्रज एवं खड़ी बोली)	11–25
2.	हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथ एवं काल विभाजन	26–34
3.	वीरगाथा काल (आदिकाल)	35–53
4.	भक्तिकाल– निर्गुण काव्य धारा (क) संत या ज्ञानाश्रयी शाखा	54–64
5.	भक्तिकाल– निर्गुण काव्य धारा– (ख) सूफी या प्रेमाश्रयी शाखा	65–75
6.	भक्तिकाल– सगुण भक्ति धारा– (क) रामभक्ति शाखा	76–84
7.	भक्तिकाल– सगुण काव्य धारा– (ख) कृष्णभक्ति शाखा	85–97
8.	रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल)	98–120
9.	आधुनिक कालः पुनर्जागरण या भारतेंदु युग (1850–1900)	121–128
10.	जागरण–सुधार काल (द्विवेदी युग) (1900 से 1918)	129–134
11.	छायावाद या छायावादी युग (1918–1936)	135–148
12.	प्रगतिवाद : (1936–1943)	149–154
13.	प्रयोगवाद और नई कविता : (1943 से 1960)	155–171
14.	हिंदी नाटक और एकांकी	172–178
15.	हिन्दी उपन्यास	179–186
16.	हिन्दी कहानी	187–197
17.	हिन्दी निबंध	198–207
18.	हिन्दी आलोचना	208–212
19.	हिन्दी गद्य की अन्य विधाएँ	213–218
20.	हिन्दी में प्रथम एक दृष्टि में एवं विभिन्न पुरस्कार	219–223

हिंदी व्याख्याता (संस्कृत शिक्षा) परीक्षा– 18 नवंबर, 2024

अपठित गद्यांश

❖ हिन्दुस्तान में कुछ फूल बड़े ही दबंग और अक्खड़ प्रकृति के हैं, जैसे धतूरा और जावकुसुम मानो दिनकर की कविता हों। चम्पा तपोरता उमा की तरह है, जिसके पास भ्रमर फटकने का साहस भी नहीं कर सकता। सफेद, कचनार 'अज्ञेय' जी के बुद्धिवादी प्यार का प्रतीक है। पारिजात सुमित्रानन्दन पन्त की कविता है और रसाल–मंजरी प्रसादजी का सौन्दर्य–बोध। निराला की रसदृष्टि पीली सरसों का मुक्त विस्तार है। इसे अभिजात फूलों में सर्वथा अपांक्तेय रखा गया है, पर स्नेह का स्त्रोत, जिससे प्रकाश का जन्म होता है और प्राणों का पोषण होता है, और धरती का शृंगार यही है, शोभा और शृंगार के विविध मापदंडों के प्रतीक इन पुष्पों के रहते हुए भी मैं नीम के पुष्प–गुच्छ का तिरस्कार नहीं कर पाता हूँ। यह अत्यन्त लघुकाय होता है। सफेद, बीच में पीली बिन्दी। दिए गए गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों (प्र.सं. 1, 2 और 3) के उत्तर दीजिए :

1. लेखक ने किस फूल को तपस्या में रत पार्वती के समान बताया है?
(अ) जवाकुसुम (ब) पारिजात
(स) कचनार (द) चम्पा (द)

2. लेखक के मतानुसार अत्यंत उपयोगी होते हुए भी किस फूल को उचित महत्त्व नहीं दिया गया?
(अ) धतूरे के फूल को (ब) पारिजात के फूल को
(स) सरसों के फूल को (द) सफेद कचनार को (स)

3. प्रस्तुत गद्यांश में आम्र–मंजरी से किस कवि के सौंदर्य–बोध की तुलना की गई है?
(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) सुमित्रानंदन पंत
(स) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (द) रामधारी सिंह 'दिनकर' (अ)

अपठित पद्यांश

❖ सभ्यता कहाँ आ गई? कहाँ खड़ा है विश्व?
जा रहा है किधर गति–रथ विज्ञान–कलाओं का?
किस दिशि उन्मुख इतिहास? दे रहा क्या विकास?
क्या शोर समय का है? क्या जोर हवाओं का?
क्या यही सभ्यता का वह सुन्दर सुखद स्वर्ग?
है पड़ा जहाँ पग–पग पर मुर्दों का पड़ाव,
बिक रहा जहाँ नारीत्व रजत के टुकड़ों पर
फूलों के शव पर जहाँ शृगालों का जमाव!

उपर्युक्त पद्यावतरण के आधार पर प्रश्न संख्या 4, 5 और 6 के उत्तर दीजिए :

4. पद्यांश का केंद्रीय भाव है?
(अ) प्रेम (ब) शांति (स) चिंता (द) ईर्ष्या (स)

5. पद्यांश में नारी की स्थिति कैसी बताई गई है?
(अ) चिंतनीय (ब) हास्यास्पद
(स) वंदनीय (द) दर्शनीय (अ)

6. कविता में 'रजत के टुकड़ों' से कवि का क्या आशय है?
(अ) धर्म–कर्म (ब) प्रदर्शनप्रियता
(स) रूढ़िग्रस्तता (द) लोभ–लालच (द)

7. समाचार–लेखन की 'उलटा पिरामिड–शैली' के संबंध में असंगत है?
(अ) इस शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है।
(ब) इस शैली में समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित किया जाता है।
(स) इसमें इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।
(द) इसमें कहानी की तरह क्लाइमेक्स खबर के अंत में आता है। (द)

8. इंटरनेट पत्रकारिता के संबंध में असंगत है
(अ) खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग।
(ब) समाचारों के संकलन, सत्यापन और पुष्टीकरण में आसानी।
(स) अश्लीलता, दुष्प्रचार और अफवाहों का सर्वथा अभाव।
(द) समाचारों के बैक–ग्राउंडर तैयार करने में तीव्रता। (स)

9. मुद्रित माध्यमों में लेखनगत विशेषताओं की दृष्टि से असंगत है।
(अ) भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शब्दों के उपयुक्त प्रयोग पर बल।
(ब) भाषा में सहज प्रवाह के लिए तारतम्य की अनिवार्यता।
(स) संस्कृतनिष्ठ शास्त्रीय भाषा और साहित्यिक शैली पर बल।
(द) समय–सीमा और आवंटित स्थान के अनुरूप लेखन। (स)

10. निम्नलिखित में से किसे कहानी का आवश्यक तत्त्व नहीं कहा जा सकता है?
(अ) कथानक में द्वन्द्व (ब) असंभव कल्पना
(स) पात्रों के संवाद (द) पात्रों का चरित्र–चित्रण (ब)

11. निम्नलिखित में से किस विधा का पत्रकारिता से गहरा संबंध है?
(अ) कविता (ब) कहानी (स) रिपोर्ताज (द) डायरी (स)

1 हिंदी भाषा : उद्भव और विकास (अवधी, ब्रज एवं खड़ी बोली)

हिन्दी भाषा का उद्भव

❖ **भारत में दो भाषा परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं, जो निम्न हैं:–**

(1) आर्य भाषा परिवार

❖ **इसमें उत्तर भारत की भाषाएँ शामिल** हैं। संस्कृत, हिंदी,उर्दू, मराठी, नेपाली, बांग्ला, गुजराती, कश्मीरी, डोगरी,पंजाबी, असमिया, मैथिली, उड़िया, भोजपुरी, मारवाड़ी, गढ़वाली, कोंकणी आदि भाषाऐं शामिल हैं।

(2) द्रविड़ भाषा परिवार

❖ **इसमें दक्षिण भारत की भाषाएँ शामिल हैं।** मुख्यतः तमिल, तेलगु, कन्नड़ मलयालम आदि भाषाऐं शमिल हैं। उत्तर–पूर्व की **कुछ भाषाऐं:–** ब्राहुई, गोंड़ी, कुड़ुख भी इसी भाषा परिवार से संबंधित हैं।

(1) आर्य भाषा परिवार

❖ **उत्तर भारत** की आर्य भाषाओं में सबसे **प्राचीन संस्कृत है,** जिसका सबसे प्राचीन रूप प्रथम वेद **'ऋग्वेद'** में मिलता हैं। **संस्कृत ही हिंदी की जननी है।** **(व्याख्याता परीक्षा– 2006)**

भारतीय आर्यभाषाओं का कालानुसार विभाजन

❖ भारतीय आर्यभाषाओं के काल को **तीन कालखंडों में** बांटा जाता है:–

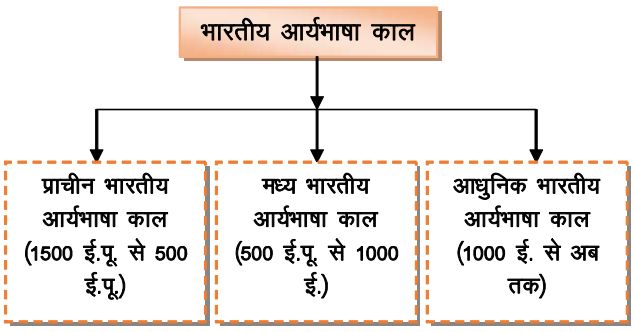

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल–

❖ इसमें **वैदिक संस्कृत** और **लौकिक संस्कृत** दो भाषाएँ थी। **चारों वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद,** इसी काल की रचना हैं। इनमें भाषा का **एक रूप नहीं** है। **ऋग्वेद संस्कृत** का **प्राचीनतम ग्रंथ** हैं। लौकिक संस्कृत में **'रामायण'** और **'महाभारत'** लिखे गए।

✦ **कुछ सम्मरणीय तथ्य:–**

- इस काल की भाषा संयोगात्मक थी।
- इस भाषा के शब्दों में धातु रूप सुरक्षित थे।
- भाषा में संगीतात्मक थी।
- शब्द भंडार में तत्सम शब्दों की प्रचुरता थी।
- इस भाषा में पदों का स्थान निश्चित नहीं था।
- शब्दों में घातु रूप सुरक्षित थे।

2. मध्य भारतीय आर्य भाषा काल–

❖ इस काल में **तीन भाषाएँ** विकसित हुई, जो निम्न लिखित हैं–

क्र.सं.	भाषा	काल
1	पालि भाषा	500 ई.पू से 1 ई. तक
2	प्राकृत भाषा	1 ई. से 500 ई. तक
3	अपभ्रंश भाषा	500 ई. से 1000 ई. तक

1. पालि भाषा

- इसे प्राचीन मगध की भाषा होने के कारण **'मागधी'** भी कहा जाता है।
- यह **बौद्ध धर्म** की भाषा थी।
- बौद्ध साहित्य पालि भाषा में ही लिखा गया है।
- बौद्ध धर्म के प्रमुख **त्रिपिटक ग्रंथ– सुतपिटक, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक** पालि में लिखे गए।
- बौद्ध धर्म **दीपवंश** और **महावंश** भी पालि भाषा में लिखे गये हैं।

2. प्राकृत भाषा

- **जैन साहित्य** इसी भाषा में लिखा गया।
- यह भाषा **बोलचाल की भाषा** थी, जिसके कारण पंडितों में इसका प्रचलन नहीं था।
- संस्कृत नाटकों के अधम पात्र **प्राकृत भाषा** का प्रयोग करते थे।

प्राकृत भाषा के प्रमुख भेद–

❖ प्राकृत भाषा के प्रमुख भेद **पाँच (5)** थे–

1. **शौरसेनी प्राकृत–** इसे मध्य देश की बोली भी कहा गया है, यह **मथुरा** अथवा **शूरसेन जनपद** मे बोली जाती थी।
2. **पैशाची प्राकृत–** यह **कश्मीर** के आस–पास, उत्तर–पश्चिम की भाषा थी।
3. **महाराष्ट्री प्राकृत–** इसका मूल स्थान **महाराष्ट्र** था।

2 हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथ एवं काल विभाजन

हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियाँ

❖ फ्रेंच विद्वान तेन (Taine) ने यह प्रतिपादित किया है कि साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के मूल में मुख्यतः तीन प्रकार के तत्व सक्रिय रहते हैं:– जाति, वातावरण और क्षण विशेष। उन्होंने यह सपष्ट किया है कि साहित्य के इतिहास को समझने के लिए उससे सम्बन्धित जातीय परम्पराओं, राष्ट्रीय और सामाजिक वातावरण एवं सामयिक परिस्थितियों का अध्ययन–विश्लेषण परमावश्यक है।

● आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य के इतिहास को जनता की चितवृत्ति का इतिहास मानते हैं। **जनता की चित्तवृत्ति तत्कालीन परिस्थितियों से परिवर्तित होती है,** अतः **साहित्य का स्वरूप भी इन परिस्थितियों के अनुरूप बदलता है।** शुक्ल की यह भी धारणा है कि **साहित्य का इतिहास कवियों का वृत्त संग्रह न होकर साहित्य की प्रवृत्ति का इतिहास होता है।** विभिन्न कालखण्डों की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप साहित्य में जो प्रवृत्तियां प्रवर्तित होती हैं, **उन्हीं के संदर्भ में कवियों की रचनाओं का अध्ययन किया जाना चाहिए।** हिंदी साहित्य के इतिहास **लेखन की जो प्रमुख पद्धतियां प्रचलित रही हैं, उनका विवरण निम्न हैः–**

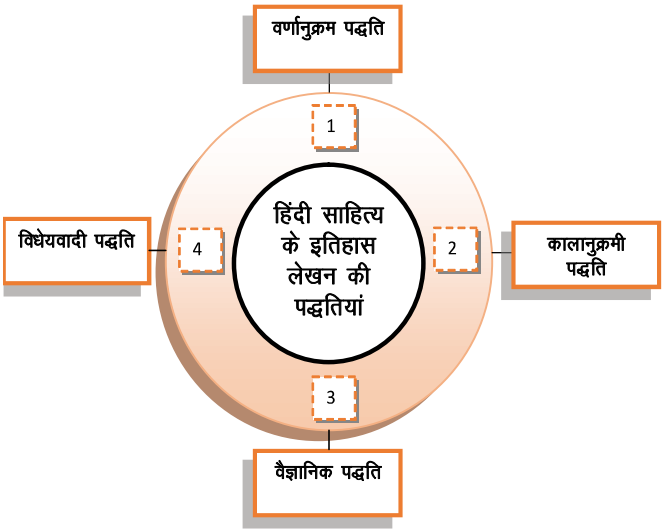

(अ) वर्णानुक्रम पद्धति

❖ इस पद्धति में कबीर और केशव का अध्ययन या विवेचन एक साथ करना होगा, क्योंकि दोनों के नाम का प्रथम **वर्ण** 'क' समान है, इस पद्धति को वर्णमाला पद्धति भी कहा जाता है। हिन्दी के इतिहास लेखन में 'गार्सा–द–तासी' और 'शिवसिंह सेंगर' ने इसी पद्धति को अपनाया है।

● इस पद्धति में लिखे गए इतिहास ग्रंथ 'साहित्यकार कोष' कहे जा सकते हैं, इतिहासग्रंथ नहीं, क्योंकि इस पद्धति के अनुसार लिखे ग्रंथ अनुपयोगी और दोषपूर्ण माने जाते हैं।

(ब) कालानुक्रमी पद्धति

❖ इस पद्धति में कवि, लेखक अथवा कृतिकार को उसकी जन्मतिथि या कालक्रम के आधार पर इतिहास ग्रंथ में स्थान दिया जाता है। इस पद्धति के आधार पर 'जॉर्ज ग्रियर्सन' और 'मिश्रबंधुओं' ने अपने इतिहास ग्रंथ लिखे।

♋ इस पद्धति में लिखा गया साहित्य का इतिहास ग्रंथ **मात्र कवियों का** 'वृतसंग्रह' बनकर रह जाता है, क्योंकि इस पद्धति में कृतिकार की कृतियों की प्रवृतियों का युगीन परिस्थितियों में विश्लेषण नहीं किया जाता है, अतः यह पद्धति दोषपूर्ण मानी जाती है।

(स) वैज्ञानिक पद्धति

❖ इस पद्धति में इतिहास लेखक क्रमबद्धता और तर्क के आधार पर पूर्णतः निरपेक्ष एवं तटस्थ रहकर तथ्य संकलन कर प्रस्तुत करता है।

♋ यह पद्धति भी साहित्य के इतिहास लेखन के लिए उपयोगी नहीं है, क्योंकि इसमे भी मात्र तथ्यों का संकलन किया जाता है **विश्लेषण और व्याख्या की उपेक्षा** की जाती है।

(द) विधेयवादी पद्धति

❖ इस पद्धति के जन्मदाता फ्रेंच विद्वान 'तेन' थे। यह पद्धति साहित्य का इतिहास लिखने में सर्वाधिक उपयोगी है। विधेयवादी पद्धति को विद्वान 'तेन' ने तीन शब्दों– जाति, वातावरण और क्षण विशेष में विभाजित किया है। इस पद्धति के अनुसार साहित्य के इतिहास को समझने के लिए **तात्कालीन जातीय परंपराओं, वातावरण एवं परिस्थितियों का वर्णन, विश्लेषण अपेक्षित होता है।**

♋ 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लेखन में इसी पद्धति को अपनाया **उन्होंने कवियों, लेखकों की कृतियों का विश्लेषण तदयुगीन परिस्थितियों एवं वातावरण के परिप्रेक्ष्य** में किया।

हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रंथ				
क्र.सं.	इतिहास ग्रंथ	रचनाकार	रचनाकाल	विशेष
31	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी	1986	(व्याख्याता परीक्षा– 18 नवंबर, 2024)
32	हिन्दी साहित्य का दुसरा इतिहास	बच्चन सिंह	1996	राजस्थान पात्रता (सेट) परीक्षा– 26 मार्च, 2023,(व्याख्याता परीक्षा–18 नवंबर, 2024)
33	हिन्दी उपन्यास का इतिहास	गोपालराय	2002	
34	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	सुमन राजे	2003	
35	हिन्दी कहानी का इतिहास (तीन खंड) गोपालराय		2008, 2011, 2014	
36	हिन्दी साहित्य	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा		
37	हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास	डॉ.भागीरथ मिश्र		
38	हिन्दी वीर काव्य	डॉ. टीकम सिंह तोमर		
39	रीतिकाव्य की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र सिंह		
40	हिन्दी साहित्य का अतीत (दो खंड)	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र		(व्याख्याता परीक्षा– 18 नवंबर, 2024)
41	चौतन्य संप्रदाय और उसका साहित्य	प्रभुदयाल मित्तल		
42	साहित्येतिहास संरचना और स्वरूप	डॉ. सुमन राजे		
43	नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र	गजाननमानव मुक्तिबोध		
44	इतिहास और आलोचना	नामवर सिंह		
45	आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ	नामवर सिंह		
46.	हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास	गुलाबराय	1937	

हिन्दी साहित्य का काल–विभाजन एवं नामकरण

❖ **गार्सा द तासी** और **शिवसिंह सेंगर** ने काल विभाजन व नामकरण का कोई प्रयास नहीं किया।

❖ ग्रियर्सन नें अपने इतिहास ग्रंथ को **'ग्यारह'** अध्यायों में विभक्त किया, प्रत्येक अध्याय एक **काल खंड** को व्यक्त करता है।

1. जॉर्ज ग्रियर्सन द्वारा किया गया कालविभाजन एवं नामकरण

1. चारणकाल = (700 ई.– 1300 ई. तक)
2. **15 वीं सदी का धार्मिक पुनर्जागरण**
3. जायसी की प्रेम कविता =
4. **ब्रज का कृष्ण संप्रदाय** = (1500 ई.– 1600 ई. तक)
5. मुगल दरबार
6. **तुलसीदास**
7. **रीतिकाव्य** = (1580 ई. – 1692 ई. तक)
8. तुलसी के अन्य परवर्ती = (1600 ई. – 1700 ई. तक)
9. **अठारहवीं शताब्दी**
10. कंपनी के शासन में हिंदुस्तान = (1800 ई. – 1857)
11. **विक्टोरिया के शासन में हिंदुस्तान एवं विविध = (1857 ई. से)**

● इस काल विभाजन में **वैज्ञानिकता** का अभाव है। अध्यायों की संख्या अधिक है। इसे काल विभाजन मानना उपयुक्त नहीं है, लेकिन इतना कह सकते हैं की इन्होंने **सर्वप्रथम हिंदी साहित्य** के इतिहास का काल विभाजन **करने का प्रयास** किया है।

2. मिश्र बंधुओं द्वारा किया गया काल विभाजन एवं नामकरण

❖ मिश्रबंधुओं ने अपनी पुस्तक **'मिश्रबंधु विनोद' (1913)** में हिन्दी साहित्य का कालविभाजन और नामकरण प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है:–

3 वीरगाथा काल (आदिकाल)

आदिकाल का नामकरण

❖ नामकरण की दृष्टि से हिन्दी साहित्य का आदिकाल पर्याप्त **विभिन्नताओं, मतभेदों और विवादों का काल** है। 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' ने साहित्य की प्रमुख प्रवृति– **वीरगाथात्मकता** एवं 12 ग्रंथों की प्रसिद्धि के आधार पर 'आदिकाल' का नामकरण '**वीरगाथा**' काल किया है। शुक्ल जी द्वारा निर्दिष्ट 12 प्रसिद्ध ग्रंथ निम्नलिखित हैं:–

क्र.सं.	पुस्तक	लेखक	रचना का समय
1	खुमान रासो	दलपति विजय	सं. 1180–1205
2	जयचंद्रप्रकाश	भट्ट केदार	सं. 1225
3	पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई	सं. 1225–1249
4	परमाल रासो	जगनिक	सं. 1230
5	खुसरो की पहेलियाँ	अमीर खुसरो	सं. 1230
6	जयमयंक जसचन्द्रिका	मधुकर कवि	सं. 1240
7	बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह	सं. 1292
8	विजयपाल रासो	नल्लसिंह	सं. 1350
9	हम्मीर रासो	शारंगधर	सं. 1357
10	कीर्तिलता	विद्यापति	सं. 1460
11	कीर्तिपताका	विद्यापति	सं. 1460
12	विद्यापति की पदावली	विद्यापति	सं. 1460

● आचार्य रामचन्द्र शुल ने इनमें से चार पुस्तकों **(विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका)** को साहित्यिक पुस्तकें माना है, जबकि **शेष आठ पुस्तकों को देशभाषा** की पुस्तकें कहा है। इन्ही पुस्तकों की मूल प्रवृति के आधार पर शुक्ल जी ने आदिकाल को **वीरगाथा काल** नाम दिया है।

❖ आदिकाल के नामकरण के संबंध में प्रचलित मत:

क्र.सं.	आदिकाल का नाम	लेखक/विद्वान
1	चारणकाल	जॉर्ज ग्रियर्सन
2	आरंभिक काल	मिश्रबंधु
3	वीरगाथाकाल,आदिकाल	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4	संधि काल, चारण काल	डॉ. रामकुमार वर्मा
5	सिद्ध सामंत काल	राहुल सांकृत्यायन
6	बीजवपन काल	महावीर प्रसाद द्विवेदी
7	अपभ्रंश काल	प. चंद्रधर शर्मा गुलेरी
8	अपभ्रंश काल	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा
9	आदिकाल	हजारी प्रसाद द्विवेदी
10	वीरकाल	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11	संक्रमण काल	डॉ. रामखेलावन पांडे
12	संक्रमण काल	हरिश्चंद्र वर्मा
13	अंधकाल	रमाशंकर शुक्ल
14	बाल्यावस्थाकाल	रमाशंकर शुक्ल
15	प्रारम्भिक काल	गणपति चंद्र गुप्त
16	शून्यकाल	गणपति चंद्र गुप्त
17	आधारकाल	मोहन अवस्थी
18	अंधकार काल	कमल कुलश्रेष्ठ
19	उद्भव काल	वासुदेव सिंह
20	व्याघातों का युग	हजारी प्रसाद द्विवेदी

❖ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा दिया गया नाम 'वीरगाथा काल' नामकरण निम्न कारणों से अनुपयुक्त है:–**

- समय सीमा की संकीर्णता।
- सिद्ध, नाथ, और जैन साहित्य को **सांप्रदायिक कहकर** इनकी उपेक्षा करना।
- शुक्ल द्वारा निर्दिष्ट 12 ग्रंथों **में कई ग्रंथों की प्रामाणिकता** का **संदिग्ध होना।**
- कुछ ग्रंथों (बीसलदेव रासो, विद्यापति पदावली) का **श्रृंगारिक होना।**
- जयचंद प्रकाश, **जयमयंक जसचंद्रिका**, का नोटिस **मात्र** होना आदि।

❖ **डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने लिखा है कि शुक्ल जी ने जिन रचनाओं को प्रामाणिक मानकर इस काल का नामकरण किया था, इनमें **अधिकांश** संदिग्ध और अप्रामाणिक हैं। इधर अनेक अज्ञातपूर्व काव्यों का पता लगा है, जो महत्त्वपूर्ण हैं। नामकरण के **समय शुक्ल जी के सामने ये पुस्तकें नहीं थी।**

● कुछ प्रमुख नामकरणों में राहुल सांकृत्यायन द्वारा प्रतिपादित नामकरण '**सिद्धसामंत काल**' और **डॉ. रामकुमार वर्मा** द्वारा दिए गए नामकरण 'संधिकाल एवं चारणकाल' से दो काव्य धाराओं का बोध होता है, अतः यह नामकरण उचित नहीं है।

रचनाएँ	रचनाकार	रचनाकाल	वर्ण्य– विषय
महापुराण (तिसट्ठिमहा पुरिस गुणालंकार)	पुष्पदन्त	10वीं शती	इसमे तिरसठ शलाका पुरुषों का जीवन चरित्र का वर्णन है।
णयकुमारचरीउ (नागकुमार चरित)	पुष्पदन्त	10वीं शती	नागकुमार के चरित्र का वर्णन।
जसहरचरीउ (यशधरचरित)	पुष्पदन्त	10वीं शती	यशोधरा या जसहर के चरित्र का चित्रण।
भविसयत्तकहा	धनपाल	10वीं शती	अपभ्रंश का प्रथम प्रबंध काव्य
परमात्मप्रकाश और योगसार	जोइन्दु	10वीं शती	धर्म दर्शन का वर्णन, आध्यात्मिक काव्य।
उपदेश रसायन रास	जिनदत्तसूरि	12वीं शती	सदाचार, नीति संबंधी उपदेश।
पाहुड़ दोहा	रांमसिह	11वीं शती	दार्शनिकता
प्राकृत पैगलम	विद्याधर, जज्जल	बब्बर, शारंधर	छंदशास्त्र ग्रंथ।
कीर्तिलता	विद्यापति	14वीं शती	राजा कीर्तिसिंह की वीरता एवं दानशीलता का वर्णन।

6. डिंगल–पिंगल साहित्य

आदिकालीन डिंगल–पिंगल साहित्य

❖ राजस्थान की **साहित्यिक भाषा को डिंगल** कहा जाता है। राजस्थानी, बोलचाल की भाषा का जो **साहित्यिक रूप** बना उसे ही **डिंगल** कहा जाता है। **ब्रज प्रदेश** की **साहित्यिक** भाषा का नाम **पिंगल भाषा** है। **अपभ्रंश और मारवाड़ी भाषा** के **मिश्रण से डिंगल** एवं **अपभ्रंश और ब्रज** के मिश्रण से **पिंगल** भाषा बनी है। डिंगल भाषा का प्रयोग **वीर रस** और पिंगल भाषा का प्रयोग **श्रृंगार रस** की रचनाओं में हुआ है।

✍ डिंगल शब्द का मारवाड़ी भाषा के अर्थ में **प्रयोग सर्वप्रथम कुशललाभ** की कृति **'पिंगल शिरोमणि ग्रंथ'** (1549ई) में मिलता है। **डिंगल शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों में मतभेद** है। इस संबंध में विविध मत प्रचलित हैंः–

डिंगल शब्द की उत्पत्ति के संबंधी मत

- **हरप्रसाद शास्त्री**– डिंगल शब्द को 'डगल' शब्द से उत्पन्न माना है। डगल का **अर्थः**– **ढेला।**
- **गजराज ओझा**– डिंगल में **डकार वर्ग के वर्णों** की बहुलता है अतः इसे डिंगल कहा गया।
- **एल. पी. टैसीटरी**– डिंगल का अर्थ अनियमित अथवा **गँवारू** है।
- **मोतीलाल मेनारिया**– डिंगल शब्द **डींग** से बना है, डींग का अर्थ हैः– **दर्पोक्ति से युक्त भाषा।**
- **पुरुषोत्तम स्वामी**– डिंगल शब्द की उत्पत्ति **शिव के डमरू** से मानते है, इनका मानना है की डिंगल भाषा के शब्दों के उच्चारण में **गले से डमरू जैसी ध्वनि प्रकट** होती है। **डिम**– (डमरू की ध्वनि) **गल**– (गला)।
- **राजस्थान में प्रचलित अर्थः**– डिंभ . गल, **डिंभ का अर्थ**– बालक और **गल का अर्थ**– गला। बालकों की भाषा।

डिंगल काव्य में **'बैणसगाई'** अलंकार का विशेष महत्त्व है। **डॉ**

☞ **रामकुमार वर्मा** ने मुख्य रूप से दो ग्रंथों **'बीसलदेव रासो'** और **'पृथ्वीराज रासो'** को डिंगल साहित्य की रचना माना है।

पिंगल भाषा के संबंध में मत

- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**– शुक्ल ने पिंगल को **डिंगल** के समान उस समय की **साहित्यिक भाषा** स्वीकार किया है।
- **डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी**– द्विवेदी जी के अनुसार **पिंगल नाम छंदशास्त्र के रचयिता** का नाम था, इसलिए उस काल की **परिष्कृत भाषा (ब्रजभाषा)** को **पिंगल नाम** दे दिया गया।
- **डॉ. रामकुमार वर्मा**– वर्मा जी के अनुसार **शौरसेनी अपभ्रंश** से उत्पन्न **ब्रजभाषा** में साहित्य की रचना **12 वीं शताब्दी** में आरंभ हुई, उस समय इसका नाम **पिंगल** था। यह **राजस्थानी** साहित्य डिंगल के समान **मध्यदेश** की **साहित्यिक भाषा** का नाम था।
- **डॉ श्यामसुंदर दास के अनुसार**– पिंगल **आदिकाल की साहित्यिक भाषा** थी। यह एक व्याकरणसम्मत और संयत भाषा थी। पिंगल–भाषा में अधिकतर वे विद्वान् रचना करते थे जो अपने ग्रंथों में संयत भाषा तथा व्याकरण–सम्मत प्रयोगों के निर्वाह में समर्थ होते थे। पिंगल की रचनाओं में धीरे–धीरे **साहित्यिकता** बढ़ने लगी और **नियमों के बंधन** भी जटिल होने लगे।
- **मुंशी देवी प्रसाद**– मुंशी जी की मान्यता है कि पिंगल शब्द का संबंध **'पांगला' (पंगे या लूले)** से था।

प्रमुख डिंगल साहित्य

1. बेलिक्रिसनरुकमणी री (पृथ्वीराज राठौड़)

❖ बीकानेर के शासक रायसिंह के भाई **पृथ्वीराज राठौड़** ने इस **प्रेम ग्रंथ की** रचना की। यह एक प्रसिद्ध **खंड काव्य** है जिसमें **कृष्ण–रुक्मणी के प्रेम विवाह** के वर्णन के साथ ही **प्रकृति चित्रण** भी किया गया है। इस रचना में **'बेलियों गीत'** छंद का प्रयोग हुआ है। इस ग्रंथ की भाषा **साहित्यिक डिंगल** है, जिसमें **अलंकार लालित्य, भाव सुकुमारता द्रष्टव्य** है।

✍ इस ग्रंथ को **दुरसा आढ़ा** ने **'पांचवा वेद'** कहा जाता है।

4 भक्तिकालः– निर्गुण काव्य धारा (क) संत या ज्ञानाश्रयी शाखा

❖ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने ग्रंथ **'हिन्दी साहित्य के इतिहास'** में **मध्यकाल को दो खंडों में विभक्त** किया है–
(1) पूर्व मध्यकाल (संवत् 1375 वि. से 1700 वि.)
(2) उत्तर मध्यकाल (संवत् 1700 वि. से 1900 वि.)

● **पूर्व मध्यकाल को भक्तिकाल** तथा **उत्तरमध्यकाल को रीतिकाल** कहा जाता है। आचार्य शुक्ल ने **संवत् 1375 वि. से 1700 वि.** के काल खण्ड को **भक्तिकाल** नाम दिया है। शुक्ल के अनुसार इस **काल–खण्ड** में भक्ति भावना की प्रधानता थी, इसलिए **प्रवृति की दृष्टि से उनका यह नामकरण उचित** है।

✍ **डॉ. नगेंद्र ने** अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से **1350 ई. से 1650 ई. तक भक्तिकाल की समय सीमा** स्वीकार की है।

भक्ति का अर्थ एवं स्वरूप

❖ **'भज' धातु से भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति** हुई है। **'भज'** धातु का अर्थ है– **'भज्सेवायम' अर्थात् सेवा करना**। **'भक्ति'** शब्द **ईश्वर पूजा, ईश वंदना, ईश्वर के प्रति अनुराग, ईश्वरोपासना** आदि के लिए प्रयुक्त होता है। ईश्वर भक्ति को परिभाषित करना अत्यन्त कठिन है। लेकिन **'नारद भक्ति सूत्र'** एवं **'शांडिल्य भक्ति सूत्र'** में भक्ति की परिभाषा दी हैं।

● **भक्ति की कुछ परिभाषाएँ द्रष्टव्य हैं:–**

♦ **''सा त्वस्मिन् परमप्रेम– रुपा, अमृत – स्वरूपा च।''** अर्थात् भक्ति ईश्वर के प्रति परम प्रेम रूपा और अमृत स्वरूपा है। या भगवान में परम प्रेम होना भक्ति है। **(नारद भक्ति सूत्र)**

♦ **''पूजादिष्वनुराग इतिपाराशर्यः''** अर्थात् भगवान की पूजा आदि में अनुराग (प्रेम) होना ही भक्ति है। **(नारद भक्ति सूत्र)**

♦ **''सा परानुरक्तिरीश्वरे।''** अर्थात् ईश्वर के प्रति परम अनुराग ही भक्ति है। **(शांडिल्य भक्ति सूत्र)**

♦ भगवान में माहात्म्यपूर्वक सुदृढ़ और सतत **स्नेह ही भक्ति** है। मुक्ति का इससे सरल उपाय नहीं।
(तत्तवदीप निबंध, वल्लभाचार्य)

♦ मन की उस वृति को **भक्ति** कहते हैं, जो आध्यात्मिक साधना से द्रवीभूत होकर ईश्वर की और प्रवाहित होती है।
(भक्ति रसायन)

♦ ''जाते बेगि द्रवहु मैं भाई। सो मम भक्ति परम सुखदाई।
सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि अधीन ज्ञान विज्ञाना।।
(तुलसीदास)

♦ **श्रद्धा एवं प्रेम के योग का नाम भक्ति है।**
(चिंतामणि भाग–1, आचार्य शुक्ल)

♦ भक्ति भगवान् के प्रति अनन्यगामी एकांत प्रेम का नाम है।
(हजारी प्रसाद द्विवेदी)

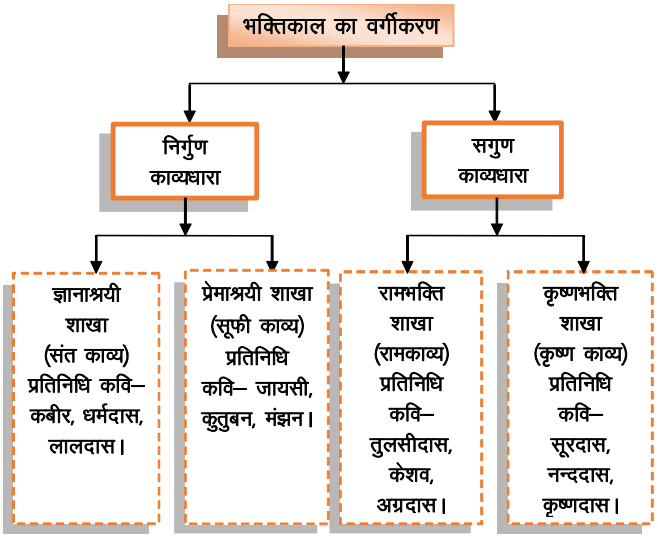

भक्ति आंदोलन के उदय से संबंधित मतः–

❖ **भक्ति आंदोलन के उदय के विषय में महत्त्वपूर्ण मत निम्न हैं:–**

♦ ईसा की दूसारी – तीसरी शताब्दी में कुछ **ईसाई मद्रास** आकर बस गये थे जिनके प्रभाव से भक्ति का विकास हुआ। **भक्ति आंदोलन ईसाइयत की देन** है। **(ग्रियर्सन)**
उनका यह तर्क हास्यास्पद है कि रामानुजाचार्य को भावावेश एवं **प्रेमोल्लास के धर्म** का संदेश ईसाइयों से मिला।

♦ **''भक्तों की जयंतियाँ** मनाने की प्रथा ईसाई मत के प्रभाव के फलस्वरूप है।'' **(मैक्स बेवर)**

♦ देश में मुसलमानों का राज्य स्थापित हो जाने से **हिन्दू** जनता हताश, निराश एवं पराजित हो गई थी। पराजित मनोवृत्ति में **ईश्वर की भक्ति** की ओर उन्मुख होना स्वाभाविक था।
(आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

♦ हिन्दू जनता ने भक्ति भावना के माध्यम से अपनी **श्रेष्ठता दिखाकर** पराजित मनोवृत्ति का शमन किया। **(आचार्य रामचंद्र शुक्ल)**

♦ **तत्कालीन धार्मिक परिस्थितियों** ने भी भक्ति के प्रसार में योगदान किया **नाथ, सिद्ध योगी** अपनी रहस्यदर्शी शुष्क वाणी में जनता को उपदेश दे रहे थे। **भक्ति, प्रेम** आदि हृदय के प्राकृत भावों से उनका कोई सरोकार नहीं था। भक्ति भावना से ओतप्रोत साहित्य ने इस अभाव की पूर्ति की। **(आचार्य रामचंद्र शुक्ल)**

♦ भक्ति का मुख्य स्रोत **दक्षिण भारत** में था। 7वीं शती में **आलवार भक्तों** ने जो भक्ति भावना प्रारंभ की उसे उत्तर भारत में फैलने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त हुई। **(आचार्य रामचंद्र शुक्ल)**

♦ **शंकराचार्य, निम्बकाचार्य,** रामानुजाचार्य, रामानंद, वल्लभाचार्य, आलवार संत, **वीर, शैव,** लिंगायत आदि शैव संप्रदायों की दार्शनिक मान्यताओं पर मुस्लिम प्रभाव है। **(हुमायूँ, कबीर, ताराचंद)**

5 भक्तिकाल : निर्गुण काव्य धाराः– (ख) सूफी या प्रेमाश्रयी शाखा

(ख) सूफी काव्य शाखा या प्रेमाश्रयी शाखा

❖ **भक्तिकाल की निर्गुण धारा के अंतर्गत्** संत काव्य और सूफी काव्य नामक दो शाखाएं हैं। सूफी काव्य के लिए **प्रेममार्गी शाखा, प्रेमाश्रयी शाखा, प्रेमाख्यान काव्य परंपरा, रोमांसिक कथा काव्य परंपरा आदि** नाम प्रचलित हैं। इस काव्य में प्रेमतत्व की प्रधानता परिलक्षित होती है।

● सूफी काव्य में उपलब्ध प्रेम भावना भारतीय प्रेम से कुछ अलग है, **यह स्वच्छंद प्रेम है जिसे अंग्रेजी** में **'रोमांस'** कहा जाता है। इस प्रेम भावना में **स्वच्छंदता, सौंदर्यभावना, साहसपूर्ण क्रियाकलाप** विद्यमान रहते हैं, यह मर्यादावादी दाम्पत्य प्रेम से हटकर है। **स्वच्छंद प्रेम समाज की मान्यताओं को स्वीकार नहीं करता।** मध्यकालीन **प्रेममार्गी या प्रेमाख्यान ग्रंथों** में **इसी 'रोमांस'** का चित्रण किया गया है।

सूफी मत का वैचारिक आधार

❖ **संस्कृत और हिन्दी काव्य में वर्णित चार प्रकार की प्रेम पद्धतियाँ हैंः–**

(1) विवाहोपरान्त होने वाला प्रेम।

✍ **जैसेः–** आदिकाव्य रामायण में।

(2) विवाह पूर्व का प्रेम।

✍ **जैसेः–** रत्नावली और कर्पूरमंजरी में।

(3) राजाओं के अंतः पुर में विलास आदि के रूप में होने वाला प्रेम।

✍ **जैसेः–** रत्नावली, कर्पूरमंजरी में।

(4) गुणश्रवण, चित्रदर्शन या स्वप्न दर्शन द्वारा मन में उत्पन्न होने वाला प्रेम।

✍ **जैसेः–** उषा अनिरुद्ध का प्रेम।

● **सूफी कवियों ने चौथे प्रकार की प्रेम पद्धति** को अपनाकर अपने प्रेमाख्यान ग्रंथों की रचना की है। सूफी **प्रेमाख्यानक काव्य** परंपरा विदेशी नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें **भारतीय पौराणिक साहित्य में उपलब्ध** हैं। आचार्य शुक्ल ने इन प्रेमाख्यानकों पर फारसी की **मसनवियों का प्रभाव** माना है, लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि इस प्रकार का प्रेम चित्रण भारतीय परंपरा में भी **प्रचुरता** से उपलब्ध होता है।

☛ **जैसेः– ऋग्वेद में उर्वशी–पुरुरवा का आख्यान, महाभारत में नल–दमयन्ती आख्यान, तप्तासंवरण आख्यान और पुराणों में वर्णित उषा–अनिरुद्ध, राधा–कृष्ण, प्रभावती– प्रद्युम्न आख्यान आदि स्वच्छंद प्रेम की श्रेणी में ही आते हैं।**

● स्वच्छंद प्रेम की यहीं परंपरा कालांतर में संस्कृत में **वासवदत्ता** (सुबंधु), **कादंबरी** (बाणभट्ट), **दशकुमार चरित** (दण्डी) आदि में दिखाई पड़ती है। प्राकृत भाषा में **वृहत्कथा** (गुणाढ्य), **कथासरित्सागर** (क्षेमेन्द्र) की प्रेम कथाओं में **प्रेम की उत्पत्ति सौन्दर्य प्रेरणा** से हुई है तथा नायक को नायिका के संरक्षकों का विरोध झेलना पड़ा है।

कालिदास के मेघदूत का **यक्ष**, ऋग्वेद का **पुरुरवा, कथासरित्सागर** व **दशकुमार चरित** के नायक अत्यन्त कातर होकर नायिका के प्रणय की आकांक्षा करते हैं, अतः **नायक का विरह विलाप जो सूफी काव्य में भी प्रमुखता से वर्णित** है, **वह अभारतीय पद्धति नहीं मानी जा सकती** है। फारसी मसनवियों में नायिका का विवाह प्रतिनायक से हो जाता है और नायक आत्महत्या कर लेता है पर भारतीय **प्रेमाख्यानकों** में किसी **देवी शक्ति के सहयोग** से नायक को नायिका की प्राप्ति अवश्य ही हो जाती है। अतः यह कहना उचित होगा कि सूफी कवियों द्वारा **रचित प्रेमाख्यान फारसी मसनवियों की शैली** में नहीं लिखे गए हैं, बल्कि भारतीय परंपरा में ही लिखे गए हैं।

● महाभारत की अनेक कथाओं में यह **प्रेमाख्यान परंपरा** उपलब्ध होती है। **प्रणय स्वप्न की पूर्ति** के लिए **सामाजिक मर्यादायों का उल्लंघन, कन्याओं का हरण** तथा विवाह में **आर्य अनार्य** के भेद का लोप भी वैध था।

☛ **जैसेः–** भीम ने **असुर कन्या हिडिंम्बा** से, अर्जुन ने **नागकन्या चित्रांगदा** से, कृष्ण ने **ऋक्ष कन्या जाम्बवती** से विवाह किया

● महाभारत का **नल–दमयन्ती वृतांत (वन पर्व)** प्रेमाख्यान काव्य की सभी विशेषताओं से युक्त है। **डॉ. नगेंद्र सिंह** ने इसी को **भारतीय प्रेमाख्यानों की आधारभूमि** माना है। **हरिवंश पुराण** में वर्णित ऐसे प्रेमाख्यान बहुतायत से उपलब्ध हैं। **प्राकृत** भाषा में रचित **वृहत्कथा** के नायक उदयन के पुत्र नरवाहन के साहस, शौर्य एवं प्रेम की कहानियों भी **इन सूफी प्रेमाख्यानों की आधार भूमि बनी**। प्राकृत एवं अपभ्रंश के **जैन कवियों** द्वारा रचित प्रेम कथाओं **भुवन सुंदरी, मलय सुंदरी, लीलावती** आदि में भी प्रेमाख्यान हैं, जिनमें नायक की सफलता किसी **जैन तीर्थकर** या **मुनि** द्वारा दिखलाकर नायक–नायिका को जैन धर्म में दीक्षित करके कथा सम्पन्न कर दी गई।

☛ **निष्कर्ष** यह है कि यह **प्रेमाख्यानक परंपरा महाभारत से होकर आधुनिक भाषाओं** तक पहुंची है। **अवधी भाषा** के साथ ही बंगला भाषा में भी यह प्रेमाख्यानक मिलते हैं। **इतना कहा जा सकता है कि सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा विदेशी नहीं है, बल्कि भारतीय है।**

सूफी शब्द की व्युत्पत्ति

❖ **सूफी शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में अनेक मत प्रचलित हैं, जो निम्न हैंः–**

● **सुफ्फा–** मुसलमानों के पवित्र तीर्थ **मदीना की मस्जिद के सामने एक चबूतरा** है जिसका नाम **'सुफ्फा'** है, इस पर बैठने वाले **फकीरों को सूफी** कहा जाता है।

प्रमुख प्रेमाख्यानक कवि एवं उनकी कृतियाँ

क्रं. सं.	रचना	रचना काल	रचनाकार	नायक, नायिका, भाषा, वर्ण्य विषय
1	हंसावली	1370	असाइत	पाटन की राजकुमारी हंसावली एवं राजकुमार की प्रेमकथा, राजस्थानी और हिन्दी भाषा।
2	चंदायन	1379	मुल्ला दाउद	नायक लोर और नायिका चंदा की प्रेम कथा, अवधी भाषा, सूफी काव्य परंपरा की प्रथम कृति (डॉ रामकुमार वर्मा के अनुसार, यह मत मान्य है।)
3	लखमनसेन पद्मावती कथा	1459	दामोदर	लक्ष्मनसेन और पद्मावती की प्रेम कथा, राजस्थानी भाषा
4	सत्यवती कथा	1501	ईश्वरदास	ऋतुपर्ण और सत्यवती का प्रथम दर्शनजन्य प्रेम, सतीत्व की माहिमा भाषा अवधी
5	मृगावती	1503	कुतुबन	चंद्रनगर के राजकुमार और कंचनपुर की राजकुमारी मृगावती की प्रेमकथा भाषा अवधी
6	माधवानल कामकन्ला	1527	गणपति	नायक माधव एवं नृत्यांगना कामकन्दला की प्रेमकथा भाषा राजस्थानी
7	पद्मावत	1540	जायसी	चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और पद्मावती के लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की कथा हिन्दी का प्रथम महाकाव्य
8	मधुमालती	1545	मंझन	मनोहर एवं मधुमालती की प्रेम कथा भाषा अवधी (सेट परीक्षा– 26 मार्च, 2023)
9	माधवानल कामकंदला	1556	कुशालाभ	माधव और कामकंदला की प्रेम कथा भाषा राजस्थानी
10	रूपमंजरी	1568	नन्ददास	नायिका का विवाहित होकर भी श्रीकृष्ण को पति मानने की कथा भाषा ब्रज
11	माधवानल कामकंदला	1584	आलम	माधव और कामकंदला की प्रेम कथा भाषा अवधी
12	छिताईवार्ता	1590	नारायणदास	ढोल समुद्रगढ़ के राजकुमार एवं छिताई का प्रेम वर्णित राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा
13	चित्रावली	1613	शेख उसमान	सुजान और चित्रावली की प्रेम कथा का चित्रण भाषा अवधी। (सेट परीक्षा– 2023)
14	रसरतन	1618	पुहकर	राजकुमार सोम और राजकुमारी रंभा का प्रेम चित्रण भाषा अवधी।
15	ज्ञानदीप	1619	शेखनवी	राजकुमार ज्ञानदीप और देवयानी की प्रेमकथा अवधी भाषा में
16	कामलता	1621	जान	राजा रसाल और कामलता का प्रेम चित्रण अवधी भाषा (सेट परीक्षा– 2023)
17	हंसजवाहिर	1736	कासिमशाह	राजा हंस और रानी जवाहिर की प्रणय कथा भाषा अवधी।
18	इंद्रावती	1744	नूर मुहम्मद	राजकुमार राजकुंवर और राजकुमारी इंद्रावती की प्रणय कथा भाषा अवधी
19	अनुराग बाँसुरी	1764	नूर मुहम्मद	तत्त्व ज्ञान संबंधी रचना अवधी भाषा
20	युसूफ जुलेखा	1790	शेख निसार	जुलेखा के लिए युसूफ के त्याग की मार्मिक कथा अवधी में
21	कथारूप मंजरी		जान कवि	रूपमंजरी की प्रेम कथा भाषा ब्रज

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. मझंन कृत 'मधुमालती' के संदर्भ में असंगत विवरण है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) मनोहर के प्रेम की दृढ़ता में कहीं भी शिथिलता नहीं आती।
(ब) मधुमालती की प्रेमव्यथा प्रेमोन्माद नहीं है।
(स) इसमें मनोहर– मधुमालती की प्रमुख कथा के साथ ही ताराचंद–प्रेमा की एक और अंतर्कथा चलती है।
(द) अन्य प्रेमाख्यानों की तरह इसकी कथा भी दुःखांत है। (द)

2. निम्न में से 'मलिक मुहम्मद जायसी' की रचना नहीं है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 17 मार्च, 2024)
(अ) आखिरी कलाम (ब) अखरावट
(स) रसरतन (द) चित्ररेखा (स)

3. 'मृगावती' किस कवि की रचना है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) जायसी (ब) मुल्ला दाउद
(स) कुतुबन (द) मंझन (स)

4. "यहु तन जालौं मसि करूँ, ज्यूँ धूवाँ जाइ सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।।"
उक्त साखी के सन्दर्भ में अनुपयुक्त तथ्य है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) विरह की मार्मिकता
(ब) आत्मा की तीव्र मिलन की उत्कंठा
(स) शारीरिक उत्सर्ग की अभिव्यंजना
(द) विशेषोक्ति अलंकार (द)

6 भक्तिकालः– सगुण भक्ति धारा (क) रामभक्ति शाखा

(क) राम भक्ति शाखा या राम भक्ति काव्य

❖ **आचार्य शुक्ल** ने भक्तिकाल का वर्गीकरण दो धाराओं में किया है:– निर्गुण धारा और सगुण धारा। सगुण धारा को पुनः दो शाखाओं:– **राम भक्ति शाखा** एवं **कृष्ण भक्ति शाखा** में विभक्त किया अतः सगुण भक्ति धारा में **इन्हीं दो शाखाओं का अध्ययन किया जाता है।**

❖ संस्कृत में महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' रामकथा का **मूल स्रोत है।** इसके रचनाकाल के संबंध में विद्वानों में एक राय नहीं है, किन्तु इतना निश्चित है कि **'रामायण'** की रचना महात्मा बुद्ध के जन्म से पूर्व हों चुकी थी क्योंकि इसमें बुद्धावतार का उल्लेख नहीं है।

✍ **'रामायण'** की कथा 'महाभारत' के आरण्यक पर्व, द्रोण पर्व, एवं शांति पर्व **में है।** इससे स्पष्ट है की **'रामायण' की रचना** 'महाभारत' **से पूर्व हो चुकी थी।**

- अगस्त्य संहिता, राघवीय संहिता और रामरहस्योपनिषद में भी रामकथा आख्यान है। इसके अतिरिक्त 'विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण और कूर्म पुराण में रामकथा के कुछ अंश मिलते हैं।
- **संस्कृत भाषा** में रचित 'अध्यात्म रामायण', आनंद रामायण, अद्भुत रामायण, भुशुंडी रामायण आदि में रामकथा की दार्शनिक और धार्मिक विवेचना की गई है।
- बौद्ध **जातक कथाओं** में 'दशरथ जातक' और 'अनामर्क जातक' में राम कथा मिलती है। **जैन साहित्य** में 'रामकथा' पर आधारित अनेक ग्रंथ मिलते है।
- **दक्षिण भारत** के 'आलवार' **भक्तों** की रचनाओं में भी राम कथा है। **आलवार भक्त** कवि **'शठकोप' को** 'राम की पादुका' **का अवतार माना जाता** है। सातवें आलवार भक्त चेरवंशी राजा 'कुलशेखर' ने 'सीताहरण' का प्रसंग सुनकर भावावेश में अपनी सेना को तुरंत लंका पर चढ़ाई करने का आदेश दे दिया।
- **उत्तर भारत में रामभक्ति का प्रवर्तन आचार्य रामानुज** की परंपरा में 'राघवानन्द' द्वारा किया गया राघवानंद के शिष्य 'रामानन्द' राम के **धनुषबाणधारी लोकरक्षक रूप** की उपासना प्रारंभ की एवं हिन्दू समाज की पराजित मनोवृत्ति का शमन किया

✍ रामानन्द ने बलात् मुसलमान बनाये गए हिंदुओं को 'रामतारक मंत्र' देकर पुनः हिन्दू धर्म में लौटने का मार्ग खोल दिया **रामानन्द ने भक्ति के द्वार सभी** जातियों के लिए **खोल दिए**, उन्होंने

✍ **भक्ति भावना में ऊंच नीच को समाप्त करके उसे** बाह्याडंबरों से मुक्त **किया** इनके शिष्यों में **निर्गुणोपासक एवं सगुणोपासक दोनों ही थे।** रामानन्द के बारह शिष्यों में कबीर, रैदास आदि थे।

संस्कृत भाषा में राम कथा

क्र. सं.	राम कथा : रचनाएँ	रचयिता
1.	रामायण	महर्षि वाल्मीकि
2.	रघुवंश	कालिदास
3.	रावण वध	भट्टि
4.	प्रतिमा (नाटक)	भास
5.	अभिषेक (नाटक)	भास
6.	महावीर चरित	भवभूति
7.	उत्तर रामचरित	भवभूति
8.	उदात्त राघव (नाटक)	अन्नगहर्ष
9.	जानकीहरण	कुमारदास
10.	रामायण मंजरी	क्षेमेन्द्र
11.	कुंदमाला (नाटक)	दिङ्नाथ
12.	उदार राघव	साकल्यमल
13.	रघुनाथ चरित	वामन भट्टण
14.	जानकी परिणय	चक्र कवि
15.	राघवोल्लास (नाटक)	अद्वैत कवि
16.	अनर्घ राघव (नाटक)	मुरारि
17.	बाल रामायण (नाटक)	राजशेखर
18.	प्रसन्न राघव (नाटक)	जयदेव
19.	उल्लास राघव (नाटक)	सोमेश्वर
20.	राघव पाँडवीय	धनंजय

जैन ग्रंथों में राम कथा

क्र. सं.	रचना	रचयिता/रचनाकार	भाषा
1.	पउमचरियम	विमल सूरि	प्राकृत
2.	रावण वध	प्रवरसेन	प्राकृत
3.	सिया चरियम्	भुवनतुंग सुरि	प्राकृत
4.	राम चरियम्	भुवनतुंग सूरि	प्राकृत
5.	पदम चरित्	रविषेण	प्राकृत
6.	उत्तर पुराण	गुणभद्र	प्राकृत
7.	पउमचरिउ	स्वयंभू	अपभ्रंश
8.	महापुराण	पुष्पदन्त	अपभ्रंश

तुलसीदास	बरवै रामायण	1612	रहीम की बरवै नायिका भेद रचना से प्रभावित होकर 69 बरवै छंदों में रामकथा के मार्मिक प्रसंगों से संबंधित रचना
तुलसीदास	कवितावली	1612	तुलसी के आत्मचरित्र से संबंधित ब्रज भाषा में लिखी मुक्तक रचना जिसमें कलिकाल का वर्णन किया गया है
नाभादास	भक्तमाल	1592	भक्तों के जीवन से संबंधित सबसे प्रामाणिक रचना जिसमे 200 भक्तों का जीवन परिचय दिया गया है ब्रज भाषा (पद्य)
नाभादास	अष्टयाम	1594	रामभक्ति से संबंधित ब्रज भाषा के गद्य में लिखी रचना
केशवदास	रामचंद्रिका	1601	वाल्मीकि रामायण के आधार पर रचित रामकथा
प्राणचंद चौहान	रामायण महानाटक	1610	रामकथा जिसे संवाद शैली में लिखा गया है
माधवदास	रामरासो	1618	राम कथा से संबंधित रचना
हृदयराम	हनुमन्नाटक	1623	संस्कृत नाटक पर आधारित रामकथा से संबंधित नाटक माधवदास
चारण	अध्यात्म रामायण	1624	संस्कृत भाषा में रचित अध्यात्म रामायण पर आधारित राम कथा
लालदास	अवध विलास	1643	राम के जन्म से लेकर वन गमन तक की रामकथा
कपुरचंद त्रिखा	रामायण	1643	वाल्मीकि रामायण के आधार पर लिखी गई रामकथा
सेनापति	कवित्त रत्नाकर	1649	इस ग्रंथ की चौथी और पाँचवी तरंग (अध्याय) में राम कथा
परशुराम देव	रघुनाथ चरित	–	निम्बार्क संप्रदाय के कवि की रामकथा
परशुराम देव	दशावतारचरित	–	
नरहरि बारहट	पौरुषेय रामायण	–	राम कथा मे राम के उद्दात चरित्र का वर्णन

भक्तिकाल में रचित काव्यशास्त्रीय (रीतिकाव्य) ग्रंथ

क्र. सं.	ग्रंथ/रचना	कवि/रचनाकार	रचनाकाल	विशेष तथ्य
1.	हिततरंगिणी	कृपाराम	1541	डॉ. नगेंद्र के अनुसार हिन्दी में रीति निरूपण परंपरा का प्रथम ग्रंथ, यह रीति ग्रंथ है
2.	साहित्य लहरी	सूरदास	1550	नायिका भेद, शृंगार रस एवं अलंकार निरूपण
3.	रसमंजरी	नन्ददास	1551	भानुदत्त की रसमंजरी के आधार पर लिखा गया नायिका भेद एवं शृंगार संबंधी रीति ग्रंथ
4.	कर्णाभरण, श्रुतिभूषण, भूप भूषण	करनेस	1579	करनेस के तीनों ग्रंथ अलंकार ग्रंथ हैं जिनमे अलंकारों का विवेचन काव्यशास्त्रीय पद्धति पर किया गया है।
5.	नखशिख	बलभद्र मिश्र	1583	नायिका भेद शृंगार रस संबंधी रीति ग्रंथ
6.	बरवै नायिका भेद	रहीम	1583	नायिका भेद संबंधी रीति ग्रंथ जिसमें बरवै छंद का प्रयोग किया गया है
7.	रसिकप्रिया	केशवदास	1591	रस का विवेचन ग्रंथ
8.	कविप्रिया	केशवदास	1601	अलंकार विवेचन ग्रंथ
9.	अलक शतक तिल शतक	मुबारक	1603	कवि ने नायिका की लटों और मुख पर स्थित तिल की सुंदरता को आधार बनाकर सो सो दोहे लिखे
10.	अलंकार चंद्रिका	गोप	1613	अलंकार विवेचना ग्रंथ
11.	रस कोश	न्यामत खान	1619	नायिका भेद एवं नवरस विवेच्य ग्रंथ
12.	कविबल्लभ	न्यामत खान	1647	अलंकार एवं काव्य गुण दोष विवेचन
13	रसमंजरी	न्यामत खान	1652	भानुदत्त की रसमंजरी का अनुवाद
14	सिंगर तिलक	न्यामत खान	1652	रुद्रभट्ट के शृंगारतिलक का अनुवाद
15.	सुंदर शृंगार	सुंदर कविराय	1631	रस विवेचन ग्रंथ

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. डॉ. विजयेन्द्र स्नातक के अनुसार तुलसीदास के काव्य के सन्दर्भ में असंगत कथन है?

(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)

(अ) तुलसी ने अवधी तथा ब्रज दोनों ही भाषाओं में काव्य रचना की ।

(ब) तुलसी साहित्य में भाव वैविध्य तो है, परन्तु शैली वैविध्य नहीं है।

(स) 'तुलसी' की भक्ति लोकसंग्रह की भावना से अभिप्रेरित है।

(द) रामचरित मानस में तुलसी ने राम और शिव दोनों को एक दूसरे का भक्त अंकित किया है। (ब)

7 भक्तिकाल : सगुण काव्य धारा (ख) कृष्णभक्ति शाखा

भारतीय वाङ्मय में कृष्ण का स्वरूप

❖ ऋग्वेद के कुछ सूक्तों के रचयिता **ऋषि कृष्ण** हैं और छान्दोग्य **उपनिषद् में भी** आंगिरस के शिष्य कृष्ण का उल्लेख किया गया है।

✍ **डॉ. भंडारकर** ने यह सिद्ध किया है कि वैदिक साहित्य में उल्लेखित **कृष्ण और महाभारत में** वर्णित **कृष्ण अलग–अलग** हैं। लोकमान्य **बालगंगाधर तिलक** ने डॉ. भंडारकर के मत का समर्थन किया है।

- महाभारत में वर्णित **कृष्ण यदुवंशी** क्षत्रिय हैं जिन्होंने धर्म की स्थापना हेतु अवतार लिया। वेद– वेदांग के ज्ञाता **'कृष्ण'** ने गीता के उद्‌गाता के रूप में अपने देवत्त्व का परिचय दिया है।
- कृष्ण की **बाललीला, गोपाल स्वरूप का प्रारंभ पुराणों से हुआ है।** कृष्ण की **महिमा का विस्तारपूर्वक** वर्णन भागवत पुराण, **हरिवंश पुराण, विष्णु पुराण एवं पद्म पुराण आदि ग्रंथों में किया गया है।** कृष्ण के दो रूप हैं **एक लोकरक्षक रूप और दूसरा लोकरंजक रूप।**

✍ **महाभारत** के कृष्ण **लोकरक्षक हैं** जबकि पुराणों में **वर्णित** कृष्ण **लोकरंजक हैं।** आश्चर्य की बात यह है, कि **श्रीमद्‌भागवत पुराण में राधा का कहीं उल्लेख नहीं** है, जबकि अन्य पुराणों में ब्रह्मवैवर्त पुराण, हरिवंश पुराण आदि में राधा को विशेष महत्त्व दिया गया है।

- **पुराणों में द्वारिकाधीश** और **महाभारत के कृष्ण** को महत्त्व न देकर **ब्रजबिहारी कृष्ण को, उनकी लीलाओं** को विशेष महत्व दिया गया है। **'रास पंचाध्यायी' (नन्ददास)** में गोपियों के साथ कृष्ण की मोहक लीलाओं का वर्णन किया गया है, लेकिन उसमें राधा का उल्लेख नहीं मिलता है। किन्तु कालांतर में राधा–कृष्ण की प्रेम लीलाएँ प्रसिद्ध हो गई।
- संस्कृत काव्य में **'अश्वघोष'** के **'ब्रह्मचरित'** काव्य में **कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता** है। **प्राकृत** भाषा में **'हाल'** कृत **'गाथा सतसई'** में राधा–कृष्ण की श्रृंगार प्रधान चेष्टाओं की अभिव्यक्ति की गई है। **भट्ट नारायण** के नाटक **'वेणीसंहार'** में श्रीकृष्ण रूठी राधा से अनुनय–विनय करते हैं। **'हेमचन्द्र'** ने अपने **प्राकृत व्याकरण** के दो पदों में श्रीकृष्ण का उल्लेख किया है।

✍ इनके पश्चात् **संस्कृत** में रचित **'गीतगोविंद'** में **'जयदेव'** ने राधा–कृष्ण की सरस केलि क्रीड़ाओं का मधुर, एवं ललित पदावली में वर्णन किया है।

- कृष्ण विषयक काव्य की प्रचुरता **12 वीं शती के पश्चात** ही दिखाई पड़ती है।

✍ 16 वीं शती में **'कृष्ण चैतन्य'** के **तीन विद्वान्** शिष्यों– **रूप गोस्वामी, जीव गोस्वामी** और **सनातन गोस्वामी** ने **कृष्ण भक्ति को शास्त्रीय आधार प्रदान किया।** रूप गोस्वामी की कृतियाँ **'उज्ज्वल नीलमणि'** और **'हरिभक्ति रसामृत सिंधु'** ने **कृष्ण भक्ति को साहित्यशास्त्र मे प्रतिष्ठित किया।**

- आधुनिक भारतीय भाषाओं में **सर्वप्रथम** मैथिली कोकिल **'विद्यापति'** ने राधाकृष्ण की प्रेम लीलाओं का चित्रण अपनी रचना **'पदावली'** में किया। **नामदेव** के कुछ पदों में भी कृष्ण भक्ति दिखाई पड़ती है। **बंगाल** के **'वैष्णव सहजिया संप्रदाय'** में भी राधाकृष्ण की भक्ति का वर्णन उपलब्ध होता है।

✍ **कृष्ण** को **'रस'** और **राधा** को **'रति'** नाम से **इस संप्रदाय में जाना जाता** है। विद्यापति की पदावली पर **बंगला भाषा का प्रभाव** है। पदावली के पद इतने मधुर एवं भावपूर्ण हैं कि जनश्रुति के अनुसार **चैतन्य महाप्रभु इन्हें गाते–गाते भाव विभोर होकर मूर्छित हो जाते** थे। राधा–कृष्ण की श्रृंगारिक चेष्टाओं एवं क्रियाओं का **मधुर चित्रण पदावली** के पदों में है। इसमें आसक्ति,मांसल सौन्दर्य की प्रधानता है। **संयोग एवं वियोग** के मार्मिक वर्णन इस रचना में उपलब्ध हैं।

- **नख–शिख वर्णन, सद्यस्नाता वर्णन,** वयः संधि एवं अभिसार के चित्र **विद्यापति की पदावली में हैं।**

कृष्ण भक्ति के विभिन्न संप्रदाय

क्रं.	संप्रदाय का नाम	प्रवर्तक आचार्य	श्रीकृष्ण का स्वरूप
1	बल्लभ संप्रदाय	बल्लभाचार्य	पूर्णानन्द परमब्रह्म पुरुषोत्तम
2	निम्बार्क संप्रदाय	निम्बार्काचार्य	राधा–कृष्ण की युगल मूर्ति।
3	राधा बल्लभ संप्रदाय (1534)	हितहरिवंश	एकमात्र राधा ही प्रमुख है, श्रीकृष्ण ईश्वरों के भी ईश्वर हैं।
4	हरिदासी संप्रदाय सखी संप्रदाय(1508)	स्वामी हरिदास	निकुंज बिहारी कृष्ण
5	गौड़ीयसंप्रदाय (चैतन्यभेदाभेद संप्रदाय)	चैतन्य महाप्रभु	ब्रजेन्द्र कुमार कृष्ण

1. बल्लभ संप्रदाय

❖ बल्लभ संप्रदाय के **प्रवर्तक बल्लभाचार्य** का दार्शनिक मत **'शुद्धाद्वैतवाद'** है। इनके मार्ग को **'पुष्टि' मार्ग** कहा जाता है।

✍ **पुष्टि** का अर्थ है– **'पोषण'** एवं **पोषण** का अर्थ है:– **'भगवत्कृपा या अनुग्रह'** अर्थात् **भगवान के अनुग्रह या कृपा को ही 'पुष्टि' कहा जाता है।** इसमें वही सच्चा भक्त है जो अपने को सर्वथा भगवान की आश्रय में छोड़ दे।

- गीता में भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है– **'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकंशरणं ब्रज'** भक्ति के तीन मार्ग होते हैं–**मर्यादामार्ग,**

8 रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल)

❖ **रीतिकाल का नामकरणः–** आचार्य शुक्ल ने मध्यकाल को दो काल खंडों में विभाजित किया है। **प्रथम काल– भक्तिकाल** (पूर्वमध्यकाल) और **द्वितीय काल– रीतिकाल** (उत्तरमध्यकाल)। शुक्ल ने संवत् **1700 वि. से 1900 वि.** के काल खंड को रीतिकाल नाम दिया है। **रीतिकाल के लिए विद्वानों ने अनेक नाम सुझाए हैं जो निम्नलिखित** हैंः–

1. अलंकृत काल

❖ **मिश्रबंधुओं** ने इस काल को **अलंकृत काल नाम दिया** है। इनका तर्क है कि इस काल में **कविता को अलंकृत करने पर अधिक बल दिया गया** है इसलिए इसका नाम अलंकृत काल होना ज्यादा उचित एवं सार्थक है।

(राजस्थान पात्रता (सेट) परीक्षा– 26 मार्च, 2023)

✍ **लेकिन इस काल में लक्षण ग्रंथों की रचना प्रचुर मात्रा में हुई है, अलंकृत काल कहने से इस प्रवृति का बोध नहीं हो पाता है अतः यह नाम समीचीन या उचित नहीं है।**

2. शृंगार काल

❖ रीतिकाल को शृंगार काल नाम **विश्वनाथ प्रसाद मिश्र** ने दिया है। मिश्र जी का तर्क है कि इस काल के कवियों की **व्यापक प्रवृति शृंगार वर्णन की थी।** लेकिन शृंगारी कवियों ने भी काव्यांग निरूपण की रुचि दिखाई है अर्थात् **काव्यांग निरूपण किया है।** अतः इस काल को **शृंगार काल कहने से रीतिकाल की सम्पूर्ण कविता का बोध नहीं हो पाता है।** काव्यांग चर्चा इस काल की एक सामान्य प्रवृति थी।

(वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा– 22 दिसम्बर, 2022)
(व्याख्याता हिन्दी परीक्षा– 15 नवंबर, 2022)
(सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 23 सितंबर, 2021)

✍ इस काल में **कवि लक्षण ग्रंथों का निर्माण दूसरों को काव्य रचना पद्धति का ज्ञान कराने के उद्देश्य से करते थे।** ये **कवि शिक्षक या आचार्य की भूमिका का निर्वाह करने में गौरव का अनुभव** करते थे। **अतः यह नाम उचित और सार्थक नहीं लगता है।**

3. रीतिकाल

❖ इस काल को रीतिकाल नाम **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने दिया है। यह नाम इस काल खंड के लिए सबसे उचित सार्थक और प्रचलित भी है। रीति काल में **'रीति'** शब्द का प्रयोग **'काव्यांग निरूपण'** के अर्थ में हुआ है। ऐसे ग्रंथ जिनमें काव्यांगों के लक्षण एवं उदाहरण दिए जाते हैं, **'रीति ग्रंथ'** कहलाते हैं। रीतिकाल के अधिकांश कवियों ने रीति निरूपण करते हुए लक्षण ग्रंथ लिखे हैं, अतः इस काल की प्रधान प्रवृति **'रीति निरूपण' है।**

✍ **आचार्य शुक्ल** ने कालों के नामकरण **'प्रधान प्रवृति'** के आधार पर किए हैं **रीति का अर्थ– काव्यशास्त्रीय–नियमाधारित विशिष्ट रचना–पद्धति है। रीति से शुक्ल जी का तात्पर्य 'पद्धति, शैली एवं काव्यांग निरूपण' से है।**

रीतिकाल का प्रारंभ और समाप्ति

❖ रीतिकाल का प्रारंभ **'रस विलास'** (चिंतामणि) और **'रसराज'** (मतिराम) से माना जाता है इन कृतियों की रचना **1633 ई.** में की गई है। **रीतिकाल के अंतिम कवि 'ग्वाल' माने जाते हैं** जिसकी कृति **'रसरंग' (1853 ई.) है।**

✍ लेकिन यह भी सत्य है कि किसी काल का प्रारंभ एक निश्चित तिथि या समय से मानकर एक निश्चित तिथि या समय पर उसे समाप्त मान लेना **पूर्णतः उचित** एवं तर्कसंगत नहीं है।

❖ **रीतिकाल का प्रवर्तक कवि कौन है? इस संबंध में तीन मत प्रचलित हैं जो निम्न प्रकार हैंः–**

क्रं सं.	रीतिकाल का प्रवर्तक कवि	रचनाकाल	मत
1.	कृपाराम	1541	–
2.	केशवदास	1555–1617	नगेंद्र सिंह
3.	चिंतामणि त्रिपाठी	1643	आचार्य शुक्ल

❖ **रीति को आधार मानकर रीतिकाल का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया हैः–**

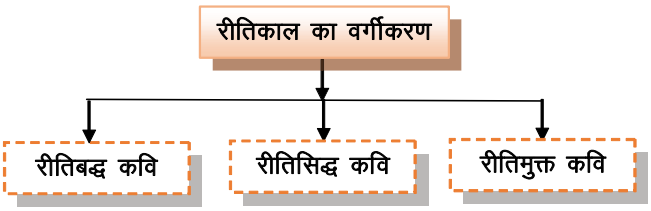

1. रीतिबद्ध कवि

❖ इस वर्ग में रीतिकाल के वे कवि शामिल हैं जिन्होंने **'रीति' के बंधन में बंधकर रीति ग्रंथों की रचना की।** रीतिबद्ध काव्य का तात्पर्य लक्षण ग्रंथ से है अर्थात् काव्यांगों का लक्षण देकर उनके उदाहरण सवरुप **रचित काव्य रीतिबद्ध** काव्य है।

4. भूषण (1613–1715)

❖ रीतिबद्ध काव्यधारा एवं **वीर रस के प्रसिद्ध** कवि भूषण **छत्रपति शिवाजी** और पन्ना के **राजा छत्रसाल बुंदेला** के आश्रय में रहे।

- चित्रकूट के राजा **रुद्रसाह सोलंकी** ने इनको **'कवि भूषण'** की उपाधि दी थी और वे इस नाम से इतने प्रसिद्ध हुए कि इनका वास्तविक नाम ही किसी को नहीं पता। इनकी **पालकी में स्वयं महाराजा छत्रसाल ने कंधा** लगाया था।
- जिस पर इन्होंने कहा था–**'सिवा को बखानौ कि बखानौ छत्रसाल को।'**

✍ भूषण विरचित **शिवराज भूषण, शिवा बावनी और छत्रसाल दशक**। इनके **यहीं तीन ग्रंथ मिलते** हैं, इनके अलावा तीन ग्रंथ– **भूषण उल्लास, दूषण उल्लास और भूषण हजारा** भूषण के माने जाते हैं पर ये ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं।

- भूषण ने जिन **दो नायकों को अपने वीरकाव्य का विषय बनाया** वे अन्याय दमन में तत्पर, हिन्दू धर्म के संरक्षक, दो इतिहास प्रसिद्ध वीर महाराज **शिवाजी एवं छत्रसाल बुंदेला** थे। अतः उनके द्वारा **वर्णित प्रशस्तियाँ रीतिकाल के अन्य कवियों जैसी झूठी खुशामद नहीं थी**, अपितु भूषण के उद्‌गार सारी जनता की संपत्ति बन गए ।

✍ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** के अनुसार–**''इन दो वीरों का जिस उत्साह के साथ सारी हिन्दू जनता स्मरण करती है, उसी की व्यंजना भूषण ने की है। वे हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं।''**

- भूषण ने **'शिवराज भूषण'** और **'शिवा बवानी'** की रचना **महाराज छत्रपति शिवाजी के आश्रय** में रहकर की।

✍ इनमें से **'शिवराज भूषण' अलंकार ग्रंथ** है जिसमें **105 अलंकारों के लक्षण** और उदाहरण **'जयदेव'** रचित **'चंद्रालोक'** के आधार पर दिए गए हैं तथा अलंकारों के **लक्षण दोहों** में तथा **उदाहरण कवित्त और सवैया छंद** में हैं।

- **'शिवा बावनी'** शिवाजी की **प्रशंसा में रचित** और **'छत्रसाल दशक'** छत्रसाल **बुंदेला की वीरता एवं प्रशंसा** में रचित 10 पदों की रचना है।
- **भूषण की ख्याति एक आचार्य के रूप में उतनी नहीं है जितनी वीर रस के कवि के रूप में है।** युगधर्म के अनुरूप उन्होंने **अलंकार विषयक ग्रंथ अवश्य** लिखा तथापि **मूलतः वे ओजस्वी कवि ही हैं।** उनकी भाषा ओजपूर्ण तो है लेकिन वह अव्यवस्थित है। उनकी कविता में **राष्ट्रीयता विद्यमान** है। भूषण भारतीय संस्कृति के रक्षकों की प्रशंसा में **छंद लिखने** वाले कवि के रूप में **जनता में प्रसिद्ध** हैं।

✍ **स्मरणीय तथ्यः– भूषण, मतिराम और चिंतामणि त्रिपाठी (तीनों) भाई थे।**

भूषण के संबंध में प्रमुख कथन

➢ **आचार्य शुक्ल–** जिसकी रचना को जनता का हृदय स्वीकार करेगा उस कवि की कीर्ति तब तक बराबर बनी रहेगी, जब तक स्वीकृति बनी रहेगी।

➢ **आचार्य शुक्ल–** उनके प्रति भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा हिन्दू जनता के हृदय में उस समय भी थी और आगे भी बराबर बनी रही या बढ़ती गई।

➢ **आचार्य शुक्ल–** भूषण हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं।

➢ **आचार्य शुक्ल– ''शिवाजी और छत्रसाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता।''**

(व्याख्याता हिन्दी, संस्कृत वि– 15 नवंबर, 2022)

➢ **आचार्य शुक्ल–**भूषण की भाषा में ओज की मात्राा तो पूरी है पर वह अव्यवस्थित है। व्याकरण का उल्लंघन प्रायः है, वाक्य रचना भी गड़बड़ है।

भूषण की कविता के उदाहरण–

✍ ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहन बारी,
ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

✍ दारा की न दौर यह रार नहिं खजुए की,
बांधिबो नहीं है कैंधो मीर सहबाल को।

(व्याख्याता भर्ती परीक्षा– 15 अक्टूबर, 2022)

✍ तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं।

5. कुलपति मिश्र (1630–700)

❖ आचार्य शुक्ल के अनुसार–आगरा निवासी माथुर चौबे कुलपति मिश्र **महाकवि बिहारी के भांजे** थे और इनका रचना काल 1667 से 1686 ई. तक था। यह **जयपुर महाराजा रामसिंह** के आश्रय में रहे।

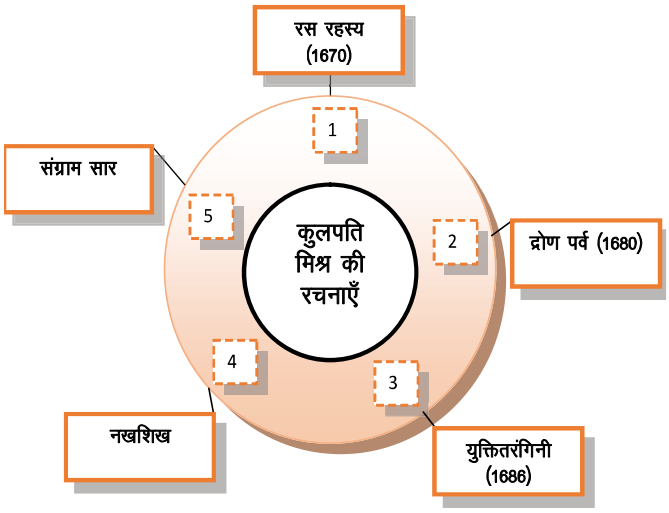

क्र. सं.	कवि का नाम	कृतियाँ / रचनाएं
35	सुखदेवमिश्र	रस रत्नाकर, रसार्णव, वृत्तविचार, अध्यात्म प्रकाश
36	कालिदास त्रिवेदी	वर वधू विनोद, कालिदास हजारा
37	पजनेस	नख शिख, मधुरप्रिया, प्रजनेश प्रकाश
38	दीनदयालगिरि	अन्योक्ति कल्पद्रुम
39	वृन्द	वृन्द सतसई, भाव पंचाशिका, बारहमासा, नयनपचीसी, पवनपचीसी, यमक सतसई

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. भिखारीदास के कृतित्व के बारे में असंगत कथन है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) दास का नायक– नायिका भेद मूलतः भानुदत की रसमंजरी पर आधारित है।
(ब) 'काव्य निर्णय' में दास ने कुछ मौलिक उद्‌भावनाओं को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।
(स) 'काव्य निर्णय' ग्रंथ का अधिकतर भाग रस विवेचन को समर्पित है।
(द) 'काव्य निर्णय' ग्रंथ के निर्माण में दास ने मम्मट, विश्वनाथ, अप्पय दीक्षित और जयदेव के ग्रंथो से सहायता ली है। (स)

2. इनमें से सेनापति का लिखा ग्रंथ कौनसा है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) भागवत रत्नाकर (ब) कवित रत्नाकर
(स) ग्रीष्म विलास (द) फाग पचीसी (ब)

3. काव्य के सभी अंगों का एक साथ विवेचन करने वाले आचार्यो ने मुख्यतः निम्न में से किन ग्रन्थों का आश्रय ग्रहण किया?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) काव्यप्रकाश और चंद्रालोक
(ब) चंद्रालोक और कुवलयानंद
(स) कुवलयानंद और साहित्यदर्पण
(द) साहित्यदर्पण और काव्यप्रकाश (द)

4. 'रीतिमुक्त काव्यधारा' का कवि नहीं है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) बोधा (ब) ग्वाल
(स) ठाकुर (द) द्विजदेव (ब)

5. इनमें से पद्‌माकर की रचना नहीं है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) हिम्मत बहादुर विरुदावली (ब) जगद् विनोद
(स) नीति शतक (द) पद्‌माभरण (स)

6. रीतिकालीन साहित्य एंव कलाओं के बारे में असंगत कथन है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) रचनाकारों को अपने आश्रयदाताओं की अभिरुचियों का विशेष ध्यान रखना पड़ता था।
(ब) इस समय की ब्रजभाषा फारसी के प्रभाव से पूर्णतः बची हुई थी।
(स) इस समय के कवि चमत्कार के उपकरणों के लिए फारसी की ओर उन्मुख न होकर संस्कृत की ओर उन्मुख हुए।
(द) साहित्य और कला की दृष्टि से यह युग पर्याप्त समृद्ध कहा जा सकता है। (ब)

7. जसवन्त सिंह की 'भाषा–भूषण' कृति निम्न में से किस विषय से संबंधित है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) अलंकार संबंधी (ब) रीति संबंधी
(स) रस संबंधी (द) ध्वनि संबंधी
(य) अनुत्तरित प्रश्न (अ)

8. "रीतिकाल की कविता इनकी और प्रतापसाहि की वाणी द्वारा अपने पूर्ण उत्कर्ष को पहुंचकर फिर ह्रासोन्मुख हुई।" शुक्ल जी ने 'इनकी' से किस कवि की ओर संकेत किया है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) पद्‌माकर (ब) सोमनाथ
(स) दूलह (द) जगन्नाथ 'रत्नाकर' (अ)

9. "इसमें सन्देह नहीं कि काव्य रीति का सम्यक् समावेश पहले पहल आचार्य केशव ने ही किया पर हिंदी में रीतिग्रन्थों की अविरल और अखण्डित परम्परा का प्रवाह केशव की 'कवि प्रिया' के प्रायः पचास वर्ष पीछे चला और वह भी एक भिन्न आदर्श को लेकर, केशव के आदर्श को लेकर नहीं।" रीतिकाल के आरंभ के विषय में यह टिप्पणी किस आलोचक कि है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (ब) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(स) हजारीप्रसाद द्विवेदी (द) नंददुलारे वाजपेयी (ब)

9 आधुनिक कालः पुनर्जागरण या भारतेंदु युग (1850–1900)

आधुनिक काल का नामकरण

- **गद्य साहित्य की प्रमुखता** के कारण आचार्य 'रामचन्द्र शुक्ल' ने हिन्दी साहित्य के **चतुर्थ काल खंड** को 'गद्यकाल' नाम दिया है और इसका समय **संवत् 1900 वि. से 1980 वि.** अर्थात् **1843 ई. से 1923** ई. स्वीकार किया है। आधुनिक काल के लिए विद्वानों ने **निम्न नाम दिए हैं:–**
  (1) **गद्य काल** – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
  (2) **वर्तमान काल** – मिश्रबंधु
  (3) **आधुनिक काल** – रामकुमार वर्मा, डॉ. गणपति चंद्र गुप्त
- इस काल में गद्य की प्रधानता के कारण शुक्ल ने इसे 'गद्यकाल' नाम दिया है। लेकिन गद्यकाल कहने से इस काल का प्रचुर मात्रा में लिखा गया पद्य साहित्य **उपेक्षित हो जाता है**, अतः इस काल को **आधुनिक काल कहना अधिक उपयुक्त** है। इस नामकरण में **गद्य और पद्य दोनों प्रवृतियों** का समावेश हो जाता है और साथ ही यह नाम यह भी स्पष्ट करता है इस काल की प्रवृतियाँ पुरानी परंपरा से हटकर नवीन एवं आधुनिक हो गई। **आधुनिक युगबोध ने साहित्य को दरबारी परिवेश से निकालकर जनजीवन के निकट ला दिया।** गद्य की अनेक विद्याओं का विकास आधुनिक काल में हुआ है। आधुनिक काल का प्रारम्भ कब हुआ? इस संबंध में विद्वानों के मत निम्न हैं:–

आधुनिक काल के प्रारंभ से संबंधित विद्वानों के विभिन्न मत

क्रं. सं.	आधुनिक काल का प्रारंभ	विद्वानों के मत
1.	सम्वत् 1926 वि. से	मिश्रबंधु
2.	संवत् 1900 वि.(1843 ई.) से	आचार्य शुक्ल
3.	1837 ई. से	डॉ. कृष्णलाल
4.	छापेखाने की शुरुआत से	हजारी प्रसाद द्विवेदी
5.	1857 ई. से	डॉ. बच्चन सिंह
6.	1868 ई. से (भारतेन्दु के लेखन से)	डॉ. नगेंद्र सिंह
7.	1850 ई.के बाद से	सर्वमान्य मत

हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास

❖ हिन्दी गद्य का **सर्वप्रथम विकास ब्रज भाषा गद्य के रूप में हुआ। आचार्य शुक्ल** के अनुसार बल्लभाचार्य के पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ ने 'श्रृंगार रस मंडन' नामक कृति ब्रज भाषा गद्य में लिखी, जिसकी **भाषा अपरिमार्जित और अव्यवस्थित है** ।

- इनके उपरांत 'वार्ता साहित्य' की रचना ब्रज गद्य में हुई। जिसमें **'चौरासी वैष्णवन की वार्ता'** (बल्लभाचार्य के शिष्यों का जीवनवृत्त) और **'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता'** (विट्ठलनाथ के शिष्यों का जीवनवृत्त) प्रमुख हैं। इन दोनों वार्ता ग्रंथों के **रचयिता बल्लभाचार्य** के पोत्र **(विट्ठलनाथ के पुत्र)** गोसाई गोकुलनाथ हैं। **बल्लभ संप्रदाय** का वार्ता साहित्य **गोसाई विट्ठलनाथ और गोकुलनाथ के वचनमृत पर आधारित है** जिसे **लिपिबद्ध करने का कार्य श्रीकृष्ण भट्ट, कल्याणभट्ट, और हरिराय ने किया हरिराय** ने कथात्मक और तथ्य निरूपण दोनों प्रकार का गद्य लिखा। इनकी गणना ब्रज भाषा गद्यकारों में सबसे ऊपर होती है।

ब्रज भाषा गद्य की प्रमुख रचनाएँ

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार	रचनाकाल
1.	श्रृंगार रस मंडन	गोसाई विट्ठलनाथ	16 वीं शती
2.	चौरासी वैष्णवन की वार्ता	गोसाई गोकुलनाथ	17 वीं शती उत्तरार्द्ध
3.	दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता	गोसाई गोकुलनाथ	–
4.	अष्टयाम	नाभादास	1603
5.	अगहन माहात्म्य	बैकुंठमणि शुक्ल	1623
6.	वैशाख माहात्म्य	बैकुंठमणि शुक्ल	1623
7.	नासिकेतोपाख्यान	लेखक अज्ञात	1703
8.	वैताल पचीसी	सुरति मिश्र	1710
9.	आइने अकबरी की भाषा वचनिका	लाला हीरालाल	1795

खड़ी बोली गद्य की प्रारम्भिक कृतियाँ

❖ आचार्य शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में **खड़ी बोली** गद्य की जिन महत्त्वपूर्ण कृतियों का उल्लेख किया है, उनका क्रमबद्ध विवरण निम्न प्रकार से है–

क्र.	रचना	रचनाकाल/रचनाकार
1.	चंद छंद बरनन की महिमा	(1570) गंग कवि, अकबर के दरबारी
2.	भाषा योगवाशिष्ठ	(1741) रामप्रसाद निरंजनी शुक्ल ने इनको प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक माना है यह पटियाला दरबार के थे, इस रचना का गद्य शुक्ल के अनुसार सर्वाधिक परिमार्जित है।
3.	जैनपद्मपुराण का भाषा अनुवाद	(1761) पंडित दौलतराम
4.	मंडोवर का वर्णन	(1773– 1783) राजस्थान का अज्ञात लेखक

और अंग्रेजों के कृपा पात्र भी थे। इन्होंने **सर सैयद अहमद खान** का बराबर विरोध किया और हिन्दी की रक्षा का महान कार्य किया। **फ्रांसीसी विद्वान गार्सा–द–तासी ने उर्दू का समर्थन किया और हिन्दी–उर्दू के झगड़े को हवा दी।**

✍ **आचार्य शुक्ल के अनुसार–** 'अदालती भाषा उर्दू होते हुए भी शिक्षा विधान में देश की असली भाषा हिन्दी को स्थान देना पड़ा।'' सितारेहिन्द ने काशी से **'बनारस' अखबार' (1845)** निकाला, जिसकी भाषा में **उर्दू का पुट** था। शिक्षा विभाग में मुसलमानों का दल अधिक शक्तिशाली था, अतः **सितारेहिन्द ने मध्यवर्ती मार्ग का अनुसार करते हुए आम रूप से** चलती हुई भाषा का समर्थन किया **जिसमें उर्दू के चलते हुए शब्दों का प्रयोग होता था।** सितारेहिन्द ने **बड़ी चतुराई से हिन्दी** की रक्षा की अन्यथा **मुसलमान नेता** हिन्दी को स्कूली **शिक्षा से बाहर** कर देने के लिए **अंग्रेजों पर दबाव** बनाए हुए थे।

- सितारेहिन्द की प्रारम्भिक पुस्तकों **'राजा भोज का सपना', 'इतिहास तिमिरनाशक'** में **सरल हिन्दी** और **'मानव धर्म सार'** में **संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा** का प्रयोग किया है, लेकिन बाद की रचनाओं **आलसियों का कोड़ा, उपनिषद सार और भूगोल हस्तामलक में उर्दू मिश्रित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है।** राजा साहब स्वयं तो पुस्तकें तैयार करने में लग ही गये, **पंडित श्रीलाल और पंडित बंशीधर** आदि अपने कई मित्रों को भी इस काम में लगाया। पं. बंशीधर ने पुष्पवाटिका, भारतवर्षीय इतिहास, जीविका परिपाटी, जगत् वृत्तांत, **'हितोपदेश'** (1862) का अनुवाद आदि पुस्तकें लिखी।

2. राजा लक्ष्मण सिंह

❖ यह **आगरा के निवासी** थे। इन्होंने आगरा से **'प्रजा हितैषी' (1861) पत्र निकाला।** 1862 में **'अभिज्ञान शाकुंतल'** का अनुवाद सरस एवं विशुद्ध हिन्दी में प्रकाशित किया।

- इन्होंने **संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का प्रबल समर्थन किया।** इन्होंने अपनी

✍ भाषा नीति को स्पष्ट करते हुए कहा कि **'हमारे मत में हिन्दी और उर्दू दोनों बोली न्यारी–न्यारी हैं।'** शकुंतला नाटक की भाषा देखकर अंग्रेज विद्वान **'फ्रेडरिक पिन्काट'** बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने इस नाटक का परिचयात्मक विवरण देते हुए बहुत सुंदर लेख लिखा। **फ्रेडरिक हिन्दी–उर्दू के ज्ञाता थे और वे भारत का हित हृदय से चाहते थे। पिन्काट इंग्लैंड** के अखबारों में हिन्दी लेखकों और ग्रंथों का परिचय बराबर देते रहते थे।

- **आचार्य शुक्ल** के अनुसार– **"उस समय के हिन्दी लेखकों के घर में पिन्काट साहब के दो चार पत्र अवश्य मिलेंगे''।** पिन्काट भारत में भी आए और लखनऊ में उनका देहांत हुआ। हिन्दी के रक्षकों में पंजाब के **बाबू नवीनचंद्र राय** भी थे। उर्दू के समर्थकों से उन्होंने लगातार संघर्ष किया। इन्होंने 1863 और 1880 के बीच भिन्न–भिन्न विषयों बहुत सी **हिंदी पुस्तकें** तैयार कीं और दूसरों से तैयार करवाई। बाबू नवीनचंद्र राय ने मार्च 1867 में **'ज्ञानप्रदायिनी प्रत्रिका'** निकाली, जिसमें **शिक्षा** और **साधारण ज्ञान विज्ञान** संबंधी लेख होते थे।

✍ भारतेन्दु से पूर्व हिन्दी गद्य की **दो शैलिया प्रचलित** थी एक का **प्रतिनिधित्व सितारेहिन्द** कर रहे थे, जिसमें **उर्दू फारसी के शब्दों से युक्त खिचड़ी हिन्दी भाषा** और दूसरी शैली **संस्कृत शब्दों से युक्त विशुद्ध हिन्दी** थी, जिसका **प्रतिनिधित्व राजा लक्ष्मण** सिंह की भाषा कर रह रही थी। भारतेन्दु ने अपनी भाषा के लिए मध्यम मार्ग को अपनाया।

❖ आधुनिक काल को कई उपविभागों वे विभक्त किया गया है। **डॉ. नगेंद्र सिंह के अनुसार निम्न उपविभाग हैं:–**

आधुनिक काल (काव्य) के उपविभाग

पुनर्जागरण काल या भारतेन्दु युग (1857 ई. से 1900 ई.)	जागरण सुधार काल या द्विवेदी युग (1900 ई. से 1918 ई.)	छायावादी युग (1918 ई. से 1936 ई.)	छायावादोत्तर युग (अ) प्रगति–प्रयोग काल (1936 ई. से 1953 ई.) (ब) नवलेखन काल (1953 ई. से लगातार

पुनर्जागरण या भारतेन्दु युग (1850–1900)

❖ **भारतेन्दु (1850–1885)** सही **अर्थों में हिन्दी गद्य के जनक कहे जा सकते हैं।** भारतेन्दु जी ने भाषा संस्कार करते हुए भाषा को उर्दू फारसी शब्दों से मुक्त किया यथासंभव अपने पूर्ववर्ती दोषों से अपनी भाषा को मुक्त रखा। **भारतेन्दु ने न केवल गद्य की भाषा का संस्कार किया बल्कि पद्य की भाषा ब्रजभाषा को भी सुसंस्कृत किया। इनका सबसे बाद योगदान यह ही कि इन्होंने हिन्दी साहित्य को नवीन मार्ग दिखलाया।** सर्वप्रथम भारतेन्दु की रचनाओं में देश हित एवं समाज हित की भावना का समावेश हुआ। उनके महिमामय व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर **आधुनिक काल के प्रथम युग** को **'भारतेन्दु युग'** नाम दिया गया।

10 जागरण–सुधार काल (द्विवेदी युग) (1900 से 1918)

❖ हिन्दी साहित्य इतिहास में **1900 ई. से 1918 ई.** तक का काल **द्विवेदी–युग** के नाम से जाना जाता है। **डॉ नगेंद्र सिंह** ने इस युग को **जागरण एवं सुधार की दृष्टि से 'जागरण–सुधार' काल कहा है।**

● **भारतीय जनमानस में स्वदेशानुराग एवं नवजागरण के जो बीज भारतेन्दु युग में अंकुरित हुए, वे द्विवेदी युग में पूर्ण पल्लवित होकर सामने** आए। **भारतेन्दु युग आधुनिक काल का प्रवेश द्वार है और द्विवेदी युग उसका विस्तृत प्रांगण जहाँ उन प्रवृत्तियों को विकसित एवं पल्लवित होने का अवसर प्राप्त हुआ जो भारतेन्दु युग में प्रारंभ हुई थी।**

✍ **19 वीं शती** का **अंत होते–होते भारतेन्दु** कालीन **समस्या पूर्ति एवं नीरस तुकबंदियों से सहृदय विमुख** होने लगे तथा लंबे समय से **काव्य भाषा के रूप में प्रचलित ब्रजभाषा का आकर्षण भी अब लुप्त** होने लगा और उसका **स्थान खड़ी बोली हिन्दी** ने ले लिया।

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग

❖ आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के महिमामण्डित व्यक्तित्व को केंद्र में रखकर इस युग का नामकरण **'द्विवेदी युग'** किया गया है। द्विवेदी जी ने **'सरस्वती'** पत्रिका के संपादक के रूप में हिन्दी जगत की महान सेवा का कार्य किया और **हिन्दी साहित्य की दिशा एवं दशा को बदलने** में अभूतपूर्व योगदान किया।।

✍ **'चिंतामणि घोष'** ने **1900 में सरस्वती पत्रिका की शुरूआत** की और **महावीर प्रसाद द्विवेदी 1903 ई. में सरस्वती पत्रिका के संपादक बने।** उन्होंने इस पत्रिका (1903–1920) के माध्यम से कवियों को नायिका भेद जैसे विषय छोड़कर विविध विषयों पर कविता लिखने की प्रेरणा दी और **काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा को त्यागकर खड़ी बोली हिन्दी में काव्य रचना करने का सुझाव भी दिया** जिसमें **गद्य और पद्य की भाषा** एक **(खड़ी बोली हिन्दी)** हो सके। उन्होने **'कवि कर्तव्य'** जैसे निबन्धों द्वारा कवियों को उनके कर्तव्यों का बोध कराया तथा अनेक दिशा निर्देश दिए जिससे **विषय वस्तु, भाषा शैली, छंद योजना** आदि अनेक दृष्टियों से काव्य में नवीनता का समावेश हुआ।

● **द्विवेदी ने भाषा संस्कार, व्याकरण शुद्धि, विराम चिह्नों के प्रयोग द्वारा हिन्दी को परिनिष्ठित करने का अतुलनीय कार्य किया।** उनका योगदान एक सर्जक के रूप में उतना नहीं है जितना **एक विचारक, दिशा निर्देशक, चिंतक और नियामक** के रूप में है। द्विवेदी जी की प्रेरणा से अनेक कवि सामने आए और उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाया इन कवियों ने एक ओर तो **नवीन काव्यधारा का श्रीगणेश करते हुए भारतेन्दुयुगीन समस्या पूर्ति, रीति निरूपण, से हिन्दी कविता को मुक्त किया** तो दूसरी और खड़ी बोली हिन्दी को **काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का अभूतपूर्व कार्य किया।**

✍ **भाषा परिष्कार एवं संस्कार का जो कार्य द्विवेदी युग में हुआ वह सदैव स्मरणीय रहेगा।**

● आधुनिक काल हिन्दी साहित्य के इतिहास में जागरण का संदेश लेकर आया। **1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम** ने नवजागरण का बिगुल बजा दिया और भारतीय जनमानस में **देशभक्ति, स्वतंत्रता, राष्ट्रोंत्थान, स्वदेशाभिमान की भावनाएं जागृत** होने लगी। भारतेन्दु युग में जहाँ इनका सूत्रपात हुआ, वहीं द्विवेदी युग में पल्लवित एवं विकसित हो गई।

✍ **डॉ. रामविलास शर्मा** ने इसीलिए **'हिन्दी नवजागरण को हिन्दू जाति का जागरण माना है।'** इस नवजागरण की लहर को जन–जन तक पहुचाने में **'सरस्वती'** पत्रिका का विशेष योगदान है।

● बहुत सारे कवि जो ब्रजभाषा में कविता लिख रहे थे **द्विवेदी जी की प्रेरणा** से खड़ी बोली हिन्दी में कविता लिखने लगे, इनमें **अयोध्या सिंह उपाध्याय, श्रीधर पाठक, नाथूराम शर्मा 'शंकर', राय देवीप्रसाद 'पूर्ण** आदि प्रमुख थे। **सरस्वती पत्रिका** का प्रकाशन **1900 ई.** में प्रारंभ हुआ तथा 1903 ई. में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसका सम्पादन भार संभाला।

✍ **खड़ी बोली को परिमार्जित करने, संस्कारित करने तथा व्याकरणिक शुद्धता प्रदान** करने में **'सरस्वती' पत्रिका** का अविस्मरणीय योगदान है। द्विवेदी युग में केवल भाषा के क्षेत्र में ही परिवर्तन नहीं हुआ अपितु छंदों के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ।

● इस युग में **परंपरागत छंद प्रयोग के साथ ही संस्कृत के वर्णवृत्तों का प्रयोग भी कवियों ने प्रचुरता** से किया महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनकी **सरस्वती पत्रिका** ने कवियों की एक नई पौध तैयार की। द्विवेदी जी के एक निबंध से प्रेरित होकर मैथिलीशरण गुप्त ने **चिर उपेक्षिता उर्मिला को महत्त्व** देने के लिए **'साकेत'** नामक महाकाव्य की रचना की। **'गुप्त जी'** ने महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा को निम्न पंक्तियों में स्वीकार करते हुए उनके **प्रति सम्मान** और **कृतज्ञता व्यक्त** की है–

✍ करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद ?
महावीर का यदि नहीं मिलता उन्हें प्रसाद।**(मैथिलीशरण गुप्त)**

✍ ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।
(आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी)
(व्याख्याता भर्ती परीक्षा– 15 अक्टूबर, 2022)

● वस्तुतः द्विवेदी युग की पत्रिका **'सरस्वती'** ने भाषा और साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में परिष्कार किया। इसके माध्यम से ज्ञान का **प्रचार–प्रसार** हुआ।

✍ बहुत से नए लेखक और कवि प्रकाश में आए, भाषा संस्कार हुआ, **समाज सुधार,** देशभक्ति, देशप्रेम, **चरित्र निर्माण की भावनाएं** विकसित हुई। देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की चेतना विकसित करने में भी इस पत्रिका का **विशिष्ट योगदान** है।

11 छायावाद या छायावादी युग (1918–1936)

❖ छायावाद का विकास द्विवेदीयुगीन कविता की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। **द्विवेदीयुगीन कविता विषयनिष्ठ, वर्णन प्रधान और स्थूल थी, जबकि छायावादी कविता व्यक्तिनिष्ठ, कल्पना प्रधान एवं सूक्ष्म है। रीतिकालीन, शृंगारिकता और द्विवेदी युगीन काव्य की इतिवृत्तात्मकता, नैतिकता और आदर्शवाद के विरुद्ध छायावाद का उदय हुआ।**

- **छायावाद** के कवियों पर अंग्रेजी और बंगला भाषा के **स्वच्छंदतावादी काव्य** के प्रभाव के साथ–साथ सांस्कृतिक चेतना भी छायावाद के उदय की पृष्ठभूमि में थी। वैयक्तिकता, नवीन सौन्दर्य–बोध, **स्वच्छंद कल्पना, जिज्ञासा का भाव,** वेदना की अभिव्यक्ति, रहस्यात्मकता, राष्ट्रीयता आदि छायावादी काव्य के भाव पक्ष की प्रमुख विशेषताएँ हैं। छंद के क्षेत्र में **'मानवीकरण'** और **विशेषण–विपर्यय** अलंकारों का प्रयोग तथा **चित्रात्मकता, लाक्षणिकता, संगीतात्मकता, बिम्बात्मक एवं कोमलकान्त पदावली** का प्रयोग छायावादी काव्य के कला पक्ष की प्रमुख विशेषताएँ हैं। छायावादी काव्य की **समय सीमा 1918 से 1936 ई.** मानी जाती है।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने **छायावाद** का प्रारंभ **1918 ई.** से माना है, क्योंकि छायावाद के प्रमुख कवियों जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी **'निराला'** ने अपनी रचनाएँ लगभग इसी समय के आसपास लिखनी शुरू की थी। **निराला** की कविता **'जूही की कली' 1916** में, जयशंकर प्रसाद की कृति **'झरना' 1918** में प्रकाशित हुई। **सुमित्रानंदन 'पंत'** की कृति 'पल्लव' की कुछ कविताएँ भी **1918 में प्रकाशित** हुई। जयशंकर प्रसाद की कृति **'कामायनी' 1935** में प्रकाशित हुई और **'प्रगतिशील लेखक संघ'** की स्थापना **1936** ई. में हुई। इसी आधार पर कहा जा सकता है की **छायावाद का समय 1918 से 1936 ई. मानना उचित है।**

❖ **छायावाद का अर्थः– प्रारंभ में छायावाद का प्रयोग व्यंग्य** रूप में उन कविताओं के लिए किया गया जो अस्पष्ट थी, जिनकी **छाया (अर्थ) कहीं और पड़ती थी**, किन्तु कालांतर में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया जिनमें मानव और प्रकृति के **सूक्ष्म सौन्दर्य** में आध्यात्मिक **छाया का भान** होता था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी।

छायावाद की परिभाषा

❖ **छायावादी काव्य के अर्थ और परिभाषा के संबंध में कुछ विद्वानों के कथन निम्नलिखित हैंः–**

- **जयशंकर प्रसादः–** ''जब वेदना के आधार पर स्वानुभुतिमयी अभियक्ति होने लगे तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया **ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान** तथा विचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएँ हैं।''
- **डॉ. रामकुमार वर्मा–** ''परमात्मा की **छाया आत्मा में,** आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।''
- **महादेवी वर्माः–** **''छायावाद तत्वतः** प्रकृति के बीच जीवन का उद्‌गीथ है। ..... उसका **मूल दर्शन सर्वात्मवाद** है।''
- **डॉ. नगेंद्र सिंहः– ''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।''**
- **आचार्य शुक्लः–** छायावाद को **अभिव्यंजना का विलायती संस्करण कहा है।**
- **आचार्य शुक्लः–**''छायावाद शब्द का प्रयोग **दो अर्थों में समझना** चाहिए–एक तो रहस्यवाद के अर्थ में और दूसरा **काव्य शैली या पद्धति** विशेष के व्यापक अर्थ में।''
- **डॉ. रामविलास शर्माः–** ''छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं रहा, वरन् **थोथी नैतिकता, रूढ़िवाद और सामंती साम्राज्यवादी बंधनों** के प्रति विद्रोह रहा है।''
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल छायावाद के प्रबल निंदक थे। उन्होंने छायावाद को **अभिव्यंजना का विलायती संस्करण कहा है।** शुक्ल ने छायावाद को **शृंगारी कविता की संज्ञा दी** है। साथ ही, छायावाद को **'मधुचर्या'** कहा। उन्होंने **छायावाद को रहस्यवाद और प्रतिबिंबवाद** कहा। शुक्ल जी **छायावाद का प्रतिनिधि कवि 'सुमित्रानंदन पंत'** को मानते हैं। आचार्य शुक्ल की दृष्टि में छायावाद **चित्रभाषा शैली** है। ये छायावाद का उदय द्विवेदी काल की **रूखी इवृित्तात्मक प्रतिक्रिया** के रूप में मानतें हैं। छायावाद की प्रवृत्ति अधिकतर प्रेमगीतात्कम मानते हुए आयार्च शुक्ल का मत है कि **''लाक्षणिक और वर्यंजनात्कम पद्धति का प्रगल्भ और प्रचुर विकास छायावाद की काव्य शैली की असली विशेषता हैं''**
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी–**''छायावाद के मूल में पाश्चात्य रहस्यवादी भावना अवश्य थी। इस श्रेणी की **मूल प्रेरणा अंग्रेजी** की **रोमांटिक भाव** धारा की कविता से प्राप्त हुई थी और इसमें संदेह नहीं कि उक्त भावधारा की पृष्ठभूमि में **ईसाई संतों** की रहस्यवादी साधना अवश्य थी।''

✦ संक्षेप में कह सकते हैं कि जिस **काव्य में प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक सूक्ष्म अभिव्यंजना लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में होती है, उसे छायावाद कहा जाता है।**

छायावाद के प्रमुख कवि और कृतियाँ

❖ छायावाद के आधार स्तम्भ कवि जयशंकर **प्रसाद,** सूर्यकांत त्रिपाठी **'निराला'** सुमित्रानंदन **'पंत'** और महादेवी **'वर्मा'** को माना जाता है।

✍ डॉ. नगेंद्र सिंह के अनुसार –"इस कविता का गौरव अक्षय है, इसकी समृद्धि की समता केवल भक्तिकाल ही कर सकता है।"

छायावाद के प्रवर्तक कवि

❖ छायावाद के प्रवर्तक कवि के संबंध में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं, जो निम्नलिखित हैं–

क्र.सं.	छायावाद का प्रवर्तक कवि	मत देने वाला विद्वान
1.	मुकुटधर पाण्डेय, मैथिलीशरण गुप्त	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2.	जयशंकर प्रसाद	इलाचन्द्र जोशी, शिवनाथ
3.	सुमित्रानंदन पंत	नन्द दुलारे वाजपेयी
4.	माखनलाल चतुर्वेदी	विनयमोहन शर्मा, प्रभाकर माचवे

✦ अधिकांश विद्वानों ने जयशंकर प्रसाद को ही छायावाद का प्रवर्तक कवि माना है। इस काव्य को 'छायावाद' नाम सर्वप्रथम 'मुकुटधर पाण्डेय' द्वारा दिया गया है। आचार्य शुक्ल छायावाद के निंदक रहे हैं, लेकिन आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी छायावाद के प्रबल समर्थक रहे हैं और अपने समीक्षात्मक निबंधों के द्वारा छायावादी साहित्य का समर्थन किया है।

✍ विशेष तथ्यः– छायावाद के ब्रह्मा, विष्णु और महेश क्रमशः जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकान्त निराला को कहा जाता है।

छायावादोत्तर काव्य

❖ छायावादी काव्य की अंतिम सीमा 1936 ई. मानी गई है। कुछ विद्वान् इस सीमा को 1938 ई. भी स्वीकार करते हैं। छायावादोत्तर काल छायावाद के बाद के काल को कहा जाता है। डॉ नगेंद्र के अनुसार छायावाद के बाद के काव्य को निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त कर के उनका अध्ययन व विश्लेषण किया जाता हैः–

(1) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा।
(2) प्रणयमूलक वैयक्तिक प्रगीत काव्यधारा।
(3) प्रगतिवाद
(4) प्रयोगवाद और नयी कविता।

(1) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा

❖ छायावादी काव्य के बाद राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा का उदय हुआ। इस काव्य धारा के कवियों का प्रमुख उद्देश्य देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना जागृत करना था। राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों ने भारत के स्वर्णिम अतीत का जहाँ गौरवगान किया, आत्माभिमान और देशभिमान पर हर्ष प्रकट किया। इस काव्यधारा के कवियों ने राष्ट्रीय समस्याओं पर चिंता व्यक्त की और सांस्कृतिक चेतना का प्रसार किया। इन कवियों ने तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया, साथ ही पराधीनता और दमन के विरुद्ध संघर्ष करने का प्रेरणादायी उद्बोधन देते हुए देश वासियों को जागरण का संदेश दिया। भारतीय जनता को अपने काव्य के द्वारा क्रांति का बिगुल बजाते हुए आत्मोत्सर्ग के लिए प्रेरित किया।

● इस काव्य धारा के प्रमुख कवि निम्न हैंः– मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सोहनलाल द्विवेदी, श्यामनारायण पाण्डेय, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्राकुमारी चौहान, रामनरेश त्रिपाठी आदि।

✦ विशेष तथ्यः– उपर्युक्त कवियों की काव्य रचनाओं का विवरण द्विवेदीयुगीन राष्ट्रीय काव्यधारा के कवि और उनकी रचनाएं तालिका में पहले ही किया जा चुका है अतः वहां से पढ़े।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा की विशेषताएँ

❖ इस काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः–
- ➢ देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना।
- ➢ गौरवमयी अतीत का गुणगान तथा आर्य संस्कृति एवं गाँधीवाद का समर्थन।
- ➢ स्वतंत्रता संग्राम के लिए उद्बोधन।
- ➢ तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का यथार्थ वर्णन।
- ➢ देश पर बलिदान हो जाने की भावना।
- ➢ देशाभिमान की भावना का चित्रण व जन जागरण का संदेश।
- ➢ ओज एवं औदात्य की भावना।
- ➢ क्रांति का स्वर तथा सुधार की प्रवृत्ति।
- ➢ पराधीनता के प्रति क्षोभ, आक्रोश एवं संघर्ष की भावना।

(2) प्रणयमूलक वैयक्तिक प्रगीत काव्यधारा

❖ छायावाद के उत्तरार्द्ध में दो स्वतंत्र काव्यधाराओं का उदय हुआ–
(1) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा और
(2) वैयक्तिक प्रगीत काव्यधारा।
डॉ. नगेन्द्र ने छायावाद के बाद और प्रगतिवाद के पूर्व की काव्यधारा को 'वैयक्तिक कविता' कहा है। इस वैयक्तिक या प्रणयमूलक वैयक्तिक काव्यधारा के अंतर्गत् प्रेम और मस्ती की कविताएँ लिखने वाले कवि शामिल हैं, जो निम्न लिखित हैंः–

✍ हरिवंशराय बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, रामेश्वर शुक्ल अंचल, नरेन्द्र शर्मा, गोपाल सिंह नेपाली, हरिकृष्ण प्रेमी, हृदयनारायण हृदयेश आदि।

वैयक्तिक प्रगीत काव्यधारा की विशेषताएँ

❖ वैयक्तिक या प्रणयमूलक वैयक्तिक काव्यधारा के अंतर्गत् प्रेम और मस्ती की कविताएँ लिखने वाले कवि शामिल हैं। इस काव्य की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैंः–

12 प्रगतिवाद : (1936–1943)

❖ **प्रगतिवाद का अर्थ है:–** "समाज, साहित्य आदि की निरन्तर उन्नति पर जोर देने का सिद्धांत। **प्रगतिवाद छायावादोत्तर** युग की नवीन काव्यधारा का एक भाग हैं। यह उन विचारधाराओं एवं आन्दोलनों के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया जाता है **जो आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों में परिवर्तन या सुधार के पक्षधर हैं। छायावादी और स्वच्छंदतावादी काव्यधारा की अतिशय काल्पनिकता और वैयक्तिकता के विरोध** में प्रगतिवाद का 1935–1936 ई. में उदय हुआ। प्रगतिवाद की मूल विचारधारा कार्लमार्क्स की विचारधारा है। **जो विचारधारा राजनीतिक क्षेत्र में साम्यवाद या मार्क्सवाद कहलाती है, वही साहित्यिक क्षेत्र** में **प्रगतिवाद** के नाम से जानी जाती है।

- **हिन्दी साहित्य में छायावाद के बाद साम्यवादी विचारधारा के अनुरूप रचित कविता प्रगतिवादी कहलाती है।** सामाजिक **यथार्थवाद के आधार पर 1935–1936 ई.** के आसपास चलाया गया साहित्यिक आंदोलन प्रगतिवाद है, जिसका मूल उद्देश्य **जनजीवन की समस्याओं तथा नित्यप्रति के संघर्षरत जीवन का चित्रण करना था।** अंतर्मुखी पलायन, निराशा, पराजय के स्थान पर **उत्साह और जूझने की प्रेरणा लेकर** यह साहित्य उदित हुआ।

✍ **इसके अधिकांश कवि साम्यवाद और रूस के साहित्य से अनुप्राणित एवं प्रभावित थे।** साम्यवादी विचारधारा के आधार पर समाज को दो वर्गों में बाँटा गया है– **(1) शोषक वर्ग–** इसमें वे पूंजीपति, उद्योगपति और जमींदार शामिल हैं, जो गरीबों और मजदूरों का शोषण करते हैं और **(2) शोषित वर्ग–** इस वर्ग के अंतर्गत किसान, श्रमिक, गरीब और मजदूर आते हैं, जिनका शोषण किया जाता है। साम्यवादी विचारक समाज में **समानता स्थापित करना चाहते** हैं, इसके लिए **शोषण की प्रक्रिया बंद करना चाहते** हैं। अतः प्रगतिवादी कविता शोषण का विरोध करती है।

✍ **1935 में फ्रांस में प्रगतिशील लेखक संघ** की स्थापना हुई। इसी वर्ष **लंदन में मुल्कराज आनंद और सज्जाद जहीर** के प्रयास से **भारतीय लेखक संघ** की स्थापना हुई। इसका पहला **अधिवेशन 1936 में मुंशी प्रेमचंद की अध्यक्षता में लखनऊ** में हुआ। उनके अध्यक्षीय भाषण से ही हिन्दी साहित्य में **प्रगतिवाद का प्रारंभ माना जाता** है। भारत में **'प्रगतिशील लेखक संघ' (1936)** की स्थापना भी इसी समय हुई। **प्रगतिवाद का समय 1936 से 1943 ई. माना जाता है।**

- **प्रमुख प्रगतिवादी कवि– नागार्जुन, केदारनाथ, रामविलास शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन' डॉ. रांगेय राघव, त्रिलोचन शास्त्री** आदि हैं। इसके अलावा **सुमित्रानंदन पंत, निराला, रामधारी सिंह दिनकर और नरेंद्र शर्मा** आदि की रचनाओं में भी प्रगतिवादी तत्व उपलब्ध होते हैं।

✍ **नन्ददुलारे वाजपेयी** के अनुसार–**'प्रगतिवाद उपयोगितावाद का दूसरा नाम है।'**

प्रमुख प्रगतिवादी कवि

1. नागार्जुन (1911–1998)

❖ **बिहार** के **तरौनी ग्राम, जिला–दरभंगा** में जन्म हुआ। वास्तविक नाम **'वैद्यनाथ मिश्र'** अपनी **घुमक्कड़ प्रवृति के कारण** इन्होंने स्वयं को **'यात्री'** नाम दिया और **मैथिली भाषा में 'यात्री' नाम** से ही लिखते थे। इनको **बाबा नागार्जुन** नाम से भी जाना जाता है। प्रगतिवाद और प्रयोगवाद दोनों में साहित्य रचना की, विचारों से **प्रखर मार्क्सवादी एवं प्रगतिवादी थे।** इनकी काव्य **कृतियों में रागात्मक अनुभूति, किसान,मजदूर, राजनीतिक परिस्थितियाँ, व्यंग्य, विडंबना और आक्रोश का भाव** है। इन्होंने **1936 ई. में श्रीलंका में बौद्ध धर्म की दीक्षा ली, तब से नागार्जुन कहलाए।**

नागार्जुन की प्रमुख रचनाएँ:–

❖ नागार्जुन की काव्य कृतियाँ
(1) युगधारा (1956) (2) सतरंगे पंखों वाली (1959)
(3) तालाब की मछलिया (1957) (4) प्यासी पथराई आंखे (1962)
(5) तुमने कहा था (1980) (6) खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980)
(7) हजार–हजार बाँहों वाली (1981) (8) पुरानी जूतियों का कोरस (1983)
(9) रत्नगर्भ (1984) (10) ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या (1985)
(11) आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने (1986) (12) इस गुब्बारे की छाया में (1990)
(13) भूल जो पुराने सपने (1994) (14) अपने खेत में (1997)
(15) भस्मांकुर (1970) प्रबंधकाव्य (16) गीतगोविंद (1979)
❖ दीर्घकविता:–भूमिजा (हरिजन गाथा)
❖ प्रमुख कविताएँ:–
प्रेत का बयान, काली माई, अकाल और उसके बाद, आओ रानी हम ढोए पालकी, वे और तुम, पाषाणी, सिंदूर तिलांकित झील आदि।
❖ प्रमुख उपन्यास:–
(1) रतिनाथ की चाची (1948) (2) बलचनमा (1952)
(3) नई पौध (1953) (4) बाबा बटेसर नाथ (1954)
(5) वरुण के बेटे (1957) (6) दुःख मोचन (1957)
(7) कुंभीपाक (1960) (8) हीरकजयंती या अभिनंदन (1962) (9) उग्रतारा (1963)
(10) जमनिया का बाबा या इमरतिया (1968)
(11) पारो (1975) (मैथिली में) (12) गरीबदास (1979)
❖ दीपक पत्रिका का संपादन।

✍ श्वानों को मिलता दूध, वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं।
मां की छाती से चिपट, ठिठुर, जाड़े की रात बिताते हैं'।।
(रामधारी सिंह दिनकर)

❖ **क्रांति का स्वरः–** प्रगतिवादी कवि **कार्ल मार्क्स** की विचारधारा को मानतें हैं। वे **सामाजिक समानता** के लिए क्रांति का समर्थन करते हैं। प्रगतिवादी कवियों ने प्राचीन परम्पराओं का **समूल विनाश क्रांति** के द्वारा ही सम्भव मानतें हैं। कवि चाहता है कि पूंजीपतियों के **गगनचुम्बी महल** भूमिगत हो जाएं और सबको **न्याय** मिल सके, इन कवियों ने इसके लिए हिंसा का भी समर्थन किया है।

✍ काटो–काटो काटो कर लो, साइत और कुसाइत क्या है।
मारो–मारो मारो हसियां, हिंसा और अहिंसा क्या है।
(केदारनाथ अग्रवाल)

❖ **धर्म और ईश्वर के प्रति अनास्थाः–** प्रगतिवादी कवि धर्म को **शोषण का हथियार** मानता है इसलिए वह **धर्म और ईश्वर** पर विश्वास नहीं करता।

✍ भाग्यवाद आवरण पाप का और शस्त्र शोषण का।
जिससे रखता दबा एक जन भाग दूसरे जन का।
कुरुक्षेत्र (रामधारी सिंह दिनकर)

रामेश्वर शुक्ल **'अंचल'** ने **ईश्वर की धारणा** पर प्रश्न चिह्न लगा देते हैंः–

✍ जिसका ले ले नाम युगों से मांस लुटाते तुम रोए।
किन्तु न चेता जो निशि वासर और क्षुधातुर तुम सोए।।
(रामेश्वर शुक्ल 'अंचल')

प्रगतिवादी कवि ने धार्मिक विश्वासों एवं रूढ़ियों को तोड़कर विप्लव के गीत गाए हैं। कवि चाहता है कि क्रांति की चिनगारी उन रूढ़ियों को जलाकर राख कर देः–

✍ कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।।
(बालकृष्ण शर्मा 'नवीन')

✍ सुमित्रानंदन पंत ने भी युग रूपी कोयल का आह्वान किया है कि वह अपने पावक कणों से जीर्ण और पुरातन को नष्ट कर देः–
गा कोकिल बरसा पावक कण, नष्ट–भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन।
(सुमित्रानंदन पंत)

❖ **नारी के प्रति सहानुभूति एवं संवेदनाः–** प्रगतिवादी काव्यधारा के कवियों ने **नारी के त्याग,** साहस, **प्रेम, सहयोग,** बलिदान, **सहनशीलता, दुःख, वेदना** का यथार्थ चित्रण किया है। इन कवियों के अनुसार नारी न तो कल्पना लोक की परी है और न सौंदर्य एवं उदात्त वृत्तियों की पराकाष्ठा ही है अपितु वह इसी लोक की मानवी है जो **रात–दिन पुरुष** के साथ आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को झेलती है। **कवि निराला ने 'पत्थर तोड़ती'** नारी का चित्रण किया हैः–

✍ वह तोड़ती पत्थर, देखा उसे मैंने इलाहबाद के पथ पर।
गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार–बार प्रहार,
सामने तरु मलिका अट्टालिका प्राकार।।
(सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

❖ **लोक संस्कृति का चित्रणः–** प्रगतिवादी काव्य के कवियों ने **ग्रामिण परिवेश,** रीति रिवाजों, **संस्कृति का भी चित्रण** किया है। अधिकांश **कवि माटी से जुड़े** हुए हैं अतः इनकी रचनाओं में **माटी की महक** विद्यमान है।

❖ **मार्क्सवाद और रूस का स्तुतिगानः–** प्रगतिवादी कवि **साम्यवादी या मार्क्सवादी** वियारधारा से अनुप्रेरित हैं अतः इनके काव्य में सर्वहारा वर्ग की विजय का आह्वान है। इन कवियों ने साम्यवादी देश **रूस का गुणगान** एवं समर्थन किया है साथ ही **पूंजीपति** अर्थव्यवथा के पोषक देशों का विरोध किया है। प्रगतिवादी कवियों ने **रूस** के समर्थन में काव्य रचनाएं की हैं।

❖ **जनजीवन से जुड़ी हुई भाषा शैली का प्रयोगः–** इन कवियों की भाषा सरल है। इनकी **शैली अलंकारहीन** है और **मुक्त छन्द** का प्रयोग है। इन कवियों की भाषा में बनावट नहीं है। प्रगतिवादी कवियों की भाषा **आम आदमी** की भाषा है।

✍ तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार।
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार।। (सुमित्रानंदन पंत)

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. **निम्नलिखित में से कौनसी रचना 'केदारनाथ अग्रवाल' की नहीं है?**
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) बोले बोल अबोल (ब) कहे केदार खरी– खरी
(स) हे मेरी तुम (द) तालस्ताय और साइकिल (द)

2. **रचना और रचनाकार की दृष्टि से असंगत विकल्प चुने?**
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) युगपथ– माखनलाल चतुर्वेदी
(ब) युगधारा– नागार्जुन
(स) युग की गंगा– केदारनाथ अग्रवाल
(द) युगवाणी– सुमित्रानन्दन पंत (अ)

3. **निम्नलिखित में से रचना व रचनाकार की दृष्टि से सुमेलित नहीं है?**
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) आग का आईना– केदारनाथ अग्रवाल
(ब) नींद के बादल– केदारनाथ अग्रवाल
(स) फूल नहीं रंग बोलते है– नागार्जुन
(द) तालाब की मछलियाँ– नागार्जुन (स)

4. **निम्नलिखित में से कौनसी कृति नागार्जुन की नहीं है?**
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) प्यासी पथराई आँखे
(ब) सतरंगे पंखों वाली
(स) पंख और पतवार
(द) खिचड़ी विप्लव देखा हमने (स)

13 प्रयोगवाद और नई कविता : (1943 से 1960)

प्रयोगवाद (1943 से 1953)

❖ हिन्दी काव्य में **'प्रयोगवाद' का प्रारंभ 1943 ई.** में **'अज्ञेय'** द्वारा संपादित **'तार सप्तक'** के प्रकाशन से माना जाता है। इस संग्रह में अब तक प्रचलित कविताओं की लीक से हटकर ऐसी कविताएँ थी जो **नई संवेदनाओं, नए भावबोध एवं नए शिल्प से युक्त थी।** यों काव्य क्षेत्र में प्रयोग सभी युगों में होते आये हैं किन्तु **'प्रयोगवाद'** शब्द केवल **उन कविताओं के लिए रुढ़ हो गया है, जो कुछ नवीन भाव बोध, संवेदनाओं और उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए नवीन शिल्प** के साथ **'प्रथम तार सप्तक' (1943)** के माध्यम से प्रकाश में आई।

- प्रयोगवादी कवि **'प्रयोग'** करने में विश्वास करते हैं। **भाषा, उपमान, शिल्प और काव्य वस्तु की दृष्टि से नए प्रयोग** किए गए।

✍ **अज्ञेय ने 'प्रयोग'** को साधन मानते हुए कहा है –**'प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, बल्कि वह साधन है ।'** प्रयोगवादी कवियों ने अपने **व्यक्तिगत सुख–दुःख को, अपनी व्यक्तिगत संवेदनाओ को नए–नए माध्यमों से व्यक्त किया और उस यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की, जिसे वह भोगता** है। दूसरे शब्दों में यदि कहें तो **मध्यमवर्गीय समाज का हासोन्मुखी जीवन ही प्रयोगवादी काव्य में चित्रित किया** गया है।

- **प्रयोगवादी कवि ने भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को काव्य में स्थान दिया और जीवन की निराशा, कुंठा, अनास्था, जड़ता एवं संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की। दमित कामवासना के चित्र भी इस काव्य में उपलब्ध होते हैं। लघुमानव को पूर्ण गरिमा के साथ प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी प्रयोगवादी कवियों को दिया जाता है।**
- प्रयोगवादी काव्य में साम्यवाद के प्रति अनास्था व्यक्त की गई है। प्रयोगवादी कवि **कला को केवल कला के लिए** और अपने अहं की अभिव्यक्ति के लिए मानते हैं।
- अहं का **विसर्जन** और **साहित्य का सामाजीकरण** प्रयोगवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं। प्रयोगवादी कवियों की अनुभूति का केंद्र उनका **अहं** है। इनके काव्य में **'मैं' शब्द** का अधिकाधिक प्रयोग किया गया है।
- जीवन के प्रति विभिन्न **कुंठाओं** ने प्रयोगवादी कवियों को **शंकाकुल और भयाकुल** बना दिया है। प्रयोगवादी कवि कविताओं के माध्यम से बहुत कुछ कहना चाहते हैं, परंतु कुछ कह नहीं पाते। **जीवन की निराशाओं** से दबकर कवि या तो **कल्पना लोक** की बातें करते हैं अथवा वास्तविकता से दूर रहना चाहते हैं।
- उनमें **पलायन की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है।** प्रयोगवादी कवियों ने **नवीन उपमानों, छंद विधानों, नवीन शब्दों** आदि का प्रयोग किया है। साथ ही उन्होंने शब्दों में नए अर्थ भरने के प्रयास भी किए हैं।

तार सप्तक

❖ प्रयोगवाद के **प्रवर्तन** का श्रेय **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** को दिया जाता है। **प्रयोगवाद का प्रारंभ 'अज्ञेय' के संपादकत्व में प्रकाशित 'तार सप्तक' (1943) से माना जाता है।** **'अज्ञेय'** के संपादकत्व में **चार सप्तक** प्रकाशित हो चुके हैं, प्रत्येक सप्तक में **'अज्ञेय'** ने समान विषय वस्तु को अपनाकर रचनाएं करने वाले अपने समकालीन सात अलग–अलग कवियों की रचनाओं को प्रत्येक सप्तक मे शामिल किया । इस प्रकार **चार सप्तकों** में **कुल अठाईस (28)** कवियों की रचनाओं को शामिल किया गया।

क्र.	तारसप्तक	तार सप्तक में शामिल कवि
1.	तार सप्तक (1943)	1.अज्ञेय 2. मुक्तिबोध 3. गिरिजाकुमार माथुर 4.प्रभाकर माचवे 5. भारत भूषण अग्रवाल 6. नेमिचन्द जैन 7.रामविलास शर्मा
2.	द्वितीय सप्तक (1951)	1. भवानी प्रसाद मिश्र 2. शकुंतला माथुर (महिला) 3.हरीनारायण व्यास 4. शमशेर बहादुर सिंह 5. नरेश मेहता 6. रघुवीर सहाय 7. धर्मवीर भारती
3.	तृतीय सप्तक (1959)	1. प्रयाग नारायण त्रिपाठी 2. कुँवर नारायण 3. कीर्ति चौधरी (महिला) 4. केदारनाथ सिंह 5. मदन वात्स्यायन 6. विजय देवनारायण साही 7. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
4.	चतुर्थ सप्तक (1979)	1. श्रीराम वर्मा 2. नंदकिशोर आचार्य 3. अवधेश कुमार 4.राजकुमार कुंभज 5. स्वदेश भारती 6. सुमन राजे (महिला) 7. राजेन्द्र किशोर (नन्दकिशोर आचार्य राजस्थान के निवासी हैं)

प्रयोगवाद के संबंध में महत्त्वपूर्ण तथ्यः–

✍ **तार सप्तक 1943** में कोई महिला शामिल नही है।

✍ **द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ सप्तक** (अर्थात् तीनों सप्तकों में एक–एक महिला शामिल हैं, अतः कुल **तीन महिलाओं** को शामिल किया गया है।

✍ प्रयोगवाद का **आरंभकर्ता अज्ञेय** को माना जाता है, **'प्रयोगवाद' नाम** का **सबसे अधिक विरोध इन्होंने ही किया।**

✍ अज्ञेय ने **'तार सप्तक'** की भूमिका में प्रयोगवादी कवियों को **'राहों के अन्वेषी'** कहा है।

- **ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में,** चकमक की चिंगारियाँ, चाँद का मुँह टेड़ा है, डूबता चांद कब **डूबेगा, चम्बल की घाटियाँ, भूल गलती,** अंतः करण का आयतन आदि कविताएँ **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'** कृति में संकलित प्रमुख कविताएँ हैं।
- इनकी **'अंधेरे में'** कविता **'फैन्टेसी शैली'** की अनूठी रचना है। यह एक स्वप्न कथा है।
- **मुक्तिबोध को हिन्दी साहित्य में 'फैन्टेसी' का कवि कहा जाता है।** यह फैन्टेसी को काव्य शैली का एक अनिवार्य अंग मानते थे।
- मुक्तिबोध ने **'फैन्टेसी'** काव्य शैली को **'अनुभव की कन्या'** कहा है।
- मुक्तिबोध को **'कटघरे का कवि'** कहा जाता है।
- **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'** को **'रुपक प्रधान कथात्मक काव्य'** कहा जाता है। **'ब्रह्मराक्षस'** मध्यमवर्गीय **बौद्धिक चेतना का प्रतीक** है।
- मुक्तिबोध की कविताएँ **नाट्यात्मक हैं,** इनकी अधिकांश कविताओं की शैली **'मैं'** शैली है, जो पूरे समाज का **'मैं'** है।
- मुक्तिबोध के संबंध में **त्रिलोचन शास्त्री** ने कहा है कि –**'पढ़ना वे बहुत जरूरी कवि हैं, भागना नहीं, समझने की कोशिश करना।'**
- मुक्तिबोध की **दीर्घ** कविता **'ब्रह्मराक्षस'** में एक ऐसे ब्राह्मण का चित्रण है जो **अतृप्त आकांक्षाओं के साथ मृत हो गया** है और राक्षस बन गया है। **इसमें वर्ग चेतना और सामाजिक क्रांति का स्वर है।**
- इनकी **'एक साहित्यिक की डायरी'** कृति (भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत) पहले **'एक लेखक की डायरी'** के रूप में जबलपुर की **'वसुधा'** पत्रिका में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुई थी।
- **'एक साहित्यिक की डायरी'** रचना मुक्तिबोध के आलोचक व्यक्तित्व के अनेक पक्षों का उद्घाटन करती है।
- **'नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध'** इनके चिंतन जगत और विचार भूमि को स्पष्ट करती है।
- मुक्तिबोध की रचना **'भारत इतिहास और संस्कृति'** को **मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिबंधित किया गया था।**
- **अशोक वाजपेयी के अनुसार–** ''मुक्तिबोध कठिन समय के कठिन कवि हैं। उनकी कविताओं का स्थापत्य स्थिर और सुपरिभाषित नहीं है।''

5. गिरिजा कुमार माथुर (1919–1994)

काव्य कृतियाँ	
1.मंजीर (1941)	2. नाश और निर्माण (1946)
3.धूप के धान (1954)	4.शिलापंख चमकीले (1961)
5. जो बंध न सका (1968)	6. साक्षी रहे वर्तमान (1978)
7. छाया मत छूना (1979)	8.भीतरी नदी की यात्रा
9. पृथ्वीकल्प (खंडकाव्य)	10. कल्पांतर (प्रतीक काव्य)
❖ आलोचना:–	नईकविता–सीमाएं और संभावनाएँ
साहित्य अकादमी पुरस्कार (1991)	'मैं हूँ वक्त के सामने' कृति पर मिला।

6. भारतभूषण अग्रवाल (1919–1975)

- **कृतियाँ:–** 1. **कवि के बंध** (1941) 2. **जागते रहो** (1942) 3. मुक्तिमार्ग (1947) 4. **ओ प्रस्तुत मन** (1958) 5. कागज के फूल (1963) 6. **अनुपस्थित लोग** (1965) 7. एक उठा हुआ हाथ (1970) **8. उतना वह सूरज** (1977)

7. नरेश मेहता (1922–2000)

❖ **गाँधी के जीवन** पर आधारित **'प्रार्थना पुरुष'** नामक **'खंड काव्य'** की रचना की, **'संशय की रात'** नामक प्रसिद्ध **'खंड काव्य'** की रचना कि जिसमें राम के संशय का चित्रण किया गया है कि क्या एक **सीता के लिए नरसंहार** करना करना उचित है? यह संशय राम के मन मे उठा और फिर उन्होंने **सोचा कि युद्ध सीता के लिए नहीं, प्रजा के लिए करना आवश्यक** है। रामनरेश मेहता ने अपनी कविता **में करुणा, आधुनिक बोध का एक साथ चित्रण किया है।**

काव्य कृतियाँ	
1.वन पाखी सुनो (1957)	2. बोलने दो चीड़ को (1961)
3.मेरा समर्पित एकांत (1962)	4. उत्सवा (1979)
5.तुम मेरा मौन हो (1982)	6. अरण्या (1985)
7.समय देवता'	इनकी बहुत ही चर्चित दीर्घकविता।
❖ खंडकाव्य:–	1. संशय की एक रात (1962) 2. महाप्रस्थान (1965) 3. प्रवादपर्व (1977) 4. शबरी (1978) 5. प्रार्थना पुरुष (1986)
❖ सम्मान, पुरस्कार:–	'अरण्या' कृति पर 1988 में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला और सम्पूर्ण रचनाओं पर 1992 का 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला।

8. जगदीश गुप्त (1924–2001)

❖ नई कविता के प्रमुख कवि **'गुप्त'** की रचना **'शंबूक'** में **मानवतावादी चेतना की अभिव्यक्ति है। नई कविता के प्रमुख कवि, नवीन शिल्प विधान।** कविताओं में चित्रात्मकता। प्रकृति प्रेम, सौन्दर्य का सूक्ष्म चित्रण।

काव्य कृतियाँ	
1. नाव के पाँव (1955 प्रथम काव्य संग्रह)	2. शब्द दंश (1956)
3. शंबूक (1956)	4. हिमबद्ध
5. आदिम एकांत	6.गोपा–गौतम
7. बोधिवृक्ष	'शंबूक' (1956) दलित–विमर्श से संबंधित उत्कृष्ट काव्य है।
आलोचना साहित्य:–	1. केशवदास 2. नई कविता–स्वरूप और समस्याएँ।
सम्पादन:–	1. रीतिकाव्य संग्रह 2. नवधा 3. त्रयी 4.'नईकविता' (1953) पत्रिका का सम्पादन किया।

प्रमुख नवगीतकार एवं उनके संकलन

गीतकार	रचना
1.शंभूनाथ सिंह	(1) दर्द जहाँ नीला है (1977) (2) समय की शिला पर (1968) (3) कलापी (4) संचयिता (5) जीवन और योवन (6) पाँचजन्य (7) माध्यम मैं (8) खंडित सेतु (9) प्रेमगीत (10) रूपरश्मि (11) छायालोक (12) उदयाँचल (13) मनवन्तर (14) दिवालोक (1951)
2. वीरेन्द्रमिश्र	झुलसा है छायानट धूप में, गीतम
3. नीरज	(1) संघर्ष (2) अन्तर्ध्वनि (3) बादर बरस गयो (4) प्राण–गीत (5) दर्द दिया है (6) बादर बरस गयो (7) नीरज की पाती (8) नदी किनारे (10) आसावरी (11) लहर पुकारे (12) मुक्तकी (13) गीतभी अगीत भी।
4.रवीन्द्र भ्रमर	(1) रवीन्द्र भ्रमर के गीत (2) इतिहास दुबारा लिखो (3) सोनम छरी मनबसी
5.राजेन्द्रप्रसाद सिंह	(1) भूमिका (1950) (2) दिग्वधू (1956) (3) संजीवन कहाँ (1965) (4) आओ खुली बयार (5) भरी सङक पर (6) गरज आधी रात का (7) रात आँख मूँदकर जगी
6. कुँवर बैचेन	(1) पिन बहुत सारे (1972) (2) भीतर साँकल बाहर साँकल (1978) (3) शामियाने काँच के (1983) (4) महावर इन्जारों का (1983)
7.ठाकुर प्रसाद सिंह	(1) वंशी और मदाल (1959) (2) महामानव (प्रबंध काव्य–1946) (3) हारी हुई लङाई लङते हुए (काव्यसंग्रह –1988)
8. राजेन्द्र गौतम	(1) गीतपर्व आया है (1983) (2) पंख होते है समय के (1989) (3) बरगद जलते है (1998)
9. गोरख पाण्डेय	(1) भोजपुरी के नौ गीत (1978) (2) जागते रहो सोने वालों (1983) (3) स्वर्ग से बिदाई (1989) (4) समय का पहिया (5) लोहा गरम हो गया है। अंतिम चारों काव्य–संग्रह है
10. रामदरश मिश्र	वैरंग बेनाम चिट्ठियां
11. रमेश रंजक	किरण के पांव

समकालीन युग की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाएँ एक दृष्टि में

क्रं सं.	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम
1.	प्रतीक (1947) इलाहाबाद	अज्ञेय
2.	कविता	भागीरथ भार्गव
3.	निकष (दिल्ली)	धर्मवीर भारती
4.	संकेत	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
5.	नई कविता (1954) इलाहाबाद	जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी, विजयदेव नारायण साही।
6.	निषेध	जगदीश चतुर्वेदी
7.	पहचान	अशोक वाजपेयी
8.	संचेतना	प्रदीप सिंह, नरेंद्र मोहन
9.	साप्ताहिक हिंदुस्तान	मनोहर श्याम जोशी, मृणाल पाण्डेय
10.	धर्मयुग (मुंबई)	धर्मवीर भारती
11.	दिनमान, दिल्ली	घनश्याम पंकज
12.	रविवार, कलकत्ता	उदयन शर्मा
13.	इंडिया टुडे, दिल्ली	प्रभु चावला
14.	वामा	विमल पाटील
15.	कादंबिनी	राजेन्द्र अवस्थी
16.	सारिका	कमलेश्वर, मोहन राकेश, मृणाल पाण्डे, राजेंद्र अवस्थी
17.	कहानी	श्रीपतराय, भैरवप्रसाद गुप्त
18.	हंस–1930 बनारस	प्रेमचंद,राजेन्द्र यादव
19.	गंगा	कमलेश्वर
20.	आलोचना, दिल्ली	नामवर सिंह

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. असंगत विकल्प चुने?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) खुरदुरी हथेलियाँ– अनामिका
(ब) अपनी केवल धार– अरुण कमल
(स) घास में दुबका आसमान– आलोक धन्वा
(द) एक पंतग अनंत में– अशोक वाजपेयी (स)

2. निम्नलिखित में से अरुण कमल की रचना नहीं है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. प.– 9 सितंबर, 2024)
(अ) मै वो शंख महाशंख (ब) बीजाक्षर
(स) सबूत (द) नये इलाके में (ब)

3. अशोक वाजपेयी की काव्य कृति नहीं है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) बहुरि अकेला (ब) आदिम एकांत
(स) शहर अब भी संभावना है (द) तत्पुरूष (ब)

4. नंद चतुर्वेदी के संबंध में असंगत कथन है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) 'कहीं नहीं वहीं' उनका प्रसिद्ध काव्य संकलन है।
(ब) उन्होने घनाक्षरों, सवैया, दोहा आदि छंदों में भी रचनाऐं की।
(स) उन्होने साहित्यिक पत्रिका 'बिंदु' का संपादन किया।
(द) उनके लेखन की शुरूआत ब्रजभाषा की कविताओं से हुई। (अ)

5. शमशेर के संदर्भ में असंगत कथन है?
(सहा. प्रोफेसर, संस्कृत वि. परीक्षा– 9 सितंबर, 2024)
(अ) ये 'कहानी' और 'नया साहित्य' पत्रिका के संपादन मंडल में रहे।
(ब) 'रूप विधान' की अपेक्षा 'वस्तु' के प्रति इनमें अधिक सजगता दृष्टिगोचर होती है।
(स) शमशेर अपनी रचना की टेकनीक के लिए एजरा पाउण्ड को सबसे बड़ा आदर्श मानते है।
(द) ये 'दुसरा सप्तक' के कवियों में है। (ब)

14 हिंदी नाटक और एकांकी

❖ **आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना एकाँकी, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, आदि** हैं। इनमें से अधिकांश हिन्दी विधाओं का प्रारंभ **आधुनिक काल** के प्रथम युग **'भारतेन्दु युग'** से माना जा सकता है। हिन्दी गद्य की उपर्युक्त विधाओं के **प्रारंभ और विकास का अध्ययन निम्नलिखित प्रकार से है:–**

हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास

❖ **भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र** (1850–1885) से ही हिन्दी में नाटक लिखने की परंपरा का प्रारंभ मानना चाहिए, क्योंकि भारतेन्दु से पूर्व **'नाटक'** नाम से जो रचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध होती हैं, उनमें नाट्यकला के तत्त्वों का अभाव है।

- **प्राणचंद चौहान** कृत **'रामायण महानाटक' (1610)** और कवि **हृदयराम** कृत **'हनुमान नाटक' (1840)** पद्यात्मक रचनाएँ हैं, अतः इनको नाटक नहीं कहा जा सकता है।
- आधुनिक काल में **भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र** के पिता **'गोपालचन्द्र गिरधरदास'** ने **'नहुष' (1857) नाटक की रचना की।** कवि **गणेश** ने **'प्रद्युमन विजय' (1863)** और **शीतला प्रसाद त्रिपाठी** ने **'जानकी मंगल' (1868)** नाटकों की रचना की। इनमें से **'जानकी मंगल'** ही नाट्य गुणों से युक्त है, लेकिन तब तक **भारतेन्दु** का नाटक **'विद्यासुंदर' (1868)** प्रकाशित हो चुका था, जो संस्कृत के **'चौर पंचाशिका'** का हिन्दी अनुवाद है।
- भारतेन्दु ने न केवल हिन्दी में मौलिक नाटकों की रचना की बल्कि दूसरी भाषाओं **(संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी)** के श्रेष्ठ नाटकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया। **भारतेन्दु** ने **'नाटक' (1881)** नामक **आलोचनात्मक कृति** में नाट्यकला के तत्वों का उल्लेख करते हुए **नाट्य शिल्प पर प्रकाश** डाला। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ऐसे नाटकों की रचना का मार्ग प्रशस्त किया जो भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्यकला का समन्वयात्मक रूप प्रस्तुत करते थे। भारतेंदु का ध्यान गद्य रचना के अंतर्गत सबसे पहले **नाटकों की ओर ही गया**। अपनी **'नाटक'** नामक कृति में उन्होंने लिखा है कि **हिंदी में मौलिक नाटक उनके पहले दो** ही लिखे गये थे– **महाराजा विश्वनाथ सिंह** का **'आनंदरघुनंदन'** और **बाबू गोपालचंद्र** का **'नहुष' नाटक।** कहने की आवश्यकता नही किये दोनों नाटक ब्रजभाषा में थे।

विशेष– आचार्य शुक्ल हिंदी का प्रथम नाट्क 'महाराजा विश्वनाथ सिंह कृत 'आनंद रघुनंदन' (1700) को माना है। डॉ. नगेंद्र ने प्रथम नाट्क **'शीतलाप्रसाद त्रिपाठी'** कृत **'जानकी मंगल'** (1868) को माना है। भारतेंदु ने 'नहुष' (1857) को प्रथम नाट्क माना है।

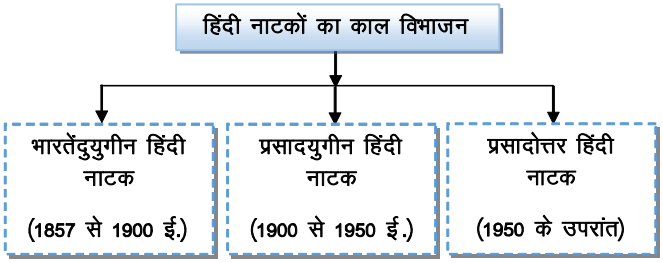

(1) भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नाटक (1857 से 1900)

❖ भारतेन्दु युग में **मौलिक और अनूदित** दोनों प्रकार के नाटक लिखे गए। इनके नाटको में विषय विविधता है। अनूदित नाटकों से हिन्दी नाट्य साहित्य को नवीन दृष्टि प्राप्त हुई और हिन्दी में नाट्य रचना का प्रारंभ हुआ। **भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटक एवं नाटककार निम्न हैं:–**

- **भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र:–** भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र ने अनूदित और मौलिक नाटकों की रचना की, जो अग्रलिखित हैं:–
- ✦ **भारतेन्दु के अनूदित नाटक:–** भारतेन्दु ने **संस्कृत, बंगला** और **अंग्रेजी** भाषाओं के प्रसिद्ध नाटकों का हिन्दी में अनुवाद किया, जो निम्नलिखित हैं:–
  - ◆ **विद्यासुंदर (1868)** संस्कृत के **'चौर पंचाशिका'** के बंगला संस्करण का हिन्दी अनुवाद है।
  - ◆ **पाखंड विखंडन (1872)** संस्कृत के **'प्रबोध चंद्रोदय'** के **तीसरे अंक** का हिन्दी अनुवाद।
  - ◆ **धनंजय विजय (1873)** संस्कृत से अनुवाद
  - ◆ **सत्य हरिश्चंद्र (1875)** आचार्य **शुक्ल के** अनुसार:– यह नाटक मौलिक समझा जाता है, पर हमने एक पुराना बँगला नाटक देखा है, जिसका यह अनुवाद कहा जा सकता है।
  - ◆ **कर्पूर मंजरी–(1875)** संस्कृत से अनुवाद।
  - ◆ **भारत जननी (1877)** नाट्य गीत।
  - ◆ **मुद्राराक्षस (1878)** संस्कृत नाटककार **'विशाखदत्त'** कृत **'मुद्राराक्षस'** का हिन्दी अनुवाद।
  - ◆ **दुर्लभ बंधु (1880)** शेक्सपियर के नाटक **'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस'** का हिन्दी अनुवाद।

15 हिन्दी उपन्यास

❖ आधुनिक काल की गद्य विद्याओं में 'उपन्यास' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। **हिन्दी में** उपन्यास विधा का **प्रारंभ अंग्रेजी एवं बंगला** उपन्यासों की लोकप्रियता से हुआ, अतः हिन्दी उपन्यास के उद्भव व विकास का **श्रेय अंग्रेजी और बंगला भाषा** के उपन्यासों को दिया जा सकता है।

✍ आचार्य महावीर प्रसाद 'द्विवेदी' ने 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित अपने एक निबंध 'उपन्यास–रहस्य' में इस बात को स्वीकार किया है कि **पश्चिमी देशों के लेखकों से प्रेरणा लेकर हिन्दी में उपन्यास रचना की जाने लगी।**

● 'बालकृष्ण भट्ट' ने भी इसकी पुष्टि करते हुए लिखा है कि–'

✍ **'हम लोग जैसा और बातों में अंग्रेजों की नकल करते जाते हैं, उपन्यास का लिखना भी उन्हीं के दृष्टांत पर सीख रहें है।''** हिन्दी में उपन्यास का प्रारंभ अंग्रेजी से अनुवाद किए गये उपन्याओं से माना जाता है। **सर्वप्रथम 'थामस डे'** के प्रसिद्ध उपन्यास **'सैंडफोर्ड एंड मर्टन'** का हिन्दी अनुवाद **'बंशीधर'** द्वारा **1853** में किया गया, तथा **'डॉ. जानसन'** के उपन्यास **'रासेलाल'** का हिन्दी अनुवाद **1979** में किया गया।

हिन्दी का प्रथम उपन्यास

❖ हिन्दी का **प्रथम मौलिक उपन्यास कौनसा** है, इस संबंध में विद्वानों में **मतभेद है।** इस संबंध में दो उपन्यासों का नाम लिया जा सकता है:–

(1) **श्रद्धाराम फुल्लौरी** द्वारा **1877** में लिखित **'भाग्यवती'** उपन्यास। इस उपन्यास में **सुधारवादी प्रवृति** है। **कुछ विद्वान** इसी उपन्यास को **हिन्दी का प्रथम उपन्यास** मानते हैं।

(2) **श्रीनिवासदास** द्वारा **1882** में लिखित **'परीक्षा गुरु'** उपन्यास। इस उपन्यास में भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ प्रमाणित करते हुए **उपदेश वृति** का आधार ग्रहण किया गया है। अधिकांश विद्वान **'परीक्षा गुरु'** (1882) को **हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास** मानते हैं।

✍ **'परीक्षा गुरु' ही हिन्दी का प्रथम उपन्यास है।**

हिन्दी उपन्यास का विकास

❖ **मुंशी प्रेमचंद** को हिन्दी उपन्यासकारों में केंद्र मानकर हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम को **तीन चरणों** में विभक्त कर सकते हैं:–

(1) **प्रेमचंद पूर्वयुगीन हिन्दी उपन्यास**
(2) **प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास और**
(3) **प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास**

(1) प्रेमचंद पूर्वयुगीन हिन्दी उपन्यास

❖ यह हिन्दी उपन्यास का **प्रारम्भिक युग** था, उपन्यास विधा अपना स्वरूप ग्रहण करने का प्रयास कर रही थी। इस काल में **सुधारवादी और उपदेशवादी प्रवृति** के उपन्यास प्रमुख रूप से लिखे जा रहे थे, जिनका **मुख्य उद्देश्य मनोरंजन** था। इसके अलावा सामाजिक, **ऐतिहासिक, तिलस्मी, जासूसी उपन्यास लिखे जा रहे थे, जिनका जनजीवन से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था।** तिलस्मी उपन्यासों में 'प्रेम चित्रण' भी है पर लेखकों का मुख्य उद्देश्य पाठकों को **रहस्य–रोमांच की ऐयारी एवं तिलस्मी दुनिया में ले जाकर चमत्कृत करना मात्र रहा है।**

प्रेमचंद पूर्वयुगीन प्रमुख उपन्यास एक नजर में

क्रं सं.	उपन्यास कार	प्रमुख उपन्यास	विशेष/विषय वस्तु
1.	श्रद्धाराम फुल्लौरी	भाग्यवती 1877	सुधारवादी प्रवृति
2.	श्रीनिवास दास	परीक्षा गुरु 1882 प्रथम हिन्दी उपन्यास	उपदेश वृति
3.	बालकृष्ण भट्ट	रहस्य कथा 1879,नूतन ब्रह्मचारी 1886, एक अजान सौ सुजान 1892	सुधारवादी, उपदेशमूलक उपन्यास
4.	ठा. जग मोहन सिंह	श्यामा स्वप्न 1888	राधा कृष्ण का प्रेम चित्रण
5	लज्जाराम मेहता	धूर्त रसिकलाल 1899, स्वतंत्र रमा परतंत्र लक्ष्मी 1899, बिगड़े का सुधार 1907, आदर्श हिन्दू 1907	इनमें बुरी आदतों एवं सामाजिक बुराइयों के परिणामों को चित्रित कारके पाठकों को उपदेश दिया है
6.	राधाकृष्ण दास	निस्सहाय हिन्दू 1890	गो वध की समस्या का चित्रण
7.	देवकीनंदन खत्री	चंद्रकांता 1891, चंद्रकांता सन्तति, काजल की कोठारी, भूतनाथ, कुसुम कुमारी, नरेंद्रमोहिनी, वीरेंद्र वीर	इस युग में सर्वाधिक ख्याति, तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों से पाठकों का बहुत मनोरंजन किया, इनके उपन्यासों को पढ़ने के लिए बहुत से अहिंदी भाषियों ने हिन्दी सीखी।
8.	गोपालराम गहमरी	सरकटी लाश 1900, जासूस की भूल 1901, जासूस पर जासूसी 1904, गुप्त भेद 1913, जासूस की ऐयारी 1914 (जासूसी उपन्यास)	अँग्रेजी के जाजूसी उपन्यासकार 'आर्थर कानन डायल' से प्रभावित, हिन्दी में जासूसी उपन्यासों का श्रीगणेश करने वाले द्विवेदी युगीन लेखक
9.	किशोरीलाल गोस्वामी	जिन्दे की लाश,तिलस्मी शीशमहल, लीलावती, याकूत तख्ती (जासूसी उपन्यास)	जासूसीउपन्यासों के अलावा सामाजिक, ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे (मस्तानी, सुख शर्वरी, प्रेममयी)
10.	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	ठेठ हिन्दी का ठाठ 1899, अधखिला फूल 1907 (द्विवेदी युगीन उपन्यासकार) सुधारवादी परंपरा के उपन्यास	प्रथम उपन्यास में हिन्दू समाज की कुरीतियों पर प्रहार, द्वितीय उपन्यास में एक जमींदार की कामुकता का परिष्कार दिखाया गयाहै।
11.	लज्जाराम शर्मा	आदर्श दम्पत्ति, आदर्श हिन्दू, बिगड़े का सुधार	सामाजिक व सुधारवादी उपन्यास

✍ हिन्दी उपन्यासों के प्रथम चरण में लिखे गये उपन्यासों का मुख्य **उद्देश्य मनोरंजन एवं समाज सुधार रहा** है।

16 हिन्दी कहानी

❖ **संस्कृत कथा साहित्य विश्व के कथा साहित्य का जन्मदाता माना जाता है,** परंतु आधुनिक कहानी का विकास **संस्कृत कथा साहित्य की परंपरा मे न होकर, पाश्चात्य साहित्य** विशेषतया **अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव** से हुआ। **उपन्यासों की भांति कहानियों की रचना का प्रारंभ भी भारतेन्दु युग से हुआ।** यद्यपि आलोचकों ने ब्रजभाषा में लिखी गई भक्त कवि '**गोकुलनाथ**' की '**दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता, दो सौ चौरासी वैष्णवों की वार्ता**' से आधुनिक कहानी का प्रारंभ माना है, परंतु कहानी के तत्वों की दृष्टि से यह मान्यता उपयुक्त नहीं है।

- इसके बाद कुछ आलोचकों ने हिन्दी के प्रारम्भिक गद्यकारों– '**सदासुखलाल**' के '**सुखसागर**', लल्लूलाल के '**प्रेमसागर**' इंशा अल्ला खान की '**रानी केतकी की कहानी**' आदि को हिन्दी की प्रारम्भिक कथा कृतियाँ माना, परंतु आधुनिक कहानियों के **तत्व, विषय, विचार व शिल्प** को देखते हुए यह मत भी उपयुक्त नहीं माना जा सकता है।

- आधुनिक युग में विकसित कहानी कला का जन्म भी अन्य गद्य विद्याओं की तरह **भारतेन्दु युग से ही मानना उपयुक्त होगा।** आज कहानी के पाठक अन्य सभी विद्याओं की तुलना में **सर्वाधिक हैं।** हिन्दी गद्य विद्याओं में '**कहानी**' सबसे सशक्त विद्या बनकर विकसित हुई है।
- विगत **120 वर्षों** में हिन्दी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साहवर्धक है, अन्य सभी गद्य विद्याओं की अपेक्षा आज की हिन्दी कहानी में **युगबोध की क्षमता सबसे अधिक दिखाई पड़ती** है।

- उपन्यास और कहानी दोनों में ही कथा तत्व विद्यमान होता है, अतः प्रारंभ में लोगों की यह धारण थी कि उपन्यास और कहानी में केवल **आकार का ही भेद या अंतर है,** किन्तु अब यह धारणा निर्मूल सिद्ध हो चुकी हैं। जैसे–जैसे कहानी की शिल्पविधि का विकास होता गया, उपन्यास से उसका **पार्थक्य** भी अलग झलकने लगा।
- **वास्तव में कहानी में जीवन के किस एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती** है, जबकि **उपन्यास में जीवन की समग्रता का अंकन** किया जाता है।
- स्पष्ट है कि कहानी के **मूल आत्मा** '**एक संवेदना या एक प्रभाव**' है। कहानी का प्रमुख उद्देश्य भी कम से कम शब्दों में उस प्रभाव को अभिव्यक्त करना मात्र है।
- अमेरिका के कवि–आलोचक–कथाकार '**एडगर एलिन पो**' के अनुसार कहानी की परिभाषा इस प्रकार हैः– **''कहानी वह छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, जो पाठक पर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न करने के लिये लिखी गई हो, जिसमें उस प्रभाव को उत्पन्न करने में सहायक तत्वों के अतिरिक्त और कुछ न हो और जो अपने आप में पूर्ण हो।''**
- **अज्ञेय के अनुसार–** "कहानी जीवन की प्रतिछाया है और जीवन स्वयं एक अधुरी कहानी है। एक शिक्षा है, जो **उम्रभर मिलती** रहती है और समाप्त नहीं होती।"

- **स्टीवेन्सन के शब्दों में–** "कहानी मानव जीवन की प्रतिलिपि नही है, वरन् जीवन के कुछ अंगों का **साधारणीकरण** है।''
- **डॉ. इन्द्रनाथ मदान के अनुसार–** "यह आंदोलन बाढ़ की तरह सबको बहाकर ले गया। प्रायः हर कहानीकार इससे **जुड़ने या डूबने** के लिए उतावला हो उठा, हर आलोचक इसे पहचानने के लिए अधीर हो उठा।"
- **मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार–** ''गल्प (कहानी) एक ऐसी गद्य रचना है, जो किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करती है । कहानी के विभिन्न चरित्र, **कहानी की शैली** और **कथानक** उसी एक मनोभाव को पुष्ट करते हैं। यह रमणीय उद्यान न होकर, सुगन्धित फूलों से युक्त एक गमला है।''
- **'कहानी छोटे मुँह बड़ी बात करती है।' (नामवर सिंह)**

- **बाबू श्यामसुंदर दास** ने भी अपनी परिभाषा में नाटकीय ढंग पर अधिक बल दिया है। उनके विचारानुसार – "आख्यायिका (कहानी) एक **निश्चित लक्ष्य** या **प्रभाव** को लेकर लिखा गया नाटकीय आख्यान है।"
- **इलाचन्द्र जोशी के अनुसार,** "जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा–सीधा चलता रहता है इस सुबृहत चक्र की विशेष परिस्थिति का प्रदर्शन ही कहानी है।"
- हिन्दी के प्रमुख कवि एवं कथाकार '**अज्ञेय**' के अनुसार –**''कहानी एक सूक्ष्मदर्शी यंत्र है जिसके नीचे मानवीय अस्तित्व के दृश्य खुलते हैं।''**
- मनुष्य अपनी आपबीती घटनाएँ **अनुभूतियाँ** या दृष्टिकोण दूसरों पर प्रकट करना चाहता है। **आत्मभिव्यंजन एक सहज वृत्ति है।** अपने तथा दूसरों के जीवन सम्बन्धी घटनाओं को **रोचकता और कौतूलपूर्ण शैली में अभिव्यक्त करने से कहानी का जन्म होता है।**

हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी

❖ **हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का प्रारंभ–** 1900 ई. के **आस–पास** मानना समीचीन है, क्योंकि इससे पूर्व हिन्दी में कहानी जैसी किसी विद्या का प्रारंभ नहीं हुआ था। **हिन्दी की प्रथम कहानी कौनसी** है? यह एक **विवादास्पद प्रश्न** है। इस संबंध में जिन कहानियों का नाम लिया जाता है, वे निम्न हैं–

17 हिन्दी निबंध

❖ मुद्रणालयों की स्थापना होने के बाद से आधुनिक काल की गद्य विधाओं में **निबंध सबसे प्राचीन विधा मानी जाती है**। निबंध गद्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण विद्या है। इसे गद्य की कसौटी माना जाता है।

✍ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** के अनुसार –"**यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंध में ही अधिक संभव है।**" विश्व स्तर पर फ्रांसीसी साहित्यकार '**मोंटेन**' निबंध विद्या के जनक माने जाते हैं। **डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त** के अनुसार हिन्दी साहित्य में **1853 ई.** में '**राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द**' द्वारा रचित '**राजा भोज का सपना**' को **सर्वप्रथम निबंध** माना गया है। इस रचना में निबंध के लिए आवश्यक सभी तत्व विद्यमान नहीं हैं, जिसके कारण हिन्दी साहित्य में '**भारतेन्दु हरिश्चंद्र**' को ही **निबंध विधा** का **जन्मदाता माना गया** है।

✍ भारतेन्दु युग में **बालकृष्ण भट्ट** ने सर्वश्रेष्ठ श्रेणी के निबंध लिखे, जिसके कारण इसको '**हिन्दी का मोंटेन**' कहा जाता है। **हिन्दी के प्रारम्भिक निबंधकार पत्रकार थे,** जिन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं का सम्पादन किया एवं इन्हीं पत्रिकाओ और पत्रों में अपने निबंधों को प्रकाशित किया।

✦ **हिन्दी निबंध का काल विभाजनः–** हिन्दी साहित्य में अब तक लिखे गए समस्त प्रकार के निबंधों को निम्नानुसार **चार काल खंडों** में विभाजित किया गया हैः–

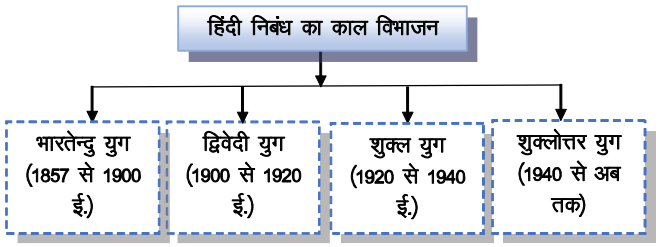

(अ) भारतेन्दु युग (1857–1900)

❖ **डॉ. नगेंद्र के अनुसारः–** भारतेन्दु युग के निबंध मुख्य रूप से **मासिक और पाक्षिक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं**। इनका उद्देश्य **उपदेश, उद्‌बोधन, आह्‌वान, व्याख्या, व्यंग्य, हास्य** आदि अनेक माध्यमों से जनता को शिक्षित और प्रबुद्ध करना था। इस युग में निबंध प्रकाशन में **हरिश्चंद्र मैंगजीन** (भारतेन्दु), **ब्राह्मण** (प्रतापनारायण मिश्र), **हिन्दी प्रदीप** (बालकृष्ण भट्ट), **आनंद–कादंबिनी** (बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन), **सदादर्श** (लाला श्री निवासदास), **भारतेन्दु** (राधाचरण गोस्वामी) **आदि पत्रिकाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।**

भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंध एवं निबंधकारः–

1. भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र (1850–1885)

❖ **हिन्दी गद्य के जनक भारतेन्दु आधुनिक काल में हिन्दी की अन्य विधाओं के समान हिन्दी निबंध के भी प्रवर्तक माने जाते हैं।** इन्होंने साथी लेखकों का एक **मंडल बनाया** जिसे '**भारतेन्दु मंडल**' कहा जाता था। इस मंडल में **भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन', ठाकुर जगमोहन सिंह अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी आदि लेखक शामिल थे।**

✦ **निबंध संग्रहः–**
(1) काश्मीर कुसुम (2) उदय–पुरोदय (3) सुलोचना (4) बादशाह दर्पण (5) लीलावती (6) कालचक्र। **प्रमुख निबंध–** (1) कंकड़ स्त्रोत **(2) भ्रूण हत्या** (3) एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न (4) सूर्योदय (5) लेवी प्राण लेवी **(6) पंचवा पैगंबर** (7) स्वर्ग में विचार सभा का अधिवेशन (8) शांति विवेचिनी सभा (9) माघ स्नान विधि (10) अंग्रेज स्त्रोत (11) वैष्णवता और भारतवर्ष **(12) नाटक** (1983)

☞ **भारतेन्दु हिन्दी निबंध के वास्तविक जन्मदाता माने जाते** हैं। इनका **युग निबंध की विकास** यात्रा का **प्रारम्भिक चरण** माना जाता है।

☞ इनके निबंधों में विषय के अनुरूप विविध प्रकार की भाषा–शैलियों का प्रयोग हुआ है।

☞ इनकी भाषा में **मार्मिक अभिव्यंजना, सजीव बहुरूपता और मनमोहक** स्वच्छंदता मिलती है।

☞ इनके निबंधों में **सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार और राजनीतिक निबंधों में अंग्रेजी राज्य पर तीखे व्यंग्य किए हैं।**

☞ साहित्यिक निबंधों के अलावा इनके शेष निबंध विवरणात्मक श्रेणी में रखे जाते हैं।

☞ भारतेन्दु ने **पुरातत्व, इतिहास, धर्म, कला, समाज सुधार, राजनीति, यात्रा, प्रकृति–चित्रण, जीवनी** भाषा साहित्य आदि अनेक विषयों पर निबंधों की रचना की।

2. बालकृष्ण भट्ट (1844–1914)

❖ **लगभग एक हजार निबंधों** की रचना की, इस **युग के प्रौढ़ निबंधकार।**

✦ **प्रमुख निबंधः–**
(1) बाल विवाह **(2) माधुर्य** (3) राजा और प्रजा (4) कृषकों की दुरवस्था (5) स्त्रियाँ और इसकी शिक्षा (6) मेला–ठेला **(7) सहानुभूति** (8) इंग्लिश पढे तो बाबू होय **(9) आत्मनिर्भरता** (10) शब्द की आकर्षण शक्ति (11) भिक्षावृति (12) जातपात (13) सुगृहिणी (14) हिंदुस्तान के रईस (15) राजभक्ति और देशभक्ति (16) ढोल के भीतर पोल **(17) आत्मनिर्भरता** (18) सुगृहिणी (19) खेल वंदना, आदि।

10. हरिशंकर परसाई

❖ 'परसाई' जी **हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्य लेखक माने जाते** है, उन्होंने **समाज, राजनीति, धर्म आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों** को अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। उनकी **व्यंग्य रचनाओं में हास्य व्यंग्य शैली के साथ प्रतीकात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली, सूत्र शैली** आदि का प्रयोग किया है। **समाज में व्याप्त विसंगतियों पर तीव्र प्रहार किया है।**

प्रमुख निबंध एवं संग्रहः–

1. कैसे उनके दिन फिरे (1963)
2. **पगडंडियों का जमाना** (1966)
3. **सदाचार का ताबीज** (1967)
4. **शिकायत मुझे भी है** (1970)
5. **ठिठुरता हुआ गणतंत्र** (1970)
6. अपनी–अपनी बीमारी (1972)
7. **वैष्णव की फिसलन** (1976)
8. **विकलांग श्रद्धा का दौर** (1980)
9. **भूत के पाँव पीछे** (1983)
10. **बेईमानी की परत** (1983)
11. सुनो भाई साधो (1983)
12. तुलसीदास चंदन घिसे (1986)
13. कहत कबीर (1987)
14. **प्रेमचंद के फटे जूते** (2003)
15. **निठल्ले की डायरी**
16. परसाई रचनावली

निबंध लेखन की प्रमुख शैलियाँः–

निबंध लेखन के लिए प्रमुख रूप से **सात शैलियों** का प्रयोग किया जाता है, जो **निम्नलिखित हैं–**

(1) व्यास शैली– इस शैली में निबंध लेखक बढ़ा–चढ़ाकर अतिशयोक्ति पूर्ण लिखता है।

(2) समास शैली– इस शैली में लेखक द्वारा कम शब्दों में अधिक विचारों को प्रस्तुत किया जाता है।

(3) तरंग शैली– इस शैली में लेखक द्वारा छोटे एवं सरल वाक्यों में मन की उमंग पूर्ण भावनाओं को अभिव्यक्त किया जाता है।

(4) धारा शैली– इस शैली में विचारों एवं भावों को लंबे–लंबे वाक्यों में तेज गति से अभिव्यक्त किया जाता है।

(5) विक्षेप शैली– इस शैली में लेखक अपने विषय से भटक जाता है।

(6) प्रलाप शैली– बिना सोचे समझे गलत तथ्य प्रस्तुत करना।

(7) व्यंग्य शैली– अभिधा शब्द शक्ति की अपेक्षा लक्षणा व व्यंजना शब्द शक्ति का अधिक प्रयोग किया जाता है।

हिंदी निबंधों के भेद अथवा प्रकार

❖ विद्वानों ने **हिन्दी निबंधों** के **चार भेद** माने हैं। **डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त** ने निबंधों के **पाँच भेद किए हैं**, जो निम्न हैं:–

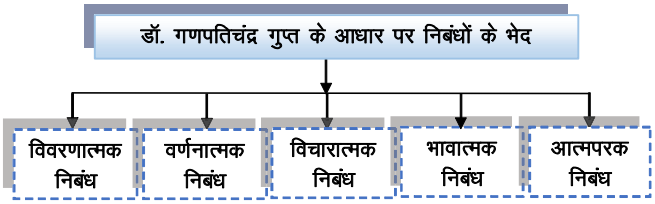

(1) विवरणात्मक निबंध

❖ जिस निबंध में **सूचनाओं को अधिक महत्त्व दिया** जाता है, वह विवरणात्मक निबंध माना जाता है। **इन निबंधों में समय या काल का अधिक महत्त्व होता है।** इन निबंधों में **ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक घटनाओं का विवरण** होता है। **थोड़ा कल्पना का भी सहारा लिया जाता है।** इनमें क्रमबद्धता पर ध्यान नहीं दिया जाता है, लेकिन ऐसे निबंध मार्मिक होते हैं। **हिन्दी के प्रारम्भिक निबंध लेखकों ने विवरणात्मक निबंध** अधिक लिखे हैं।

✍ भारतेन्दु, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, आदि लेखकों ने विवरणात्मक निबंध लिखे हैं, इस प्रकार के निबंध प्रायः **व्यास शैली** में लिखे जाते हैं।

(2) वर्णनात्मक निबंध

❖ जिस निबंध में **वस्तु, स्थान एवं दृश्य का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित वर्णन किया जाता है, वह वर्णनात्मक निबंध माना जाता है।** इन निबंधों में **स्थान को अधिक महत्त्व** दिया जाता है। इन निबंधों में **भावुकता और बौद्धिकता का समन्वय** होता है। लेखक का **ध्यान तथ्य निरूपण पर अधिक और कल्पना पर कम रहता** है। भाषा सरल और सुबोध रहती है।

✍ बालकृष्ण भट्ट, बाबू गुलाबराय, रामवृक्ष बेनीपुरी और कन्हैयाल मिश्र **'प्रभाकर'** के निबंध इसी श्रेणी में आते हैं। **प्रायः सभी रिपोर्ताज इसी श्रेणी में आते हैं।** इन **निबंधों की शैली प्रायः व्यास शैली** होती है।

(3) विचारात्मक निबंध

❖ इन **निबंधों में बुद्धि की प्रधानता** होती है और **लेखक का हृदय पक्ष प्रायः दबा** रहता है। इन **निबंधों में विचारों की एक शृंखला रहती** है और **विचार पूर्वापर संबंध से एक सूत्र में जुड़े रहते** हैं। इन निबंधों में प्रमुख रूप से **समास शैली का प्रयोग** होता है, पर साथ **ही व्यास शैली और सूत्र शैली का भी प्रयोग होता है। भाषा विषय के अनुसार प्रौढ़, गंभीर एवं संस्कृतनिष्ठ** रहती है। **आलोचनात्मक निबंध विचारात्मक निबंधों की श्रेणी** में ही आते हैं।

18 हिन्दी आलोचना

❖ 'आलोचना' शब्द 'आ' (सम्यक या पूर्ण रूप से) और 'लोचन' या 'लोचना' (देखना) से बना है जिसका अर्थ है– **किसी साहित्यिक कृति या रचना को पढ़कर सम्यक रूप से उसके गुण–दोषों का विस्तार से विश्लेषण करना** आलोचना कहलाता है।

✍ **डॉ. श्यामसुंदर दास** के अनुसारः– **यदि हम साहित्य को जीवन की व्याख्या मानें तो आलोचना को उस व्याख्या की व्याख्या मानना पड़ेगा।**

- **हिन्दी साहित्य में आलोचना का प्रारंभ** अन्य आधुनिक विधाओं के समान ही 'भारतेन्दु युग' में हुआ। इस युग से पूर्व रीतिकालीन कवियों के 'काव्यशास्त्र' संबंधी **पद्यमय समीक्षा ग्रंथ मिलते** हैं, जो संस्कृत 'काव्यशास्त्र' के अनुकरण पर लिखे गये हैं। रीतिकाल में कवियों की **तुलनात्मक श्रेणियाँ निर्धारित** की गई, जिसके आधार पर 'सूर सूर तुलसी ससी उडगन केशवदास' जैसी उक्तियाँ कही गई, जो आलोचना के प्रारम्भिक उद्‌गम को लिए हुए हैं।
- **रीतिकाल में आलोचना का विकास नहीं हो पाया** क्योंकि **उस समय तक गद्य का पूर्ण विकास नहीं हो सका था**, जो **प्रौढ़ आलोचना या समीक्षा के लिए आवश्यक है। आधुनिक हिन्दी आलोचना का प्रारंभ तो गद्य के आविर्भाव के बाद हुआ है।** भारतेन्दु युग से प्रारंभ होकर आज तक आलोचना विधा ने बहुत विकास या उन्नति की है।
- **हिन्दी आलोचना साहित्य के विकासक्रम को हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं,** जो निम्न हैं:–

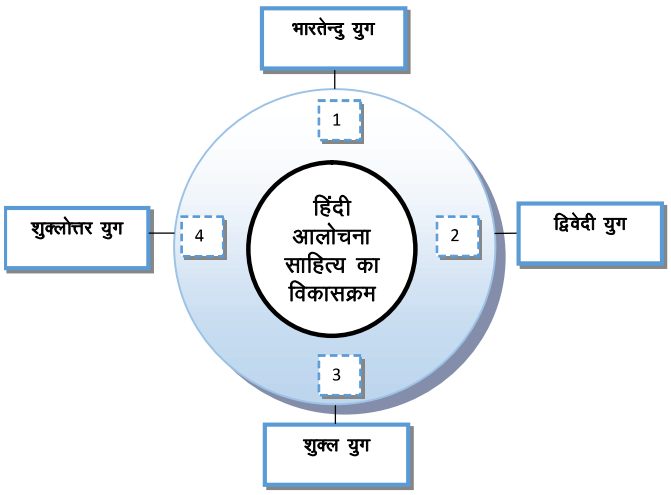

(1) भारतेन्दु युग

❖ **भारतेन्दु युग में हिन्दी आलोचना का प्रारंभ हुआ।** जिस प्रकार गद्य की अन्य विद्याओं का प्रारंभ **भारतेन्दु युग** में हुआ, उसी प्रकार हिन्दी आलोचना का प्रारंभ भी इसी युग में हुआ। स्वयं भारतेन्दु ने भरतमुनी के **'नाट्यशास्त्र'** के अनुकरण पर **'नाटक'** (1883) नामक समीक्षात्मक ग्रंथ की रचना की। यह सैद्धांतिक आलोचना पद्धति का एक प्रौढ़ ग्रंथ है। इसके अलावा **'जगन्नाथप्रसाद'** कृत **'छंद प्रभाकर'** **'मुरारीदान कविराज'** द्वारा **'जसवंत जसोभूषण'** और **'प्रतापनारायण सिंह'** द्वारा रचित **'रस कुसुमाकर'** आदि ग्रंथ सैद्धांतिक आलोचना के ग्रंथ इस युग में लिखे गये। इस युग के प्रथम समर्थ आलोचक **'चौधरी बदरीनारायण'** **'प्रेमघन'** थे। इन्होंने अपनी **'आनंद कादंबिनी'** पत्रिका में आलोचनात्मक लेख प्रकाशित किये। **'संयोगिता स्वयंवर'** लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखित नाटक की समीक्षा **'बदरी नारायण चौधरी'** ने अपनी पत्रिका **'आनंद कादंबिनी'** में प्रकाशित की। भारतेन्दु काल के समालोचकों में बदरीनारायण चौहान **'प्रेमघन'**, बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र के नाम लिए जा सकते हैं। बालकृष्ण भट्ट ने अपने पत्र **'हिन्दी प्रदीप'** में **'संयोगिता स्वयंवर'** की **'सच्ची आलोचना'** नाम से समीक्षा प्रकाशित की। भट्ट जी ने **'भारतेन्दु'** कृत नाटक **'नील देवी'** और **'श्रीनिवासदास'** कृत उपन्यास **'परीक्षा गुरु'** की समीक्षा लिखी। इनकी आलोचना या समीक्षा में सरसता, भावात्मकता और व्यंग्यात्मकता की प्रधानता है। इनकी पत्रिका **'हिन्दी प्रदीप'** में गंभीर आलोचनाएं प्रकाशित होती थी। **'प्रेमघन'** की आलोचना में दोष–दर्शन की प्रवृति अधिक रहती थी। भारतेन्दु युग में **'बालकृष्ण भट्ट'** और **'बदरी नारायण चौधरी'** समर्थ आलोचक माने जाते है।

(2) द्विवेदी युग

❖ द्विवेदी युग में **'महावीर प्रसाद द्विवेदी'** के **नेतृत्व में आलोचना का रूप निखर कर सामने आया। परिचयात्मक आलोचनाएँ** महावीर प्रसाद **द्विवेदी द्वारा लिखी गयी।** उन्होंने पुस्तक का **संक्षिप्त परिचय, उसकी विषय वस्तु की प्रशंसा या निंदा एवं लेखकीय दृष्टिकोण** को प्रस्तुत किया। आलोचना के क्षेत्र में द्विवेदी जी का योगदान निर्विवाद रूप में स्वीकार किया जाता है। इन्होंने एक **तरफ भाषा संस्कार** के द्वारा सभी को शुद्ध हिन्दी लेखन की ओर अग्रसर किया तो **दूसरी तरफ** कवियों और लेखकों को उनके कर्त्तव्य का बोध भी करवाया। इन्होंने **प्राचीन और नवीन का समन्वय** किया तथा आगे के समीक्षकों को दिशा निर्देश दिए।

- द्विवेदी जी की **शैली सरल, सरस और व्यावहारिक** है। इस युग में आलोचना की अनेक पद्धतियों का विकास हुआ। **एक तरफ संस्कृत काव्यशास्त्र** को आधार बनाकर, सैद्धांतिक आलोचना लिखी गई और **दूसरी तरफ तुलनात्मक आलोचनाका प्रारंभ** इसी युग में हुआ।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. अपने युग की केन्द्रीय रचना– वृति से जुड़कर आलोचना का उदय भारतेन्दुकालीन किस सैद्धांतिक निबन्ध से माना जाता है?(सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 17 मार्च, 2024)
(अ) बिहारी की वाग्विभूति (ब) केशव की काव्यकला
(स) नाटक (द) कविता क्या है? (स)

2. कौनसा युग्म सुमेलित नहीं है?
(सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 17 मार्च, 2024)
(अ) नयी समीक्षा के प्रतिमान– निर्मला जैन
(ब) भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका– डॉ. नगेन्द्र
(स) अथातो सौदंर्य जिज्ञासा– रमेश कुंतल मेघ
(द) नयी कविता : शक्ति और सीमा– लक्ष्मीकांत वर्मा (द)

3. इनमें से कौन सा ग्रंथ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का लिखा हुआ नहीं है?
(सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 17 मार्च, 2024)
(अ) हिन्दी साहित्य– तीन भाग
(ब) हिंदी साहित्यः उद्‌भव और विकास
(स) हिंदी साहित्य की भूमिका
(द) हिंदी साहित्य का आदिकाल (अ)

4. कृति और कृतिकार की दृष्टि से कौनसा विकल्प असंगत है? (सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 17 मार्च, 2024)
(अ) सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी
(ब) रीतिकाव्य की भूमिका– नगेन्द्र
(स) सिद्धांत और अध्ययन– गुलाबराय
(द) कछुआ धर्म– रामविलास शर्मा (द)

5. 'नयी कविता के प्रतिमान' के लेखक हैं?
(राजस्थान पात्रता, सेट परीक्षा– 26 मार्च, 2023)
(अ) नामवरसिंह (ब) विजयदेवनारायण साही
(स) लक्ष्मीकांत वर्मा (द) मुक्तिबोध (स)

6. 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' के लेखक हैं?
(राजस्थान पात्रता, सेट परीक्षा– 26 मार्च, 2023)
(अ) तुलसीराम (ब) सूरज बड़ितया
(स) मलखानसिंह (द) ओमप्रकाश वाल्मीकि (द)

7. 'एक साहित्यिक की डायरी' के लेखक कौन हैं?
(राजस्थान पात्रता, सेट परीक्षा– 26 मार्च, 2023)
(अ) मुक्तिबोध (ब) रघुवीर सहाय
(स) रवीन्द्र कालिया (द) श्रीराम शर्मा (अ)

8. आलोचनात्मक कृति 'नाटक' के लेखक कौन हैं?
(व्याख्याता हिन्दी, संस्कृत वि– 15 नवंबर, 2022)
(अ) भारतेन्दु (ब) लाला भगवानदीन
(स) पदम सिंह शर्मा (द) आचार्य शुक्ल (अ)

9. कृति और कृतिकार को सुमेलित कीजिए?
(सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 23 सितंबर, 2021)

(A) नयी कविता के प्रतिमान	(i) नामवर सिंह
(B) कविता के नये प्रतिमान	(ii) लक्ष्मीकांत वर्मा
(C) नया साहित्यः नये प्रश्न	(iii) गजानन माधव मुक्तिबोध
(D) नये साहित्य का सौंदर्य–शास्त्र	(iv) नंददुलारे वाजपेयी

विकल्पः
(अ) (A)– (iii), (B)–(ii), (C)– (i), (D)–(iv)
(ब) (A)– (ii), (B)–(iv), (C)– (i), (D)–(iii)
(स) (A)– (iv), (B)–(iii), (C)– (ii), (D)–(i)
(द) (A)– (ii), (B)–(i), (C)– (iv), (D)–(iii) (द)

10. "जितने श्रम और जितनी सावधानी से यह संपादित हुआ है, आज तक हिंदी का और कोई ग्रंथ नहीं हुआ।"आचार्य शुक्ल का उक्त कथन किस संपादित रचना के संदर्भ में है? (सहायक प्रोफेसर परीक्षा– 23 सितंबर, 2021)
(अ) विनयपत्रिका (ब) लालचंद्रिका
(स) बिहारी रत्नाकर (द) कबीर ग्रंथावली (स)

11. इनमें से किस आलोचक को तुलनात्मक आलोचना के लिए प्रसिद्धि मिली?(व्याख्याता परीक्षा– जुलाई, 2014)
(अ) मुंशीराम शर्मा (ब) लाला भगवानदीन
(स) पं. पदमसिंह शर्मा (द) नन्ददुलारे वाजपेयी (स)

12. 'जसवंत जसोभूषण' समीक्षात्मक कृति किस की है?
(अ) प्रतापनारायण सिंह (ब) मुरारीदान कविराज
(स) प्रतापनारायण सिंह' (द) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ब)

13. समीक्षात्मक कृति 'वाङ्मय विमर्श' किसने लिखी है?
(अ) कृष्णशंकर शुक्ल (ब) रमाशंकर शुक्ल
(स) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (द) बाबू गुलाबराय (स)

14. 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' किसकी कृति है?
(अ) कृष्णशंकर शुक्ल (ब) रमाशंकर शुक्ल
(स) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (द) बाबू गुलाबराय (ब)

15. 'केशव की काव्यकला' समीक्षात्मक कृति के लेखक कौन हैं?
(अ) कृष्णशंकर शुक्ल (ब) रमाशंकर शुक्ल
(स) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (द) बाबू गुलाबराय (अ)

16. 'बिहारी की वाग्विभूती' आलोचनात्मक कृति किस के द्वारा लिखित है?
(अ) कृष्णशंकर शुक्ल (ब) रमाशंकर शुक्ल
(स) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (द) श्यामसुंदर दास (स)

17. 'कविवर रत्नाकर' नामक समीक्षात्मक कृति की रचना किसने की है?
(अ) कृष्णशंकर शुक्ल (ब) चंद्रबली पाण्डेय
(स) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (द) श्यामसुंदर दास (अ)

19 हिन्दी गद्य की अन्य विधाएँ

(1) आत्मकथा

❖ हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं की भांति **आत्मकथा का आगमन पाश्चात्य साहित्य से हुआ**। आज आत्मकथा हिन्दी साहित्य की प्रमुख गद्य विधा मानी जाती है। आत्मकथा के लिए अंग्रेजी में **आटोबायोग्राफी (Autobiography)** शब्द प्रचलित है, **जिसका अर्थ है अपनी कथा**। जब कोई महान व्यक्ति अपने जीवन की **महत्त्वपूर्ण घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण स्वयं लिखता है**, तब उसे **'आत्मकथा'** कहा जाता है। **आत्मकथा लेखक को तटस्थ और निरपेक्षरहना अनिवार्य होता है। 'जीवनी'** और **'आत्मकथा'** दोनों में किसी **विशिष्ट व्यक्ति का जीवन वृत्त होता है,** पर जब **लेखक स्वयं अपने जीवन का क्रमिक ब्यौरा पेश करता है तो उसे 'आत्मकथा'** कहते हैं। **'इनसाइक्लोपीडिया'** में कहा गया है कि **'आत्मकथा, व्यक्ति के जीये हुए जीवन का ब्यौरा है, जो स्वयं उसके द्वारा लिखा जाता है।'** आत्मकथा में लेखक आत्मान्वेषण और आत्मालोचन करता है, अतः उसका जीवन दर्शन भी प्रत्यक्ष हो उठता है, इसमें लेखक अपने **अंतर्जगत को बहिर्जगत** के सम्मक्ष प्रस्तुत करता है। आत्मकथा लेखक निर्भय होकर अपने दोषों को भी उद्घाटित करता है और इसलिए उसका लेखन सत्याधारित होता है।

क्र. सं.	आत्मकथा लेखक	आत्मकथा कृति
1.	बनरसीदास जैन	अर्द्ध कथानक 1641(ब्रज भाषा के पद्य में) हिन्दी की प्रथम आत्मकथा
2	दयानंद सरस्वती	जीवन चरित्र (1860)
3.	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	कुछ आप बीती कुछ जग बीती (अपूर्ण आत्मकथा)
4.	अम्बिकादत्त व्यास	निज वृतांत(1901)
5.	स्वामी श्रद्धानन्द	कल्याण पथ का पथिक
6.	भाई परमानन्द	आपबीती (मेरी राम कहानी) (1921)
7	महात्मा गाँधी	सत्य के प्रयोग (1923)
8.	सुभाष चंद्र बोस	तरुण के स्वप्न (1935)
9.	भवानी दयाल संन्यासी	प्रवासी की कहानी (1939)
10.	बाबू श्यामसुंदर दास	मेरी आत्मकहानी (1941)
11.	हरिभाऊ उपाध्याय	साधना के पथ पर (1946)
12.	बाबू गुलाबराय	मेरी असफलताएँ
13.	राहुल सांकृत्यायन	मेरी जीवन यात्रा (1946,1947, 1967 पांच खंडों में प्रकाशित)
14	राजेन्द्र प्रसाद	आत्मकथा (1947)
15.	सत्यदेव परिव्राजक	स्वतंत्रता की खोज में
17.	वियोगी हरि	मेरा जीवन प्रवाह (1951)
17.	यशपाल	सिंहावलोकन (तीन खंडों में 1951, 1952, 1955 में प्रकाशित)
18.	शांतिप्रिय द्विवेदी	परिव्राजक की आत्मकथा (1952)
19.	देवेन्द्र सत्यार्थी	चांद सूरज के बीरन, नील यक्षिणी
20.	चतुरसेन शास्त्री	यादों की परछाइयाँ (1956) मेरी आत्मकहानी (1963)
21.	सेठ गोविंददास	आत्मनिरीक्षण (1957)
22.	पदमलाल पुन्नालाल	मेरी अपनी कथा (1958)
23.	पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	अपनी खबर (1960)
24.	आबिद अली	मजदूर से मिनिस्टर (1968)
25.	हरिवंश राय बच्चन	आत्मकथा चार भागों में लिखीहै– 1. क्या भूलूँ क्या याद करू (1969) 2. नीड़ का निर्माण फिर (1970) 3. बसेरे से दूर (1978) 4. दशद्वार से सोपान तक (1985)
26.	वृंदावनलाल वर्मा	अपनी कहानी (1970)
27.	देवराज उपाध्याय	यौवन के द्वार पर (1970)
28.	कृष्णचंद्र	आधे सफर की पूरी कहानी (1979)
29.	रामविलास शर्मा	घर की बात (1983) अपनी धरती अपने लोग (1996)
30.	रामदरश मिश्र	जहाँ मैं खड़ा हूँ (1983) सहचर है समय(1991) फुरसत के दिन –2002
31.	अमृतलाल नागर	टुकड़े टुकड़े दास्तान (1986)
32.	डॉ. नगेंद्र	अर्धकथा (1988)
33.	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	तपती पगडंडियों पर पदयात्रा (1989)
34.	मनोहर श्याम जोशी	लखनऊ मेरा लखनऊ
35.	गोपाल प्रसाद व्यास	कहो व्यास कैसी कटी (1994)
36.	कमलेश्वर	जो मैंने जिया (1992) यादों के चिराग (1997) जलती हुई नदी (2000)
37.	रवींद्र कालिया	गालिब छूटी शराब (2000)

20 हिंदी में प्रथम एक दृष्टि में एवं विभिन्न पुरस्कार

- हिंदी का प्रथम कवि– **सरहपा** (769)
- हिंदी की प्रथम रचना– **श्रावकाचार** (देवसेन) 933
- हिंदी साहित्य का प्रथम महाकाव्य– **पृथ्वीराज रासो** (चंदवरदाई)
- अवधी का प्रथम महाकाव्य– **पद्मावत** (जायसी)
- खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य– **प्रिय प्रवास** (1914) हरिऔध
- हिंदी का प्रथम तुलनात्मक आलोचक– **पदमसिंह शर्मा कमलेश**
- हिंदी खड़ी बोली की प्रथम रचना– **चंद छंद बरनन की महिमा** (1570) गंग कवि
- हिंदी खड़ी बोली का प्रथम गद्य ग्रंथ– **भाषा योग वाशिष्ठ** (1741) रामप्रसाद निरंजिनी
- शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ी बोली के प्रथम लेखक– **रामप्रसाद निरंजिनी**
- खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि– **अमीर खुसरो**
- प्रथम छायावादी काव्य संग्रह– **झरना** (1918) जयशंकर प्रसाद
- हिन्दी का प्रथम उपन्यास– **परीक्षा गुरु** (1882) लाला श्रीनिवासदास
- हिंदी का प्रथम मौलिक नाटक– **नहुष** (1857) गोपालचन्द्र गिरधरदास
- हिंदी की प्रथम कहानी– **इंदुमती** (1900) किशोरीलाल गोस्वामी
- हिंदी की प्रथम आत्मकथा– **अर्द्ध कथानक** (1641) बनारसीदास जैन
- हिंदी की प्रथम जीवनी– **दयानंद दिग्विजय** (गोपाल शर्मा
- हिंदी का प्रथम रिपोर्ताज– **लक्ष्मीपुरा** (1938) शिवदान सिंह चौहान
- हिंदी में दोहा चौपाई का प्रथम प्रयोग– **सरहपाद**
- हिंदी का प्रथम गीति नाट्य– **करुणालय** (जयशंकर प्रसाद)
- आधुनिक हिंदी का प्रथम अभिनीत नाटक– **जानकी मंगल** (शीतला प्रसाद त्रिपाठी)
- हिंदी का प्रथम एकांकी– **एक घूंट** (1929) प्रसाद
- प्रथम सूफी प्रेमाख्यानक काव्य– **चन्दायन** (1379) मुल्ला दाउद
- हिंदी साहित्य में छंद शास्त्र की प्रथम रचना– **छंदमाल** (केशवदास)
- हिंदी में काव्यशास्त्र की प्रथम पुस्तक– **साहित्य लहरी** (सूरदास)
- हिंदी में प्रथम गीत रचयिता– **विद्यापति**
- हिंदी में प्रथम 'प्रयोगवाद' शब्द का प्रयोग कर्ता– **नन्ददुलारे वाजपेयी**
- हिंदी में नई कविता शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कर्ता– **अज्ञेय**
- हिंदी में प्रथम रेखाचित्र– **पदमपराग** (पदम सिंह शर्मा)
- हिंदी में प्रथम तुलनात्मक आलोचक– **पदम सिंह शर्मा**
- हिंदी के प्रथम मार्क्सवादी आलोचक– **शिवदान सिंह चौहान**
- प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अध्यक्ष– **मुंशी प्रेमचंद**
- राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष– **बाल गंगाधर खरे**
- हिंदी का प्रथम साप्ताहिक पत्र– **उदन्त मार्तण्ड (1829)**
- हिंदी का प्रथम दैनिक पत्र– **समाचार सुधावर्षण**
- हिंदी की प्रथम पत्रिका– **संवाद कौमुदी**
- हिंदी साहित्य के लिए प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार– **चिदम्बरा (1968) पंत**
- हिंदी साहित्य के लिए प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार– **हिमतरंगिनी (माखनलाल चतुर्वेदी)**
- हिंदी साहित्य के लिए प्रथम व्यास सम्मान– **भारत के भाषा परिवार और हिंदी (रामविलास शर्मा)**
- हिंदी के लिए प्रथम सरस्वती सम्मान– **हरिवंशराय बच्चन राय को आत्मकथा के लिए**

हिन्दी की प्रमुख संस्थाओं की स्थापना एक नजर में	
फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना	1800
नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना–	1893
अखिल भारतीय संगीत परिषद की स्थापना	1919
प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना	1936
हिंदी विद्यापीठ मुंबई की स्थापना	1938
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना	1938
संगीत नाटक अकादमी की स्थापना	1953
राजभाषा आयोग का गठन	7 जून 1955
राष्ट्रीय नाटक अकादमी की स्थापना	1959
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय कीस्थापना	1960

हिंदी भाषा के प्रमुख पुरस्कार

1. ज्ञानपीठ पुरस्कार

❖ भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार **'ज्ञानपीठ'** है, जो **आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं** और अंग्रेजी भाषा में लिखने वाले रचनाकार को दिया जाता है। इस पुरस्कार में 11 लाख रुपये की नकद राशि, प्रशस्ति–पत्र और **'सरस्वती'** की कांस्य मूर्ति इनाम स्वरूप प्रदान की जाती है। **यह पुरस्कार 1965 ई.** से प्रति वर्ष किसी एक कृति के लिए दिया जाता है। **प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार 1965** में मलयालम भाषा के लेखक **'शंकर कुरूप'** को प्रदान किया गया था। हिंदी भाषा के लिए **प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार 1968 में 'सुमित्रानंदन पंत** को **'चिदम्बरा'** कृति के लिए दिया गया था। **यह पुरस्कार 1982 ई. तक लेखक या कवि की एक कृति के आधार पर दिया जाता था**, लेकिन **इसके बाद यह लेखक या कवि के भारतीय साहित्य में दिए गए सम्पूर्ण योगदान के लिए दिया जाता** है। **सुमित्रानंदन पंत (1968)** से लेकर **कृष्णा सोबती (2017)** तक हिन्दी के **10 विद्वानों** को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। **ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिन्दी लेखक या कवि निम्नलिखित हैं–**

क्रं सं	लेखक / कृतिकार	कृति/रचना	विध	वर्ष
55.	उदय प्रकाश	मोहन दास	कहानी	2010
56.	काशीनाथ सिंह	रेहन पर रग्घू	उपन्यास	2011
57.	चंदकांत देवताले	पत्थर फेंक रहा हूँ	काव्य	2012
58.	मृदुला गर्ग	मिलजुल मन	उपन्यास	2013
59.	रमेशचंद्र शाह	विनायक	उपन्यास	2014
60.	रामदरश मिश्र	आग की हँसी	काव्य	2015
61.	नसीरा शर्मा	पारिजात	उपन्यास	2016
62.	रमेश कुंतक मेघ	विश्वमिथक सरितसागर	आलोचना कृति	2017
63.	चित्रा मुद्गल	पोस्ट बॉक्स न . 203 नाला सोपारा	उपन्यास	2018
64.	नन्दकिशोर आचार्य	छीलते हुए अपने को	काव्य	2019
65.	अनामिका	टोकरी में दिगंत– थेरी गाथारू 2014	काव्य	2020
66.	दयाप्रकाश सिन्हा	सम्राट अशोक	नाटक	2021
67.	बद्रीनारायण	तुमड़ी के शब्द	कविता संग्रह	2022
68.	संजीव कुमार	मुझें पहचानो	उपन्यास	2023
69.	गगन गिल	मैं जब तक आई बाहर	काव्य	2024

4. व्यास सम्मान

❖ भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला व्यास सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' के बाद **दूसरा सबसे बाद पुरस्कार** है। इसमें 4 लाख नकद रुपये, प्रशस्ति पत्र और एक प्रतीक चिह्न प्रदान किया जाता है। **के. के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा व्यास सम्मान 1991 ई.** में प्रारंभ किया गया, जो प्रति वर्ष किसी भी भारतीय नागरिक की **उत्कृष्ट साहित्यिक कृति** (जो पिछले दस वर्षों के अंतर्गत प्रकाशित हुई हो)को दिया जाता है। **सन् 1991 से 2022 तक व्यास सम्मान प्राप्त करने वाले साहित्यकारों की सूची निम्नलिखित है:–**

क्र सं	साहित्यकार	साहित्यिक कृति	साहित्यिक विधा	सम्मान प्राप्त वर्ष
1.	रामविलास शर्मा	भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी	आलोचना	1991
2.	शिवप्रसाद सिंह	नीला चांद	उपन्यास	1992
3.	गिरिजाकुमार माथुर	मै वक्त के हूँ सामने	कविता संग्रह	1993
4.	धर्मवीर भारती	अंधायुग	काव्य नाटक	1994
5.	कुँवर नारायण	कोई दूसरा नहीं	कविता संग्रह	1995
6.	रामस्वरुप चतुर्वेदी	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	आलोचना कृति	1996
7.	केदारनाथ सिंह	उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ	कविता संग्रह	1997
8.	गोविंद मिश्र	पाँच आँगनों का घर	उपन्यास	1998
9.	श्रीलाल शुक्ल	बिसरामपुर का संत	उपन्यास	1999
10.	गिरिराज किशोर	पहला गिरमिटिया	उपन्यास	2000
11.	महेश चंद्र शाह	आलोचना का पक्ष	आलोचना	2001
12.	कैलाश वाजपेयी	पृथ्वी का कृष्ण पक्ष	आलोचना	2002
13.	चित्रा मुद्गल	आवां	उपन्यास	2003